इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
जेंडर एवं विकास अध्ययन विद्यापीठ

,e th, l&003
tMj ,o fo'y"k.k

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

[k.M
1
tMj fo'y"k.k % ,d ifjp;

bdkbZ 1
tMj fo'y"k.k D;k g\ 5

bdkbZ 2
tMj fo'y"k.k dk egRo 26

bdkbZ 3
tMj fo'y"k.k d rRo 46

bdkbZ 4
tMj fo'y"k.k d mikxe 64

dk;Øe :ikdu lfefr

प्रो. पूनम अग्रवाल, दिल्ली
प्रो. जया इन्द्रेसन, दिल्ली
डा. रीना रामचन्द्रन, गुडगांवा
प्रो. रतना सुदर्शन, दिल्ली
डा. किरण प्रसाद तिकपति
प्रो. छाया दत्तार, मुम्बई
प्रो पूनम धवन, जम्मू
प्रो ताप्तीवासु, कोलकाता
प्रो. सविता सिंह, नई दिल्ली
प्रो. मालाश्री लाल, दिल्ली
प्रो. हर्ष पारिश्व, मुम्बई
प्रो, सुधा राव, दिल्ली
प्रो. पारवती राजन, देवलाली
प्रो. जयंती घोष, दिल्ली
डा. शीला वीर, दिल्ली
डा. सुंदरी रामाकृष्णन, चेन्नई
प्रो. अर्चना शर्मा, गुवाहाटी
प्रो. अन्नू जें. थामस, नई दिल्ली
प्रो. एस.ए. वर्घीज, बैंगलोर
प्रो. विभूति पटैल, मुम्बई
प्रो. मैवेई कृष्णाराज, मुम्बई
डा. नूतन जैन, जयपुर
प्रो. रजनी पालरीवाला, दिल्ली
प्रो. शीरीन मूसवी, अलीगढ
डा. चन्द्रा आईनगार, मुम्बई
प्रो. वीना मिस्त्री, वडोदरा
डा. वानी श्री जे., नई दिल्ली
डा. जी.उमा, नई दिल्ली

Cykd fodkl Vhe

,dd y[kd	,dd :ikrj
इकाई–1 सुश्री वर्थिनि	जी. उमा
इकाई–2 सुश्री पद्मावथी	जी. उमा
इकाई–3 सुश्री पद्मावथी	जी. उमा
इकाई–4 सुश्री पद्मावथी	जी. उमा

dkl lg;kxh

प्रो. अन्नू जे. थामस
निदेशक और कार्यक्रम सहयोगी
जेंडर और विकास अध्ययन स्कूल
आई.जी.एन.ओ.यू.
नई दिल्ली

प्रो. सविता सिंह
कार्यक्रम सहयोगी,
जेंडर और विकास अध्ययन स्कूल
आई.जी.एन.ओ.यू.
नई दिल्ली

dkl lEiknd

कोर्स चेयर और सम्पादक
प्रो. विभूति पटेल, निदेशक
पीजीएसआरएसएनडीटी
विमेनस यूनिवर्सिटी, मुंबई

bu gkÅl ,fMVx
प्रो. अन्नू जे. थामस
एस.ओ.जी.डी.एस.
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

dkl lg;kxh

प्रो. अन्नू जे. थामस, और
डा. जी. उमा
एस.ओ.जी.डी.एस.
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

Cykd lg;kxh

डा. जी. उमा
एस.ओ.जी.डी.एस.
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

eqnz.k mRiknu

मि. के. एन. मोहनन
वि. अधिकारी (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी
आई.जी.एन.ओ.यू.
नई दिल्ली

सितंबर, 2014

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2014

ISBN-81-

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफ (मुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदानगढ़ी,, नई दिल्ली–110 068 से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से निदेशक (जेंडर एवं विकास अध्ययन विद्यापीठ) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

लेजर कम्पोजिंग : राजश्री कम्प्यूटर्स, V-166A, भगवती विहार, (नजदीक सेक्टर–2, द्वारका), उत्तम नगर, नई दिल्ली–110059

ikB;Øe ifjp;

'जेंडर विश्लेषण' शीर्षक से यह पाठ्यक्रम समाज में पुरुष और स्त्री के बीच संबंधों तथा इन संबंधों में असमानता को समझने और अजागर करने में सहायता करेगा। इस पाठ्यक्रम में 3 ब्लाक और 14 इकाइयाँ हैं। पहला ब्लाक जेंडर विश्लेषण का महत्व, जेंडर विश्लेषण के तत्व तथा जेंडर वि लेशण के उपागमों का परिचय देता है। दूसरा ब्लाक जेंडर विश्लेषण के उपकरणों के बारे में बताता है। जेंडर विश्लेषण ने एक विश्लेषण उपकरण के रूप अवधारणाओं तथा प्रणालियों में जेंडर के आयामों को सम्मिलत किया है तथा नारीवादी प्रणालियों तथा जेंडर और विकास प्रणालियों में योगदान दिया है। जेंडर विश्लेषण के अनेक उपकरणों की इस ब्लाक में चर्चा की गई है। तीसरा ब्लाक विकास प्रक्रिया में जेडर विश्लेषण की चर्चा करता है। यह समस्या को परिभाषित करने, नीति निर्माण, नियोजन, क्रियान्वयन, मानीटरिंग तथा मूल्यांकन में जेंडर विश्लेषण के दखल का विवरण प्रदान करता है।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

[k.M ifjp;

ब्लाक का शीर्षक है ''जेंडर विश्लेषण क्या है?'' इस ब्लाक में चार इकाइयाँ हैं। पहली इकाई जेंडर की व्याख्या और समाज में महिलाओं की स्थिति के विश्लेषण से शुरू होती है। इससे जेंडर विश्लेषण को आवश्यकता समझने में सहायता मिलेगी। दूसरी इकाई जेंडर विश्लेषण के महत्व की चर्चा करती है। इसका उद्देश्य विभिन्न प्रकार के मुद्दों में जेंडर भेदभाव के प्रभाव को प्रकाश में लाना है। तीसरी इकाई विशेष रूप से जेंडर विश्लेषण मैट्रिक्स की तथा सामानय रूप से जेंडर विश्लेषण करने वाली विधियों की व्याख्या करती है। इस इकाई में जेंडर विश्लेषण के अन्य चर्चित ढांचों में हार्वड अनालिटीकल फ्रेमवर्क, मोज़र जेंडर प्लानिंग फ्रेमवर्क, महिला सशक्तीकरण फ्रेमवर्क तथा सामाजिक संबंध उपागम सम्मिलित हैं। इस ब्लाक की अंतिम इकाई में जेंडर विश्लेषण के विभिन्न उपागम सम्मिलित किए गए हैं। यह इकाई 'जेंडर का निर्माण कैसे होता है' के विश्लेषण तथा किस प्रकार विभिन्न विधियों द्वारा जेंडर का विश्लेषण किया जा सकता है से शुरू होती है।

THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

bdkb 1   tMj fo'y"k.k D;k g\

bdkb dh :ij[kk

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 जेंडर क्या है?

1.4 जेंडर समानता और जेंडर न्याय

- 1.4.1 महिलाओं की स्थिति
- 1.4.2 जेंडर गैप सूचकांक
- 1.4.3 जेंडर भेदभाव
- 1.4.4 व्यवहारिक जेंडर आवश्यकताएं और रणनीतिपरक जेंडर आवश्यकताएं
- 1.4.5 जेंडर मुख्य धारा
- 1.4.6 महिलाएं और पुनरुत्पादक कार्य

1.5 जेंडर विश्लेषण क्या है?

- 1.5.1 जेंडर विश्लेषण की प्रक्रिया
- 1.5.2 जेंडर विश्लेषण का क्षेत्र
- 1.5.3 जेंडर विश्लेषण और अंतर की पहचान

1.6 प्रमुख सिद्धांत और जेंडर विश्लेषण की मान्यताएं

1.7 सारांश

1.8 शब्दावली

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.10 उपयोगी पुस्तकें

1.11 बोध प्रश्न (मनन एवं अभ्यास के लिये)

1-1   iLrkouk

जेंडर समानता के प्रति चिंता विकास के अंतर्गत केन्द्रीय चिंताओं में से एक है। इस चिंता ने विभिन्न विकास नीतियों, उपागमों और जेंडर न्याय को प्राथमिकता देने के संरचना कार्यों, क्षमता और सशक्तीकरण के विकास को आकार दिया है। जेंडर विश्लेषण के संरचना कार्यों के अंतर्गत जेंडर विश्लेषण के उपकरणों को प्रायः विश्लेषणात्मक अवधारणाओं को विकसित करने तथा महिलाओं और पुरुषों, दोनों के विकास और नीति हस्तक्षेप के अनुभवों को संग्रहित करने के लिए प्रयोग किया जाता है। जेंडर विश्लेषण ने हमको विश्लेषणात्मक उपकरण के रूप में अवधारणाओं और विधियों के विभिन्न आयामों को इसको प्रयोग करने की प्रक्रिया में शामिल करने योग्य बनाया है। इसके अतिरिक्त इसने क्षेत्रीय और स्थानीय स्तर पर जेंडर समानता के लिए संघर्ष को समझने की महिला विधियों और उपागमों को विकसित करने में योगदान दिया है। यह इकाई विभिन्न प्रकार के आंकड़ों का प्रयोग करके जेंडर तथा महिलाओं की स्थिति को स्पष्ट करने के साथ शुरू होती है जिससे जेंडर विश्लेषण की जरूरत को समझने में सहायता मिलेगी।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

t:Mj fo'y"k.k %
,d ifjp;

1-2 mn:n';

इस इकाई के अध्ययन के बाद, आप कर सकेंगे :

- जेंडर विश्लेषण की परिभाषा;
- सेक्स और जेंडर की अवधारणाओं में अंतर;
- विभिन्न संकेतकों का प्रयोग करके महिलाओं की स्थिति का वर्णन;
- जेंडर विश्लेषण से संबंधित विभिन्न अवधारणाओं की व्याख्या;

1-3 t:Mj D;k g\

आजकल जेंडर शब्द का प्रयोग आमतौर पर किया जा रहा है। सरकारी संगठन, स्वयं सेवी संस्थाएं, विकासात्मक संगठन, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विकास कार्यक्रमों, दान दात्री संस्थाएं, संयुक्त राष्ट्र के संगठन – ये सभी जेंडर की बात करते हैं, कार्यक्रमों का जेंडर के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करते हैं और जेंडर के लिए बजट बनाते हैं। जेंडर क्या हैं? हमें जेंडर के बारे में क्यों बात करनी चाहिए? हम मानते हैं कि यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जिसकी जड़े हमारे समाज, हमारे परिवारों और हमारे जीवन में बहुत गहरी हैं। आइए, हम इस अवधारणा को समझने का प्रयास करें।

पुरुष और स्त्री जैविक रूप से अलग–अलग हैं। समाज भी उन्हें अलग मानता है। ये अंतर उनके कपड़े पहनने के तरीके, उनके कार्य, उनकी भूमिका और उनके व्यवहार में दिखाई देते हैं। शारीरिक अंतर को सेक्स का नाम दिया गया है। लेकिन सेक्स और जेंडर एक नहीं हैं। जेंडर सामाजिक निर्माण का परिणाम है। इस शब्द (पद) का प्रयोग समाज द्वारा स्त्री और पुरुष के बीच निर्मित अंतरों को परिभाषित एवं वर्णित करने के लिए किया जाता है। जेंडर शब्द का प्रयोग पुरुष और स्त्री की समाज द्वारा निर्मित पहचान के संदर्भ में किया जाता है। इसको स्त्री और पुरुष के बीच 'जैविक संबंधों से अधिक' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

इसमें स्त्री और पुरुषों को वर्गीकृत करने, उनकी भूमिकाएं तथा उनसे अपेक्षाएं निश्चित करने के लिए उनके बीच के वास्तविक एवं सोचे गए सभी अंतरें को महत्व देने, प्रयोग करने तथा उन पर विश्वास करने लिए अपनाए गए तरीके शामिल हैं। इसका महत्व यह है कि स्त्री और पुरुषों की जिंदगी और अनुभव का अस्तित्व जिसमें उनके कानूनी व्यवस्था के अनुभव भी सम्मिलित हैं, अलग अलग सामाजिक और अपेक्षाओं के जटिल संग्रह के बीच होता है।

समाज में लड़के और लड़कियों को बड़ा होने पर अलग अलग ढंग से पाला जाता है। माता–पिता, रिश्तेदार, पड़ोसी तथा समाज की प्रत्येक संस्था जैसे स्कूल, पुलिस और अदालतें पुरुषों और स्त्रियों से अपेक्षित भूमिकाओं और व्यवहार को आकार देते हैं। अतः जेंडर शब्द का प्रयोग स्त्रियों और पुरुषों द्वारा अपने दैनिक जीवन में समाज द्वारा निर्मित एवं सांस्कृतिक रूप से परिवर्तनशील भूमिकाओं को निभाने के संदर्भ में किया जाता है।

जेंडर कुछ गुणों और लक्षणों के साथ संबद्ध है। ये सामाजिक विशेषताएं क्या हैं? उदाहरण के लिए स्त्रियों (महिलाओं) को छरहरा (पतला), शर्मीला, संवेदनशील, पारम्परिक, घरेलू, इधर–उधर न दौड़ने वाली, ऊँचा न हंसने वाली होना चाहिए। पुरुषों को निडर, मजबूत, आत्म विश्वासी, ऊँचा बोलने वाला, शर्म न करने वाला तथा न रोने वाला होना

चाहिए। पुरुष और स्त्रियाँ इन गुणों के साथ नहीं पैदा होती। हम उन्हें इस तरीके से पालते हैं कि ये गुण उनमें आ जाते हैं। ये गुण–विशेषताएं जेंडर से संबंधित हैं क्योंकि सामाजीकरण प्रक्रिया का परिणाम हैं।

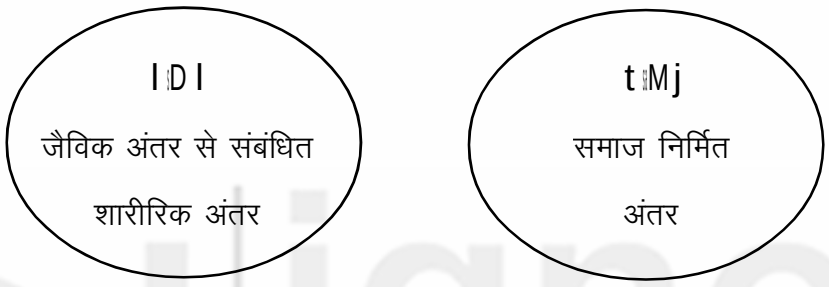

fØ;kdyki 1

बच्चे का सेक्स चुनना : कुछ गर्भवती महिलाओं और उनके पतियों से मिलिए। अच्छा होगा यदि वे अपने पहले बच्चे की तैयारी कर रहे हों। उनसे पूछना चाहिए कि ''क्या आप लड़का अथवा लड़की चाहते हो?'' अपने उत्तर के लिए दो कारण दीजिए। उत्तरों को एक चार्ट पर दो कालमों 'लड़का और लड़की' के नीचे सूचीबद्ध कीजिए। उत्तरों को संबंधित कालम में लिखिए। लड़का और लड़की के रूप में उत्तर देने वालों की गिनती करनी चाहिए। उत्तरदाताओं द्वारा दिए गए कारणों में से प्रत्येक का उनके चयन के लिए विश्लेषण करना चाहिए।

उदाहरण के लिए कुछ विशेष उत्तर निम्न प्रकार के हो सकते हैं :

yM+dh	yM+dk
माता–पिता की देखभाल करती हैं	परिवार का नाम आगे चलाते हैं
माँ बाप और दूसरों की सुनती हैं	वृद्धावस्था में माँ–बाप की देखभाल करते हैं
अच्छे कपड़े पहनाए जा सकते हैं	माँ–बाप की अंतिम क्रिया करते हैं
परिवार का चिराग होती हैं	परिवार के उत्तराधिकारी होगा

इनमें से प्रत्येक कारण का विश्लेषण होना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि लड़की परिवार का चिराग है तो क्या इसका अर्थ है कि वह अच्छे कपड़े पहने, परिवार के लिए सौभाग्य लेकर आए इत्यादि। यथार्थ में कितने लोग अच्छे कपड़े खरीद सकते हैं? क्या लड़की को परिवार के दुर्भाग्य के लिए जिम्मेदार माना जा सकता है?

हमारे समाज में लड़कियों को शिक्षित करके अपने पांव पर खड़े होने योग्य बनाने के बजाय उन्हें घर के काम सौंप दिए जाते हैं। साथ ही स्त्रियों को बौद्धिक स्तर परर निम्न स्तर का माना जाता है जो केवल कपड़ों और गहनों में रूचि रखती हैं। जिसका अर्थ है कि उन्हें इस प्रकार से पाला जाता है जो उन्हें समाज में निम्न स्तर का बना देता है।

पुरुषों के मामले में यह माना जाता है कि वे परिवार का नाम चलाते हैं। परिवार क्या है? क्या महिलाओं को शादी के बाद अपना उपनाम बदल लेना चाहिए। क्या उनका निजी अस्तित्व और व्यक्तित्व नहीं होता? हम यह कैसे मान सकते हैं कि केवल बेटा ही बड़ा होकर अपने परिवार का नाम आगे चलाएगा और माँ–बाप की देखभाल करेगा। क्या अनेक बेटे नहीं हैं जो बड़े होकर चोट एवं असामाजिक बनते हैं। क्या वे विरासत में परिवार का नाम लेने योग्य हैं? साथ ही क्या ऐसी अनेक बेटियाँ नहीं हैं जो सफल,

सुशिक्षित और बड़ी होकर अपने माँ–बाप की देखभाल करती हैं। क्या वे असली उत्तराधिकारी नहीं हैं? अब यह स्पष्ट होना चाहिए कि हमारी अनेक गलत अवधारणाओं और भ्रमित विचारों के कारण से लड़कियों और महिलाओं को दबाया और अधीन बनाया जाता है और इन विचारों को बदला जा सकता है। सामाजिक और सांस्कृतिक आधार पर स्त्री और पुरुष के बच निर्मित अंतर महिलाओं और लड़कियों पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं जो अंततः उनके साथ होने वाले भेदभाव का कारण बनते हैं।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ckek i:'u 1

ukV : i) प्रश्नों के उत्तर नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ii) अपने उत्तर की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. निम्नलिखित कथन सेक्स या जेंडर से किससे संबंधित विशेषताओं का वर्णन करते हैं? उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

1. निम्नलिखित कथन सेक्स या जेंडर से किससे संबंधित विशेषताओं का वर्णन करते हैं? उत्तर दीजिए।

- महिलाएं कोमल होती है और पुरुष कठोर
- महिलाएं गर्भ धारण कर सकती हैं – पुरुष नहीं
- महिलाएं बच्चों को स्तनपान करा सकती है – पुरुष बोतल से दूध पिलाते हैं
- बच्चे पालना माँ की जिम्मेदारी है
- पुरुष निर्णय लेते हैं
- पुरुष तार्किक होते हैं – महिलाएं नहीं
- पुरुषों की दाढ़ी मूंछ होती है – महिलाओं की नहीं
- महिलाएं पुरुषों के 70% के बराबर कमाई कर सकती हैं
- महिलाएं जन्म देती हैं – पुरुष नहीं
- महिलाएं जल्दी रोती है – पुरुष नहीं
- महिलाएं प्रतिमाह रजस्वला होती है
- लड़कों की आवाज किशोरावस्था में बदल जाती है।
- पुरुष घर का खर्च चलाते हैं और मुखिया होते हैं।

....

....

....

t:Mj fo'y"k.k D;k g\

2. ''सेक्स का निर्धारण जैविक आधार पर होता है जबकि जेंडर सामाजिक आधार पर निर्मित होता है''। इस कथन की पुष्टि कीजिए।

.....

.....

.....

.....

1-4 t:Mj lekurk vkj t:Mj U;k;

जेंडर समानता इस विचार पर आधारित है कि स्त्री और पुरुष दोनों के साथ एक सा व्यवहार किया जाए। यहाँ यह ध्यान नहीं रखा गया कि एक जैसे व्यवहार से न्यायोचित परिणाम नहीं निकलेंगे क्योंकि स्त्री और पुरुषों के जीवन अनुभव अलग अलग होते हैं।

दूसरे शब्दों में जेंडर समानता का यह अर्थ नहीं है कि स्त्री–पुरुष, लड़का–लड़की एक जैसे बन जाएंगे, लेकिन उनके अधिकार, उनकी जिम्मेदारियाँ और अवसर इस बात पर निर्भर नहीं करेंगे कि वे लड़के या लड़की के रूप में पैदा हुए हैं।

जेंडर न्याय स्त्रियों और पुरुषों के बीच अंतरों को ध्यान में रखता है और इस बात को मानता है कि न्यायोचित परिणाम प्राप्त करने के लिए भिन्न–भिन्न उपागमों की आवश्यकता हो सकती है। सबको समझना चाहिए कि स्त्रियों और पुरुषों तथा लड़के और लड़कियों के बीच अंतरों तथा विभिन्न स्त्री–पुरुषों के समूहों की विविधता को ध्यान में रखते हुए उनके लिए काम करके न्यायोजित परिणाम प्राप्त करने के लिए भिन्न–भिन्न उपागमों की आवश्यकता हो सकती है।

1-4-1 efgykvk dh fLFkfr

आइए, हम जेंडर विश्लेषण के तत्वों तथा उपागमों को समझने से पूर्व भारत में महिलाओं की स्थिति पर विचार करें।

महिला कार्यकर्ताओं और विद्वानों ने क्रमबद्ध ढंग से जीवन के हर क्षेत्र में भारतीय महिलाओं के दमन, शोषण और हाशियें पर ला खड़ा करने को उजागर किया है। इस कार्य में भारत में महिलाओं की स्थिति पर 1974 की रिपोर्ट एक बेंचमार्क है। प्रायः महिलाओं की स्थिति का परीक्षण निरपेक्ष भाव से स्वास्थ्य, शिक्षा, आय और सामाजिक संकेतों के आधार पर उनकी स्थिति को देखकर किया जाता है। लेकिन भारत के संविधान का एक उद्देश्य महिलाओं के लिए स्थिति में समानता को प्राप्त करना है। इसका उल्लेख स्पष्ट रूप से राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों, प्रस्तावना और मौलिक अधिकारों में किया गया है। भारत सरकार की 'भारत में महिलाओं की स्थिति, रिपोर्ट 1974', स्थिति को किसी सामाजिक व्यवस्था अथवा उप व्यवस्था में व्यक्तियों की तुलनात्मक स्थिति के रूप में परिभाषित करती है जिसे अधिकारों और कर्तव्यों के आधार पर दूसरों से अलग करके देखा जा सकता है। प्रत्येक स्थिति को भूमिका के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति समाज के अंतर्गत अनेक स्थितियाँ रखता है इसलिए उसका अनेक भूमिकाएं निभानी पड़ती हैं। इसलिए आदर्श व्यवहार भूमिका और अपेक्षित व्यवहार की भूमिका में अंतर करना अत्याव यक है। इन दोनों के बीच का अंतर व्यक्तियों की भूमिका की धारणा के प्रति परिवर्तन लाता है। स्थिति को भूमिकाओं के माध्यम से अनुभव किया और पहचाना जा सकता है। इससे राज्य और सामाजिक

सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा महिलाओं को दिए गए अधिकारों और अवसरों पर ध्यान जाता है जो जरूरी नहीं कि एक दूसरे को पुनर्वतित करते हों। परिवर्तन की प्रक्रियाएं आदर्श व्यवहार और अपेक्षित व्यवहार भूमिकाओं में अंतर के लिए जिम्मेदार हैं। अधीनता को अधिक मजबूती प्रदान करने के लिए आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संस्थाओं द्वारा निभाई गई भूमिका को 'भारत में महिलाओं की स्थिति रिपोर्ट – 1974' में उजागर किया गया है। महिला आंदोलनों ने नारी की स्थिति को उजागर करने के निरन्तर प्रयास किए हैं।

भारत सरकार ने कुछ प्रयासों पर जैसे राष्ट्रीय महिला सापेक्ष योजना, राष्ट्रीय महिला आयोग, महिलाओं पर केन्द्रित कार्यक्रम जैसे स्वर्ण जयन्ती स्वरोजगार योजना तथा महिला सशक्तीकरण से संबंधित कई कानूनों पर ध्यान केन्द्रित किया है। जनगणना एवं राष्ट्रीय सेंपल सर्वेक्षणों के माध्यम से जेंडर संबंधित आंकड़े एकत्र करने का प्रयास भी किए गए हैं। लेकिन गैर सरकारी संस्थाओं और सरकारी एजेंसियों के निरंतर प्रयासों का कोई फलदायी परिणाम प्राप्त नहीं हुआ। इसके कारणों पर राजय द्वारा संचालित विकास रणनीतियों के आलोचकों तथा महिलाओं की स्थिति पर प्रायः प्रभाव डालने में असफल रही जमीनी गैर सरकारी संस्थाओं के हस्तक्षेप ने पूरी जानकारी प्रदान की। अधिकांश कार्यक्रमों में प्रयोग किए गए उपागमों का लक्ष्य महिलाएं थीं। उदाहरण के लिए कल्याणकारी, गरीबी उन्मूलन तथा प्रबंधकीय उपागमों ने अंतर्निहित ढांचागत घटकों पर ध्यान नहीं दिया जिनके कारणों से गरीब महिलाओं का शोषण औरदमन होता था। वे महिलाओं के परिस्थिति और स्थिति में अंतर नहीं कर पाए।

यंग थ्योरी के अनुसार परिस्थिति भौतिक स्थितियाँ हैं जैसे वेतन, पोषण, शिक्षा तक पहुँच, स्वास्थ्य तक पहुँच इत्यादि। परंतु स्थिति का अर्थ है पुरुषों की तुलना में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और कानूनी स्थिति। यंग का तर्क था कि अधिकांश विकास के प्रयास महिलाओं की परिस्थिति पर ध्यान देते हैं न कि महिलाओं की स्थिति पर। मैक्सिन मोलिनेक्स (Maxine Molyneux) ने कुछ ऐसा ही भेद महिलाओं की भोजन, स्वास्थ्य, पेयजल, ईंधन, बच्चों की देखभाल, शिक्षा, प्रौन्नत प्रौद्योगिकी जैसी व्यवहारिक आवश्यकताओं को पूरा करना आवश्यक है। परंतु वे यह करना पर्याप्त नहीं है। उनके दीर्घकालिक रणनीतिक हितों को पूरा करने के लिए महिलाओं को संगठित एवं लायबद्ध करना जरूरी है। इसको करने में महिलाओं की अधीनता का विश्लेषण तथा वर्तमान में चल रहे लैंगिक आधार पर श्रम विभाजन, बच्चों की देखभाल तथा घरेलू श्रम के बोझ को कम करना, सांस्थानिक भेदभाव को मिटाना, राजनीतिक समानता स्थापित करना, बच्चे पैदा करने मं चयन की स्वतंत्रता, महिला उत्पीड़न एवं महिला नियंत्रण के विरुद्ध उपायों के संतोषजनक प्रबंधों का विकल्प निर्मित करना होता है। यह कार्य जेंडर विश्लेषण के द्वारा किया जा सकता है तथा वर्तमान में चल रही असमानता की पहचान की जा सकती है। अम्रत्य सेन ने असमानताओं को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया है।

- सर्वाइवल (जीवन संबंधी) असमानता
- जन्मदर असमानता
- असमान सुविधाएं
- स्वामित्व में असमानता
- घरेलू लाभों तथा चयनों की भागीदारी में असमानता

- घरेलू हिंसा और शारीरिक उत्पीड़न

t:Mj fo'y"k.k D;k g\

उसने आगे तर्क दिया कि स्त्री और पुरुष में असमानता अनेक रूपों मं प्रकट हो सकती है। इसके कई चेहरे हैं। उदाहरण के लिए जापान में पोषण अथवा स्वास्थ्य संबंधी देखभाल अथवा स्कूली शिक्षा में कोई जेंडर भेदभाव नहीं है परंतु पुरुषों को प्रशासन अथवा व्याहार में उच्च नेतृत्व वाले पदों को प्राप्त करने में तुलनात्मक दृष्टि से काफी अधिक लाभ की स्थिति दिखाई देती है।

श्रीलथा बाटलीवाला ने 1998 में अपनी पुस्तक 'स्टेट्स ऑफ रुरल वीमेन इन कर्नाटक' में तर्क देती है कि भारत में महिलाओं की शिक्षा में वर्गीय उपागम है जिसमें जेंडर भेदभाव कम है। उसने आगे कहा कि रजनी के. मूर्ति ने एक मॉडल बनाया थ जिसके विषय में उसने अपने पेपर 'जेंडर एंड डेवेल्पमेंट इन इंडिया (भारत मं जेंडर विकास) में स्थिति की संवेदनशीलता के भिन्न आयामों को प्रस्तुत किया था। मूर्ति की धारणा थी कि अध्ययन में महिला को केन्द्र में रखना चाहिए तथा उनके अपने जीवन पर उनके निजी नियंत्रण के अंश का परीक्षण होना चाहिए। वह महिलाओं के निजी नियंत्रण का आकलन करने के लिए पांच प्रमुख पहलुओं की रूपरेखा प्रस्तुत करती हैं। पांच प्रमुख पहलु हैं : श्रम संसाधन (आर्थिक, स्वास्थ्य, शिक्षा और राजनीतिक), प्रजनन क्षमता, दैहिक विश्वास, मानसिक और शारीरिक हिंसा के मुक्ति और गतिशीलता। मूर्ति के फ्रेमवर्क के आधार पर श्रीलथा बाटलीवाला ने अपनी पुस्तक 'स्टेट्स ऑफ वीमेन इन कर्नाटक' (कर्नाटक में महिलाओ की स्थिति) में आकलन के पहलुओं के माध्यम से महिलाओं की स्थिति का परीक्षण किया तथा जेंडर समानता को मापने के लिए एक फ्रेमवर्क तैयार किया। सामग्री के संदर्भ में वह मानवीय और अदृश्य संसाधनों के विषय में संसाधनों को प्रयोग करने का अवसरों का जिक्र करती है। वह नियंत्रण को केवल निर्णय निर्माण की शक्ति का पुरुषों से महिलाओं के हाथों में आना मात्र नहीं मानती अपितु वह निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों में निर्णय निर्माण करने में समाज द्वारा मान्य एवं स्वीकृत दोनों की समान भागीदारी को ही नियंत्रण मानती है।

इसी प्रकार श्रम के मामले में नियंत्रण का अर्थ सभी व्यवसायिक क्षेत्रों में जेंडर के विचार के बिना समान अवसरों पर महिलाओं का अधिकार, अपने लिए काम चुनने हेतु बातचीत करने की तथा उनके द्वारा अर्जित आय को प्रयोग करने का अधिकार है। महिलाओं की स्थिति का परीक्षण विस्तृत क्षेत्रों जैसे राजनीतिक पदों तक उनकी पहुँच और नियंत्रण, निजी संपतियों और संसाधनों तक पहुँच और उन पर नियंत्रण, सार्वजनिक संसाधनों तक पहुँच तथा उनके श्रम और आय पर नियंत्रण, अपने शरीर की कामुकता पर नियंत्रण, प्रजनन और शारीरिक सुरक्षा, शारीरिक गतिशीलता पर नियंत्रण, सूक्ष्म और अदृश्य संसाधनों जैसे सूचना, प्रभाव, राजनीतिक दम, कानून में स्थिति तथा कानूनी ढांचे और निवारण तक पहुँच के माध्यम से किया जाता है। आइए हम अपने समाज में महिलाओं की स्थिति और परिस्थिति पर विभिन्न सूचकों के माध्यम से एक दृष्टि डालें –

- भारत में लैंगिक अनुपात : 940 (2011 के जनगणना आंकड़े – अंतरिम)
- भारत में बाल लिंग अनुपात : 914 (2011 के जनगणना आंकड़े – अतरिम)
- जेंडर असमानता सूचकांक
- विश्व स्तर पर भारत का रैंक – 122 (मानव विकास सूचकांक 2010)
- जच्चा मृत्यु दर : 450 (मानव विकास सूचकांक 2010)

- संसद में महिलाओं का प्रतिशत : 9.2 (मानव विकास सूचकांक 2010)
- श्रम बल प्रतिभागिता : 35.7% (मानव विकास सूचकांक 2010)
- कुशल स्वास्थ्य कर्मचारी की प्रसूति के दौरान उपस्थिति : 47% (मानव विकास सूचकांक 2010)
- गैर कृषि क्षेत्रों से आय अर्जित करने वाली महिलाओं का प्रतिशत : 18% (पी.आर. सी. विश्व की महिला और कन्या डाटा शीट –2011)
- आर्थिक रूप से सक्रिय एजेंट्स का प्रतिशत महिलाएं – 33 पुरुष – 81 (पी.आर. सी. विश्व की महिला और कन्या डाटा शीट –2011)

विभिन्न सामाजिक क्षेत्र जैसे कृषि, लघु उद्योग, संगठित श्रम ब, उच्च प्रशासनिक पदों पर अधिकारी वर्ग में पद, राजनीति में प्रतिभागिता जेंडर भेदभाव को दर्शाते हैं।

सारणी 1.1 भारत में महिलाओं की स्थिति से संबंधित आंकड़े दर्शाती है। संख्याओं को देखिए लेकिन अपनी आज की स्थिति की कल्पना एवं आकलन कीजिए।

सामाजिक सूचक	भारत
शिशु मृत्यु दर प्रति हजार	73
जच्चा मृत्यु दर प्रति लाख जन्म पर	570
महिला साक्षरता %	58
स्कूल जाने वाली कन्याओं का %	47
महिलाओं द्वारा अर्जित आय %	26
क्म वनज के बच्चे %	53
कुल प्रजनन दर	3.2
सरकार में महिलाओं का %	6
गर्भ निरोध के तरीके प्रयोग करने वालों का %	44
जन्म के समय कम वनज के बच्चों का %	33

स्रोत : भारत की जनगणना, 2011 एवं राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण, 2006

सारणी : जेंडर गैप की स्थिति स्पष्ट करती है और जेंडर के प्रति न्यायपूर्ण समाज प्राप्त करने की लम्बी यात्रा को दर्शाती है।

1-4-2 tsMj xSi lwpdkad

विश्व आर्थिक फोरम के वर्ष 2010 के लिए जेंडर गैप सूचकांक में भारत का 128 देशों में 112वां स्थान (रैंक) है। इस सूचकांक में आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य संबंधी मापदंड शामिल है। 'आर्थिक भागीदारी और अवसर' में भारत की स्थिति 39.8% प्रतिभागी

दर के साथ 122 वें स्थान पर सबसे नीचे के दस स्थानों में है। यह रिपोर्ट स्त्री और पुरुषों के बीच असमानता के चार गंभीर क्षेत्रों का परीक्षण करती है।

- आर्थिक प्रतिभागिता और अवसर : वेतन, प्रतिभागिता स्तर तथा उच्च कौशल के रोजगारों तक पहुँच के परिणाम
- शैक्षणिक प्राप्ति : आधारभूत और उच्चतर स्तर की शिक्षा तक पहुँच के परिणाम
- राजनीतिक सशक्तीकरण : निर्णय निर्माण की संरचनाओं में प्रतिनिधित्व के आधार पर परिणाम
- स्वास्थ्य और जीवन : जीवन प्रत्याशा और लिंग अनुपात पर परिणाम

Lkkj.kh 1-2 % fo'o tsMj xSi lwpdkad 2011

tsMj xSi mi&lwpdHkkjr	jSd	Ldksj	lEiy	Ekfgyk,a	Iq#"k	Ekfgyk& iq#"k vuqikr
आर्थिक भागीदारी और अवसर	128	0.403	0.590			
श्रम बल में भागीदारी	122	0.42	0.69	35	85	0.42
समान कार्य के लिए समान वेतन (सर्वेक्षण)	84	0.63	0.65	——	——	0.63
अनुमानित अर्जित आय (अमरीकी डालर में)	122	0.32	0.53	1,304	4,102	0.32
	123	0.03	0.27	3	97	0.03
	——	——	0.64	——	——	——
	120	0.837	0.929			
	122	0.68	0.86	51	75	0.68
	113	0.96	0.98	88	91	0.96
	121	0.79	0.92	——	——	0.79
	107	0.70	0.86	11	16	0.70
	132	0.931	0.955			
	130	0.89	0.92	——	——	0.89
	110	1.02	1.04	57	56	1.02
	23	0.291	0.179			
	96	0.12	0.22	11	89	0.12
	86	0.11	0.18	10	90	0.11
	4	0.51	0.15	17	33	0.51

स्रोत : द ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट, 2010

Lkkj.kh 1-3 % dN p;fur lpdrdk d vkèkkj ij tsMj xi

lkslfr vkSj xHkèkkj.k	
कुशल स्वास्थ्य कर्मचारी की उपस्थिति में हुए जन्म %	47
गर्भ निरोधक प्रयोग : विवाहित महिलाएं %	56
शिशु मृत्यु दर (प्रति हजार जीवित जन्म पर)	52
प्रसूति अवकाश की अवधि	12 सप्ताह
प्रसूति अवकाश के लाभ (दिए गए वेतन का %)	100
जच्चा मृत्यु दर (प्रति लाख जीवित जन्म पर)	450
व्यस्क प्रजनन दर (15 से 19 वर्ष की महिलाओं में प्रति 1000 जन्म पर)	45
f'k{kk vkSj iz'k{k.k	
महिला शिक्षक, प्राथमिक शिक्षा %	44
महिला शिक्षक, माध्यमिक शिक्षा %	64
महिला शिक्षक, तृतीयक शिक्षा %	40
jkstxkj vkSj vk;	
व्यस्क महिला बेरोगजारी दर %	4
व्यस्क पुरुष बेरोजगारी दर %	5
गैर कृषि क्षेत्र में महिला बेतनभोगी मजदूर % (कुल श्रम बल का)	18
महिलाओं की उद्यम नेतृत्व के पद पर जाने की योग्यता	4.55
vkèkkjHkr vfèkdkj vkSj lkekftd lLFkk,a	
पैतृक बनाम मातृ अधिकार	1.00
महिला जननांगों की विकृति/अंगभंग	0.00
बहु विवाह	1.00
महिलाओ के विरुद्ध हिंसा पर दंडनीय प्रावधानों का होना	0.33

स्रोत : द ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट, 2010

Hkkjr dk tsMj xSi lpdkd 2010 ¼134 ns'kksa esa ls½ 112 0-615

- जेंडर गैप सूचकांक 2009 (134 देशों में से) 114 0.615 (भारत)
- जेंडर गैप सूचकांक 2008 (130 देशों में से) 113 0.606 (भारत)
- जेंडर गैप सूचकांक 2007 (128 देशों में से) 114 0.594 (भारत)
- जेंडर गैप सूचकांक 2006 (115 देशों में से) 98 0.601 (भारत)

जेंडर गैप सूचकांक देशों का उनके सकल संसाधनों और अवसरों के स्तर का ध्यान किए बिना अपनी पुरुष और महिला जनसंख्या के बीच संसाधनों तथा अवसरों को बांटने के

स्तर की गुणवता के आधार पर आकलन करता है। सूचकांकों के माध्यम से विश्व जेंडर गैप के आकलन एवं तुलना करने के लिए व्यापक फ्रेमवर्क प्रदान करने एवं अपने अपने देश में महिला एवं पुरुषों के बीच न्यायपूर्ण ढंग से संसाधन विभाजित करने वाले रोल माडल के रूप में पहचान रखने वाले देशों के नाम उजागर करके ये सूचकांक अधिक जागरूकता पैदा करने तथा नीति निर्माताओं के बीच अधिक विचार–विमर्श को उत्प्रेरित करते हैं।

निश्चित रूप से भारत विश्व के अति जटिल लोकतंत्रों में से एक है जहाँ विभिन्न संवैधानिक प्रावधानों, कानूनों, नीतियों और योजनाओं के माध्यम से महिलाओं के कल्याण और सशक्तीकरण के प्रति प्रतिबद्धता का एक लम्बा इतिहास है जबकि यहाँ के परिवारों, समाजों और अर्थ व्यवस्थाओं में संरचनात्मक जेंडर पक्षपात बहुत गहरे ढंग से समाया हुआ है।

भारत में घटते हुए लिंगानुपात के सामने आर्थिक वृद्धि की निरंतर उच्च दरों, ऊर्जा एवं प्राकृतिक संसाधनों के कम होने, बढ़ती आर्थिक असमानता और शहर–गाँव के बंटवारे से उत्पन्न अनेक दुर्जेय (कठिन) अवसर और चुनौतियाँ हैं। महिलाओं के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बहिष्करण की अन्यायपूर्ण स्थिति को ठीक करने के लिए, विशेषतः बहिष्कृत समूह हेतु प्रयुक्त सुविज्ञ और उद्देश्यपूर्ण उपागम को, अब केवल महिलाओं के मुद्दों के रूप में नहीं देखा जा सकता। स्थायी और न्यायपूर्ण आर्थिक वृद्धि के लिए जेंडर समानता अब पूर्व अपेक्षित आवश्यकता है।

महिलाओं, जेंडर, नियोजन तथा नीतियों पर कोई भी चर्चा भारतीय महिलाओं की जीवन–मरण की स्थितियों पर चर्चा किए बिना संभव नहीं है। महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण और घटते लिंगानुपात के बीच संबंध कितना दिखता है, उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। आर्थिक और सामाजिक संदर्भ में महिलाओं की कीमत को निरंतर कम आंकने तथा अंतरों को मापने के सांख्यिक योग्यता ने इस मुद्दे को प्रमुख बना दिया है।

ckèk i`'u 2

ukV : i) प्रश्नों के उत्तर नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ii) अपने उत्तर की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. भारत में स्कूलों में लड़कियों एवं लड़कों के प्रवेश होने तथा बीच में स्कूल छोड़ जाने संबंधी आंकड़ों को एकत्र कीजिए। जेंडर भेद के कारणों का संक्षिप्त विश्लेषण कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

1-4-3 tsMj HksnHkko

पुरुष और महिलाओं से अपेक्षित व्यवहार के प्रति हमारे विचारों की जड़े बहुत गहरे जमी हुई हैं। ऐसे विचारों में क्या त्रुटि है? हमें इनको क्या बदलना चाहिए? जब हम इन प्रश्नों के बारे में सोचते हैं तो हम महसूस करते हैं कि इस प्रकार की सोच हमें स्त्री और पुरुषों की भूमिका के रूढ़िवादी विचारों की ओर ले जाती है। उदाहरण के लिए हम मानते हैं कि महिलाओं को कोमल और मृदुभाषी होना चाहिए। महिलाओं को अपने इस गुण को बनाए रखने के लिए कम खाना चाहिए। लेकिन क्या तब यह मानना चाहिए कि मोटी महिलाएं महिलाएं नहीं होती? क्या इसका यह अर्थ है कि जो सख्त ऊँचा और दबंग ढंग से बोलें – वे महिलाएं नहीं कहलाती? इस प्रकार की रूढ़ियाँ महिलाओं पर पाबंदी लगाती हैं। महिलाएं महसूस करती हैं कि मोटा होने पर उन्हें वनज कम करने के लिए डायटिंग करनी चाहिए। उनका स्वास्थ्य प्रभावित होता है और वे नाजुक बन जाती हैं। वे संक्रमण का प्रतिरोध करने में कमजोर हो जाती हैं। वे कठोर काम करने योग्य नहीं रहती। क्योंकि महिलाओं को कोमल समझा जाता है इसलिए उन्हें पुरुषों के मुकाबले कम वेतन दिया जाता है अथवा उन्हें केवल सजावटी और सौंदर्यपरक कामों पर रखा जाता है। क्या यह भेदभाव नहीं है।?

दूसरी ओर पुरुषों को मजबूत और तगड़ा माना जाता है। उन्हें भोजन की अधिक मात्रा दी जाती है। उन्हें ऊर्जा से भरे खेलों में भाग होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। उन्हें महिलाओं की तुलना में अधिक मजबूत समझा जाता है इसलिए उन्हें अधिक वेतन दिया जाता है। हम सभी इस प्रकार की रूढ़िवादी सोच और भेदभाव का समर्थन करते हैं और इसको अपने परिवार और समाज में चलने देते हैं। यह अंतर जन्मजात नहीं होते। ऐसे भेदभाव को हम अभिभावक, संबंधी और पड़ोसी के रूप में पैदा करते हैं। क्योंकि यह भेद प्राकृतिक नहीं है इसलिए इन्हें बदला जा सकता है। भेदभाव एक सामाजिक शब्दावली है जिसका संबंध किसी व्यक्ति के साथ उसके किसी विशेष वर्ग अथवा श्रेणी के साथ संबंधों के प्रति पूर्वाग्रह के आधार पर किए जा रहे व्यवहार से होता है। भेदभाव किसी अन्य समूह के सदस्यों के साथ किए जा रहे वास्तविक व्यवहार के माध्यम से प्रकट होता है। इसमें किसी एक समूह के सदस्यों को उपलब्ध अवसरों से दूसरे समूह के सदस्यों को बहिष्कृत अथवा पाबंद किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र व्याख्या करता है कि भेदभाव के अनेक रूप हो सकते हैं परंतु प्रत्येक में किसी न किसी प्रकार का बहिष्कार अथवा इंकार शामिल होता है। कई देशों में भेदभाव पूर्ण कानून चल रहे हैं। कुछ अन्य देशों में जातिगत कोटा (आरक्षण) प्रदान करके भेदभाव के नकारात्मक प्रभाव को ठीक किया जा रहा है। इसको सकारात्मक भेदभाव भी कहा जाता है। CEDAW सम्मेलन में परिभाषित भेदभाव प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष तथा लक्षित अथवा अलक्षित हो सकता है। परिभाषा में महिलाओं के विरुद्ध भेदभाव के अर्थ को स्पष्ट किया गया है। यह जेंडर के आधार पर भेदभाव पूर्ण व्यवहार करने के तीन तरीकों को उजागर करती है। जानबूझकर अथवा अनजाने में किया गये अहितकारी व्यवहार को निम्नलिखित ढंग से वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. विभेदकारी व्यवहार जो निजी और सार्वजनिक, दोनों क्षेत्रों में (प्रत्यक्ष भेदभाव) महिलाओं के मानवाधिकारों को नकारता है। उदाहरण के लिए राष्ट्रीय कानून महिलाओं को अपने बच्चों को नागरिकता प्रदान करने के अधिकार को प्रतिबंधित करता है जबकि पुरुष कर सकते हैं।

2. विभेदकारी व्यवहार जो निजी और सार्वजनिक, दोनों क्षेत्रों में (प्रत्यक्ष भेदभाव) महिलाओं के मानवाधिकारों को नकारता है। उदाहरण के लिए किसी एक देश

विशेष में केवल महिलाओं पर दूसरे देशों में विदेशी मजदूरों के शोषण के खतरे के कारण काम करने के लिए जाने पर प्रतिबंध है।

3. वैसा ही व्यवहार जो निजी और सार्वजनिक, दोनों क्षेत्रों में (प्रत्यक्ष भेदभाव) महिलाओं के मानवाधिकारों को नकारता है। उदाहरण के लिए किसी एक विशेष संस्थान में महिलाओं और पुरुषों में भेद किए बिना गोल्फ खेलने पर प्रौन्नति के लिए कुछ अंक दिए जाते हैं। लेकिन वास्तव में यह पुरुषों को लाभ पहुँचाता है क्योंकि मुख्य रूप से गोल्फ केवल पुरुष ही खेलते हैं।

अतः महिलाओं के मानवाधिकारों को नकारने वाली किसी पाबंदी, बहिष्कार अथवा भेदभाव की कार्रवाई को, भले ही वह इरादतन हो अथवा गैर इरादतन, भेदभाव कहते हैं।

1-4-4 0;ogkfjd tsaMj vko';drk,a vkSj j.kuhfrd tsaMj vko';drk,a

व्यवहारिक जेंडर आवश्यकताएं तथा रणनीतिक जेंडर आवश्यकताएं व्यवहारिक जेंडर आवश्यकताएं ऐसी आवश्यकताएं हैं जो महिलाओं की समाज द्वारा स्वीकृत भूमिका के लिए चुनौती नहीं होती। ये आवश्यकताएं उनकी प्रजनन तथा समुदाय प्रबंधन संबंधी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों से संबंधित होती हैं। ऐसी आवश्यकताएं व्यहारिक होती हैं जिनमें आश्रय, रोजगार और भोजन जैसी जीवन के लिए पूर्व अपेक्षित आवश्यकताएं शामिल होती हैं। जबकि व्यवहारिक आवश्यकताएं उनकी वर्तमान जेंडर भूमिकाओं से संबंधित होती है परंतु रणनीतिक आवश्यकताएं महिलाओं के लिए न्याय और समानता के पक्ष में इन भूमिकाओं को चुनौती देती हैं। रणनीतिक जेंडर हित इस मान्यता के साथ शुरू होते हैं कि महिलाएं अपने विरुद्ध सांस्थानिक और सामाजिक भेदभाव के कारण पुरुषों के आधीन हैं।

1-4-5 tsaMj eq[; èkkjk

जेंडर को मुख्य धारा में लाने का काम जेंडर के आयाम को सभी नीति क्षेत्रों में स्पष्ट करता है। इससे आगे जेंडर को मुख्य धारा में लाने का उपागम महिलाओं को अलग से नहीं देखता अपितु यह स्त्री और पुरुष दोनों को विकास प्रक्रिया में सक्रिय एवं लाभ लेने वालों के रूप में देखता है। यह महत्वपूर्ण है कि जेंडर को मुख्य धारा में लाना 'विकास में महिला' उपागम से भिन्न है क्योंकि वह उपागम महिलाओं की पूर्व स्वीकृत और मान्य भूमिकाओं और समस्याओं के बजाय उन्हें विकास परिस्थिति के गहन विश्लेषण के लिए प्रारम्भिक बिंदु के रूप में लेता है। अनुभव दर्शाता है कि जेंडर से संबंधित मुद्दे प्रत्येक देश, धर्म और स्थूल स्थिति में भिन्न होते हैं। इसके साथ ही अनुभव यह भी दर्शाता है कि गहन और संवेदनशील जेंडर विश्लेषण हर बार जेंडर आधारित आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं तथा अवसरों और परिणामों के रूप में जेंडर असमानताओं को उजागर करता है।

जेंडर को मुख्यधारा में लाने का काम इन समस्याओं को हल करने का प्रयास करता है। उपरोक्त के आधार पर यह स्पष्ट है कि जेंडर को मुख्य धारा में लाने का उपागम जेंडर समानता पर आधारित विशिष्ट नीतियों, कार्यक्रमो अथवा परियोजनाओं की आवश्यकता को अनावश्यक नहीं बनाता। हस्तक्षेप का स्तर (आधारभूत जेंडर संवेदनशीलता से बेकर व्यापक जेंडर लक्षित कार्यक्रमों तक) जेंडर संवेदनशील परिस्थिति जन्य आकलन पर निर्भर करेगा। अन्ततः एक व्यापक रणनीति के अंतर्गत मुख्यधारा में लाने के काम को कार्पोरेट तथा कार्यालयों के वातावरण को भी देखना होगा जहाँ नीतियाँ और कार्यक्रम

बनाए एवं लागू किए जाते हैं। अतः जेंडर संबंधी चिंताओं को कार्यक्रम बनाने के साथ जोड़ने के लिए अपनाई गई रणनीति के साथ कार्य स्थलों पर जेंडर संवेदनशील वातावरण सुनिश्चित करने की रणनीति अपनानी चाहिए जो स्त्री और पुरुषों दोनों को समान अवसरों और समान व्यवहार की गारंटी दे सके।

ifjHkk'kk d vu lkj tsMj e[;èkkjk e ykus ¼euLVªhfex½ e ifj;kstukvka] uhfr;k vkj dk;Øek d r;kj dju] ykxw dju rFkk eY;kdu dh lHkh voLFkkvk e tsMj fo'ys"k.k vkj tsMj ifjizs{; dk ,dhdr dju k 'kkfey gkrk gA tsMj euLVªhfex d nl dne fuEufyf[kr gS &

1. स्टेकहोल्डर्स के लिए मेनस्ट्रीमिंग उपागम : निर्णय निर्माता कौन हैं?
2. जेंडर कार्यक्रम की मेनस्ट्रीमिंग : मुद्दा क्या है?
3. जेंडर समानता की ओर बढ़ना : लक्ष्य क्या है?
4. स्थिति का मापन : हमारे पास क्या सूचनाएं हैं?
5. मुद्दे का परिष्करण : शोध और विश्लेषण
6. जेंडर परिप्रेक्ष्य से नीति निर्माण अथवा परियोजना हस्तक्षेप
7. केस पर चर्चा करना : जेंडर के मामलों पर
8. मानीटर करना : चीजों पर जेंडर संवेदनशील दृष्टि रखना
9. मूल्यांकन : हम कैसे करते हैं?
10. बातचीत को जेंडर परक बनाना

1.4.6 efgyk,a vkj iqu#Riknd dk;Z

आर्थिक कीमत की दृष्टि से कीमत बाजार की कीमत का पयार्य है। इसके आधार पर उत्पादक कार्य और पुनरुत्पादक कार्य में अंतर है। प्रजनन कार्य या ऐसा कार्य जिसकी बाजार में कोई कीमत नहीं है – उदाहरण के लिए बहुत सा घरेलु काम और सामुदायिक काम राष्ट्रीय लेखांकन व्यवस्था में बिना कीमत के रह जाते हैं। परिणाम स्वरूप समाज के सकल उत्पादन का अवमूल्यांकन होता है तथा उन लोगों के योगदान को कोई पहचान अथवा लाभ नहीं मिलता जो पुनरुत्पादक कार्य करते हैं।

अधिकांश समाजों में महिलाएं पुनरुत्पादक कार्य की भारी जिम्मेदारी निभाती हैं जिसमें बच्चे की देखभाल, बुर्जुगों तथा अशक्तों की देखभाल, खाना बनाना, सफाई तथा अन्य घरेलू तथा सामुदायिक कार्य शामिल किए जा सकते हैं। इसलिए पुनरुत्पादक कार्य जेंडर का मुद्दा बन जाता है क्यों कि महिलाओं के अधिकांश योगदान को राष्ट्रीय आय लेखांकन में नहीं दर्शाया जाता जिससे यह झूठा भ्रम होता है कि या तो महिलाएं आर्थिक रूप से सक्रिय नहीं है अथवा दोनों की आर्थिक गतिविधियों में असमानता है।

पुनरुत्पादक कार्य मैक्रोइकनामिक नीति और विश्लेषण के लिए न केवल राष्ट्रीय आय लेखांकन की दृष्टि से अपितु ढांचागत समायोजना अथवा आर्थिक विकास को उत्साहित करने वाली अन्य प्रमुख नीतियों की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण विचारणीय विषय है। जब पुनरुत्पादक कार्य को मान्यता नहीं मिलती तो मैक्रोइकनामिक उन्मुख नीतियों के कारण पुनरुत्पादक क्षेत्र पर डाले गए बोझ की गणना नहीं की जाती। इससे माइक्रो स्तर पर नाटकीय ढंग से कठिनाइयाँ बढ़ सकती हैं। उदाहरण के लिए सामाजिक सेवा क्षेत्र में

रुकावटें अथवा समाज सेवा के लिए शुल्क लगाने से, दोनों स्थितियों में बीमार और बुर्जुगों की देखभाल का बोझ पुनरुत्पादक क्षेत्र पर आ जाएगा। इससे पुनरुत्पादक श्रमिकों का योगदान बढ़ता है परंतु इस योगदान को कोई पहचान या इनाम नहीं मिलता। इस जिम्मेदारी को उठाने वालों के लिए उत्पादक क्षेत्र में गतिविधि करने तथा आय अर्जित करने का विकल्प और क्षमता सीमित हो जाते हैं। अंतिम परिणाम के रूप में सारी क्षमताओं में कमी आ जाती है।

यद्यपि पुनरुत्पादक कार्य की कीमत लगाते समस्या एक समस्या होती है कि ऐसे कार्यों के अधिकांश महत्व को बाजार की कीमत में नहीं मापा जा सकता। यद्यपि पुर्नरुत्पादक कार्यों के कुछ सह–उत्पादनों जैसे खाना बनाना, बर्तन धोना, डाईपर बदलना इत्यादि की बाजार कीमत लगाई जा सकती है परंतु सामाजिक संबंधों और परिवार के साथ बिताए गए समय की मानवीय कीमत नहीं लगाई जा सकती। परंतु यह भी जरूरी है कि इसकी कीमत को अवश्य पहचाना जाना चाहिए।

1-5 t:Mj fo'y"k.k D;k g\

Candida March (कैन्डिड मार्च), Ines Smith (इन्स स्मिथ) और मैत्रीय मुखोपाध्याय के अनुसार जेंडर विश्लेषण समाज में स्त्री और पुरुष के संबंधों की छानबीन कर उन्हें उजागर करता है तथा दोनों के बीच संबंधों में असमानता को कुछ ऐसे प्रश्न पूछ कर जैसे कौन क्या करता है? किसके पास क्या है? निर्णय कौन लेता है? कैसे लेता है? किसे लाभ होता है? किसे हानि होती है? प्रकाश में लाता है। जब हम ये प्रश्न पूछते हैं तो हम यह भी पूछते हैं कि कौन से पुरुष? कौन सी स्त्री या महिलाएं? जेंडर विश्लेषण निजी क्षेत्र और सार्वजनिक क्षेत्र के बीच बहस को समाप्त करता है। यह देखता है कि घर के भीतर शक्ति संबंध किस प्रकार अंतरराष्ट्रीय, राज्य, बाजार और सामुदायिक स्तर पर संबधों के साथ जुड़ते हैं। जेंडर और विकास का कार्य जेंडर विश्लेषण पर आधारित होता है। इसमें स्त्री और पुरुषों में समानता को बढ़ाना शामिल होता है। इसमें महिलाओं द्वारा विशेष रूप से अपने लिए महत्वपूर्ण माने जाने वाले विषयों को प्रस्तुत करना तथा महिलाओं और पुरुषों का जीवन बनाने वाली संस्थाओं के मुख्य एजेंडे को आगे बढ़ाना होता है।

प्रत्येक व्यक्ति का महसूस करने, सोचने और सांस्थानिक ढांचे से खुद को जोड़ने का एक अपना जेंडर आधारित प्रतिमान होता है। यह सब व्यक्ति में प्रतिदर्शित होता है क्योंकि वह एक विशेष संस्कृति, परिवार, स्कूल, धर्म, विवाह अथवा व्यापारिक संगठन, समाज सेवा, शैक्षणिक संस्थान अथवा राज्य के विभाग से संबंध रखता है। इन संस्थाओं की पुरुषवादी अथवा महिलावादी संस्कृति संस्थाओं के लक्ष्यों, उद्देश्यों, ढांचों, व्यवस्थाओं तथा उनसे संबंधित मुद्दों को प्रभावित करती है। इन संस्थाओं की जेंडर संस्कृति को समझने तथा विश्लेषण करने से बहुत कुछ उभर कर सामने आता है तथा जिससे व्यक्ति किसी प्रकार की सामाजिक कार्रवाई प्रक्रिया में जुट सकता है जिससे दलितों को समानता की ओर ले जाने हेतु सशक्त किया जा सकेगा।

जेंडर विश्लेषण महिलाओं और पुरुषों के जीवन में स्पष्ट अंतर करने का आधार प्रदान करता है और इससे विश्लेषण के गलत अनुमानों और रुढ़ियों पर आधारित होने की सम्भावना समाप्त हो जाती है। जेंडर विश्लेषण स्त्री और पुरुषों के अंतरों का परीक्षण करता है जिसमें वे सभी अंतर शामिल होते हैं जो महिलाओं की आर्थिक असमानता के लिए उत्तरदायी है तथा विश्लेषण से मिली जानकारी को नीतियों के बनाने तथा सेवा प्रदान करने के लिए लागू किया जा सकता है। जेंडर विश्लेषण की चिंता इन

असमानताओं के पीछे छुपे हुए कारण हैं तथा इसका उद्देश्य महिलाओं के लिए सकारात्मक परिवर्तन लाना है।

1-5-1 t:Mj fo'y"k.k dh izfØ;k

जेंडर विश्लेषण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न प्रतिभागी उपकरणों एवं शोध के तरीकों द्वारा किसी भी संदर्भ में असमानताओं तथा भेदभावों की पहचान की जाती है। क्योंकि जेंडर एक सामाजिक निर्माण है इसलिए जेंडर विश्लेषण के लिए प्रयोग किए तरीके व्यक्तिनिष्ट होते हैं। यह पुरुषों और महिलाओं के संबंधों का संसाधनों तक उनकी पहुँच, बेहतर जीवन स्तर प्राप्त करने, शिक्षा तथा सशक्तीकरण के संदर्भ में विश्लेषण करता है। जेंडर विश्लेषण को विकास नीति निर्माण प्रक्रिया, परियोजनाओं के नियोजन, उनको लागू करना तथा मूल्यांकन के लिए प्रमुख रूप से प्रयोग किया जा रहा है। अतः ऐसे उद्देश्यों के लिए शोध के इसके अपने तरीके हैं।

विभिन्न संदर्भों और वास्तविकताओं के बावजूद जेंडर निर्माण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और सार्वभौमिक प्रकृति है। महिलाओं की पुरुषों की आधीनता का इतिहास में उद्भव जन्म के समय लड़की पैदा होने तथा भोजन और आश्रम की आधारभूत आवश्यकताओं के पूरा होने पर आधारित है। पुरुषों को लाभ की स्थिति में रखा जाता है और उन्हें श्रेशठतर मानव माना जाता है। इस प्रकार पूरे समाज का निर्माण असमानता के आधार पर होता है जो कई तरह से महिलाओं को बहिष्कृत करता है। सामाजिक बहि कार का यह प्रतिमान महिलाओं को कड़ी मेहनत, मानसिक तनाव तथा अनेक प्रकार की हिंसा जैसे कन्या शिशु हत्या, भ्रूण हत्या, आत्महत्या, दहेज हत्या के रूप में प्रकट होता है।

सामाजिक बहिष्कार स्पष्ट रूप से महिलाओं को समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, राजनीति, विचारधारा, प्रतिकता इत्यादि के सभी क्षेत्रों में आधीनता की स्थिति में रखता है। पुरुष और महिला के बीच जीने की परिस्थितियों, अनुभव, आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के आधार पर अंतर का एक सार्वभौमिक तथ्य है। इसके साथ ही जेंडर निर्माण में जाति, वंश, भौगोलिक परिस्थितियों के आधार पर भी विशेष अंतर होता है। सभी महिलाएं भी समान अथवा समान स्थिति में नहीं है। निम्न जातियों अथवा समुदायों से संबंध रखने वाली महिलाएं समाज द्वारा मान्य सामाजिक सांस्कृतिक हैसियत के आधार पर भिन्न तथा कई प्रकार के बोझ का सामना करती है। जेंडर विश्लेषण जेंडर समानता के उपायों को प्रोत्साहित करता है।

1-5-2 t:Mj fo'y"k.k dk {ks=

कुछ ऐसे पक्ष जिनकी जेंडर विश्लेषण के माध्यम से खोजबीन की जा सकती है।

- उत्पादक अथवा श्रम शक्ति
- पुनरुत्पादन की शक्ति
- लैंगिकता
- गतिशीलता
- सम्पति तथा अन्य आर्थिक संसाधनों तक पहुँच एवं नियंत्रण
- सामाजिक, सांस्कृति, जातीय और राजनीतिक संस्थाएं

1-5-3 tMj fo'y"k.k vkj vrj dh igpku

भारतीय संदर्भ में यह बहुत ही प्रासंगिक है क्योंकि यहाँ अनेक प्रकार के अंतर जाति, वर्ग, समुदायों और सार्वजनिक क्षेत्रों से बाहर जाकर भी हैं। इसलिए जेंडर विश्लेषण के लिए चुने गए समूह से संबंधित समुदाय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखना बहुत जरूरी है। व्यापक रूप से यह माना जाता है कि सभी महिलाएं बराबरी नहीं रखतीं। जेंडर विश्लेषण को भिन्न–भिन्न समुदायों के बीच निर्मित महिलाओं की भूमिका निश्चित करने के तरीकों का ध्यान भी रखना पड़ता है। अंतर–जातीय विवाह, अंतर–जातीय व्यवसाय, अंतर–जातीय सांस्कृतिक समारोह, उच्च जातियों तथा निम्न जातियों के समूहों के बीच संसाधनों तक पहुँच में अंतरों इत्यादि को भी भारतीय वास्तविकता के अंग के रूप में ध्यान में रखना पड़ता है।

1-6 izeq[k fl)kr vkj tMj fo'y"k.k dh ekU;rk,a

जेंडर विश्लेषण के प्रमुख सिद्धांत और धारणाएं जेंडर विश्लेषण को परिभाषित करने वाले प्रमुख सिद्धांतों और धारणाओं में निम्नलिखित को शामिल किया जाता है।

- महिलाओं और पुरुषों के जीवन और इनके कारण अनुभव, आवश्यकताएं, मुद्दे और प्राथमिकताएं भिन्न होती हैं।
- महिलाओं के जीवन एक जैसे नहीं होते, महिलाओं के समान हितों को जितना उनके महिला होने के तथ्य से जाना जा सकता है उतना ही उनकी सामाजिक स्थिति और जातीय पहचान से निर्धारित किया जा सकता है।
- भिन्न–भिन्न जातीय समूहों से संबंधित महिलाओं के जीवन संबंधी अनुभव, आवश्यकताएं, मुद्दे और प्राथमिकताएं भिन्न–भिन्न होती हैं।
- भिन्न समूहों की महिलाओं (आयु, जातीयता, अयोग्यता, आय के सतर, रोजगार के स्तर, वैवाहिक स्थिति, लैंगिक उन्मुखता तथा उन पर निर्भर रहने वाले लोगों के आधार पर बने समूह) के जीवन अनुभव, आवश्यकताएं, मुद्दे और प्राथमिकताएं भिन्न होती हैं।
- महिलाओं और पुरुषों तथा महिलाओं के विभिन्न समूहों के लिए न्यायपूर्ण परिणाम प्राप्त करने के लिए अलग–अलग रणनीतियों की आवश्यकता हो सकती है।

जेंडर विश्लेषण का अर्थ पुरुषों और महिलाओं के बीच संबंधों, संसाधनों तक उनकी पहुँच, उनकी गतिविधियों, तथा एक दूसरे के संबंध में सामना की जाने वाली पाबंदियों को समझने के लिए प्रयोग किए गए विभिन्न तरीकों से होता है। जेंडर विश्लेषण ऐसी जानकारी प्रदान करता है जो जेंडर तथा उसके वंश, जाति, संस्कृति, वर्ग, आयु, अपंगता और अथवा अन्य स्थितियों के साथ संबंध को महिलाओं और पुरुषों की आर्थिक, सामाजिक और कानूनी ढांचों में उनकी सहभागिता, व्यवहार और गतिविधियों के प्रतिमानों को समझने में आवश्यक और महत्वपूर्ण मानता है।

1-7 lkjk'k

जेंडर विश्लेषण सामाजिक, आर्थिक विश्लेषण का एक अनिवार्य तत्व है। एक व्यापक सामाजिक–आर्थिक विश्लेषण जेंडर संबंधों को ध्यान में लाता है क्योंकि सभी सामाजिक आर्थिक संबंधों में जेंडर एक आवश्यक घटक होता है। जेंडर संबंधों के विश्लेषण से

महिलाओं और पुरुषों के सामने की भिन्न परिस्थितियों पर जानकारी प्रदान करता है तथा उन पर उनकी परिस्थितियों के कारण नीतियों एवं कार्यक्रमों के विभिन्न प्रभावों की जानकारी भी देता है। ऐसी जानकारी नीतियों और कार्यक्रमों को बेहतर बनाने तथा महिलाओं एवं पुरुषों की आवश्यकताओं की पूर्ति को सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य है।

स्थानीय स्तर पर जेंडर विश्लेषण महिलाओं, पुरुषों, लड़कों तथा लड़कियों द्वारा परिवार, समुदाय तथा आर्थिक, कानूनी और राजनीतिक ढांचों में उनकी विभिन्न भूमिकाओं को प्रत्यक्ष करता है। जेंडर परिप्रेक्ष्य जिम्मेवारियों और लाभों के वर्तमान विभाजन तथा पुरस्कारों और प्रलोभनों के वितरण पर उसके प्रभाव के कारणों पर ध्यान देता है।

1-8 'kCnkoyh

Androgyny: Greek word from "andro" (male) and "gyn" (female) signifies the fluidity in the assignation of gender-linked characteristics. Feminists have consistently laid claim to androgyny as a potentially liberating concept.

Autonomy: Self determination and independence. It refers to a healthy sense of self direction and self determination that develops a sense of affiliations and connections with others.

Discrimination: The biased treatment of men and women is usually unfavourable to women. This unfavourable treatment usually arises out of patriarchal belief about the supposed inferiority of women.

Matriarchy: A type of society where the women are leaders of the families and may inherit ancestral properties.

Sexism/ Sexes / Patriarchy: An attitude in which one sex denigrates the other. In its early use, this term referred to certain tribes or groups or families or societies characterized by a dominant male ruler or patriarch who assumed control over the group. Today, men look upon Patriarchy as an organized system historically reproduced from generation to generation to maintain the subordination of women and domination of men.

Personal is political: This slogan sums up the way in which male power is exercised and reinforced through "personal" institutions such as marriage, family, child rearing and sexual practices. The social image of a woman is constructed through her roles in the personal sphere.

Sex and Gender: Sex is biological and gender is socially constructed. Sex is anatomical in origin while gender is acquired through a process of sexual differentiation; the biophysical difference. Feminists would argue that upon this natural difference, society has constructed an elaborate structure differences clustered together as "gender" to classify power relations in society.

Sexual Politics: Term coined by Kate Millett who argues that the relationship between men and women are based on power and that unless the clinging to male supremacy as a birthright is finally foregone, all systems of oppressions will continue to function.

Sisterhood: A concept central to women's movement, which places stress on female solidarity and cooperation. The notion of sisterhood conveys the implicit assumption that all women have certain areas of experience in common on which a sense of identification can be found.

Transformatory (or redistributive) Potential: Kate Young (1987) introduced the concept of transformatory potential to complement the concepts of practical needs and strategic gender interests. This is a useful concept to help development planners, or women themselves, to consider how their practical needs can be met in a way which has transformatory potential; that is in a way which will assist women in challenging unequal gender power relations, and contribute to women's empowerment.

Gender blind policies: These recognize no distinction between sexes. They make assumptions, which leads to a bias in favour of existing gender relations. Therefore gender blind policies tend to exclude women.

Gender aware policies: This type of policy recognizes that women are development actors as well as men; that the nature of women's involvement is determined by gender relations which their involvement different, and often unequal; and that consequently women may have different needs, interests, and priorities which may sometimes conflict with those of women. With in this category Naila kabeer further distinguishes between gender-neutral, gender-specific and gender-redistributive policies.

Redlining: Redlining is the practice of denying, or increasing the cost of services to the certain residents. Those areas were marked in redline in the map. The term "redlining" was coined by John McKnight a sociologist and community activist in the year 1960. He belongs to North Western University, North western University. This term was also applied to discriminate particular group based on sex/ race no matter which area they belong to.

Racial Quota: Racial quotas in employment and education are numerical requirements for hiring, promoting, admitting and/or graduating members of a particular racial group. Racial quotas are often established as means of diminishing racial discrimination, addressing under-representation and evident racism against those racial groups. Some individuals consider racial quotas reverse racism, though no record exists of a racial quota system reversing the trend so that the racial group it addresses becomes the majority. Racial quotas are closely linked to notions of group rights, and special rights.

1-9 ckèk iz'uksa ds mÙkj

Ckkèk iz'u 1

1. जेंडर, लिंग, लिंग, जेंडर, जेंडर, जेंडर, लिंग, जेंडर, लिंग, जेंडर, लिंग, लिंग, जेंडर

2. पुरुष और महिलाएं जैविक आधार पर अलग–अलग होती हैं। समाज भी उनके साथ अलग–अलग व्यवहार करता है। ये अंतर उनके कपड़े पहनने के ढंग, उनकी भूमिकाओं तथा उनके व्यवहार से स्पष्ट दिखाई देते हैं। शारीरिक अंतर को 'लिंग'

का नाम दिया जाता है जबकि यह जेंडर के समान नहीं होता। जेंडर सामाजिक निर्माण का परिणाम है। यह समाज द्वारा पुरुषों और महिलाओं के बीच समाज निर्मित अंतरों को परिभाषित एवं वर्णित करने के लिए प्रयोग किया जाने वाला शब्द है। जेंडर शब्द का अर्थ महिलाओं और पुरुषों की समाज द्वारा निर्मित पहचान से है। इसको पुरुषों और महिलाओं के बीच जैविक अंतरों से कुछ अधिक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें वास्तविक अथवा काल्पनिक अंतरों के मूल्यांकन, प्रयोग तथा निर्भरता के आधार पर उनको दी गई भूमिकाओं तथा उनसे अपेक्षा करने के सभी तरीकों को शामिल किया जाता है। इसका महत्व यह है कि महिलाओं और पुरुषों के जीवन और अनुभवा, जिसमें उनके कानूनी व्यवस्था के अनुभव भी शामिल होते हैं, सामाजिक और सांस्कृतिक अपेक्षाओं की जटिल स्थितियों के बीच से निर्मित होते हैं। पुरुष और महिलाएं जैविक आधार पर अलग–अलग होती हैं। समाज भी उनके साथ अलग–अलग व्यवहार करता है। ये अंतर उनके कपड़े पहनने के ढंग, उनकी भूमिकाओं तथा उनके व्यवहार से स्पष्ट दिखाई देते हैं। शारीरिक अंतर को 'लिंग' का नाम दिया जाता है जबकि यह जेंडर के समान नहीं होता। जेंडर सामाजिक निर्माण का परिणाम है। यह समाज द्वारा पुरुषों और महिलाओं के बीच समाज निर्मित अंतरों को परिभाषित एवं वर्णित करने के लिए प्रयोग किया जाने वाला शब्द है। जेंडर शब्द का अर्थ महिलाओं और पुरुषों की समाज द्वारा निर्मित पहचान से है। इसको पुरुषों और महिलाओं के बीच जैविक अंतरों से कुछ अधिक के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें वास्तविक अथवा काल्पनिक अंतरों के मूल्यांकन, प्रयोग तथा निर्भरता के आधार पर उनको दी गई भूमिकाओं तथा उनसे अपेक्षा करने के सभी तरीकों को शामिल किया जाता है। इसका महत्व यह है कि महिलाओं और पुरुषों के जीवन और अनुभवा, जिसमें उनके कानूनी व्यवस्था के अनुभव भी शामिल होते हैं, सामाजिक और सांस्कृतिक अपेक्षाओं की जटिल स्थितियों के बीच से निर्मित होते हैं।

Ckksèk iz'u 2

1. ACER report of PRATHAM and District Statistical Handbook.

1-10 mi;ksxh iqLrdsa

Engendering 11th Five Year Plan- 2007-2012 removing Obstacles, creating opportunities, National Alliance of Women, New Delhi, 2008

Amartya Sen, The Argumentative Indian: Writings in Indian Culture, History and Identity, London:Penguin House, 2005.

C. Moser, "Gender Planning in the Third World: Meeting Practical and Strategic Gender Needs," World Development, 1989, Vol. 17 no. 11.

Indian Council of Social Sciences, Status of Women in India: A Synopsis of the Report of the National Committee on the Status Women (1971-74) New Delhi: Allied Publishers Pvt. Ltd., 1975.

Kate, Young, Gender and Development: A Relational Approach, Oxford: Oxford University Press, 1988.

Maxine Molyneux, "Mobilisation without Emancipation? Women's Interests, the State and Revolution in Nicaragua" Feminist Studies, 1985, Vol. 11 no. 2.

Srilatha Batliwala et al, Status of Rural Women in Karnataka, Bangalore: National Institute of Advanced Studies, 1998.

G.Uma, ''Status of Women in Governance in Tamil Nadu'', IUP Journal of Governance and Public Policy, 1 & 2 (March and June, 2010)

International Women's Rights Action Watch Asia Pacific, Building Capacity for Change: A Training Manual on the Convention on the Elimination of All Forms of Discrimination against Women, 2001.

1-11 ckèk iz'u ¼euu ,oa vH;kl dk fy;s½

1. जेंडर विश्लेषण से क्या अभिप्राय है और यह हमें क्या बताता है?
2. सेक्स (लिंग) क्या है और जेंडर क्या है?
3. क्या समाज में अब भी जेंडर भेदभाव है? यदि हाँ, तो कहाँ और कैसे है?
4. जेंडर समानता और जेंडर न्याय से आप क्या समझते हैं?
5. व्यवहारिक जेंडर आवश्यकताओं तथा रणनीतिक जेंडर आवश्यकताओं के बीच क्या अंतर है?

bdkbZ 2 tsaMj fo'ys"k.k dk egRo

bdkbZ dh :ijs[kk

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 जेंडर विश्लेषण : प्रयोग के स्तर

2.4 जेंडर विश्लेषण के लक्ष्य

2.5 जेंडर विश्लेषण क्यों?

2.6 जेंडर विश्लेषण के आयाम

2.7 सारांश

2.8 शब्दावली

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.10 उपयोगी पुस्तकें

2.11 बोध प्रश्न (अभ्यास एवं मनन हेतु)

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

2-1 izLrkouk

जेंडर विश्लेषण महिलाओं और पुरुषों, लड़कियों और लड़कों की वास्तविकताओं को बेहतर ढंग से समझने का उपकरण (साधन) है जिनके जीवन नियोजित विकास से प्रभावित होते हैं। मुख्य रूप से यह जेंडर की पहचानों और असमानताओं के निर्माण में व्यक्त संस्कृति तथा उसके व्यवहारिक अर्थ को समझने के बारे में है।

इसका उद्देश्य विभिन्न प्रकार के मुद्दों में जेंडर अंतरों की सक्रियता को उजागर करना है। इनमें सामाजिक संबंधों से जुड़े जेंडर के मुद्दे (दिए हुए संदर्भ में पुरुष और महिला को कैसे परिभाषित किया जाता है, उनकी मानक भूमिकाएं, कर्तव्य, जिम्मेदारियाँ) गतिविधियाँ (घरों एवं समुदाय के अंतर्गत उत्पादक एवं पुनरुत्पादक कार्य, प्रजनन, उत्पादक, समुदाय प्रबंधन एवं समुदायिक राजनीतिक भूमिकाएं), संसाधनों तक पहुँच और नियंत्रण, सेवाएं, निर्णय निर्माण की संस्थाएं तथा शक्ति और अधिकार के तंत्र, आवश्यकताएं तथा पुरुष और महिलाओं की दोनों, व्यावहारिक और रणनीतिक आवश्यकताएं (समाज को चुनौती दिए बिना वर्तमान भूमिकाएं, आवश्यकताएं जिनके पूरा होने पर समाज में उनकी स्थिति बदल जाएगी) शामिल होते हैं।

2-2 mn~ns';

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- वर्णन कर सकेंगे कि जेंडर विश्लेषण को विभिन्न स्तरों पर कैसे प्रयोग किया जा सकता है;
- जेंडर विश्लेषण के लक्ष्यों का विश्लेषण कर सकेंगे; और
- विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों में जेंडर के प्रभाव की व्याख्या कर सकेंगे।

2-3 t:Mj fo'y:"k.k % i:;kx d: Lrj

जेंडर विश्लेषण को महिलाओं और पुरुषों, लड़कियों और लड़कों पर विभेदकारी प्रभाव की आपस में जुड़ी विभिन्न प्रकार की प्रक्रियाओं की जानकारी देने के लिए विभिन्न स्तरों पर प्रयोग किया जा सकता है।

lk;kx dk Lrj ikIr tkudkjh

jk"Vªh;	भागीदारी देशों के राष्ट्रीय नीति फ्रेमवर्क जिसमें राष्ट्रीय विकास रणनीतियाँ और/अथवा गरीबी घटाने की रणनीतियाँ, मैक्रो नीतियाँ, सरकारी खर्च के कार्यक्रम/बजट, कानून, नियम और विधियाँ शामिल होती हैं।
{k=h;	क्षेत्रीय नीतियाँ, रणनीतियाँ और क्रियानवयन कार्यक्रम तथा क्रियात्मक दिशा निर्देश।
mi&jk"Vªh;	प्रांतीय अथवा जिला विकास योजनाएं, नीतियाँ, रणनीतियाँ, बजट, कानून, नियम और विधियाँ।
fodkl dk;ZØe vkj ifj;kstuk,a	सामुदायिक विकास योजनाएं, कार्यक्रम और गतिविधियाँ तथा दान संचालित विकास कार्यक्रमों और परियोजनाओं की पहचान, रूपरेखा और आकलन।

जेंडर विश्लेषण निम्नलिखित को दर्शाता है –

- महिलाओं, पुरुषों, लड़कियों और लड़कों की विभिन्न आवश्यकताओं, प्राथमिकताओं, क्षमताओं, अनुभवों, रूचियों और विचारों को;
- संसाधनों, अवसरों और सत्ता तक किसकी पहुँच और नियंत्रण है;
- कौन–क्या, क्यों और कब करता है?
- नये प्रयासों से किस को लाभ होने और अथवा किस को हानि हो सकती है?
- सामाजिक संबंधों में जेंडर अंतर;
- महिलाओं, पुरुषों, लड़कियों और लड़कों के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और कानूनी संस्थाओं में हिस्सेदारी के स्तर और अलग–अलग प्रतिरूप;
- महिलाओं और पुरुषों का जीवन एक सा नहीं होता – इनमें सेक्स के अतिरिक्त आयु, जातीयता, वंश और आर्थिक हैसियत से भी अंतर होता है;
- हमारी वास्तविकताओं, लिंग (सेक्स) और जेंडर भूमिकाओं पर आधारित मान्यताएं।

जेंडर विश्लेषण हमें यह समझने में सहायता करता है कि पुरुषों और महिलाओं के बीच कानूनी अधिकारों, व्यक्तिगत विकास के अवसरों, उत्पादक संसाधनों तक पहुँच, राजनीतिक प्रतिभागिता इत्यादि से संबंधित कहाँ और किस प्रकार की असमानता और अन्याय हो सकता है। हमेशा तो नहीं परंतु प्रायः महिलाएं हीन अवस्था में होती हैं क्योंकि अधिकांश

समाज पुरुष प्रधान हैं तथा पैतृक ढांचे पर आधारित हैं। इन प्रचलित अलाभकारी स्थितियों के कारण महिलाओं और पुरुषों को सेवाओं तक की समान पहुँच उपलब्ध करवाना ही प्रयाप्त नहीं है। अति अलाभकारी स्थिति में फंसे समूहों को सुविधा देने के लिए विशेष स्थितियाँ निर्मित करना आवश्यक है ताकि जेंडर गैप को भरा जा सके। इन जेंडर गैपों (दूरियों–अंतरों) को भरने के लिए जेंडर विश्लेषण का विशेष महत्व है।

परंपरा रही है कि जेंडर विश्लेषण को विकास के संदर्भ में ही प्रयोग किया जाता रहा है। यद्यपि प्रथा अवसर से इंकार की रही है परंतु आधुनिकता अपने लिए तथा संस्थाओं के लिए ऐसे विश्लेषण का प्रावधान प्रदान करती है। आधुनिकता में शिक्षा और लोकतंत्र प्राथमिक है जो वांछित परिणामों को प्राप्त करने के तरकों को प्रदान करने के लिए जेंडर विश्लेषण की आवश्यकता को स्वीकार करते हैं।

जेंडर विश्लेषण ऐसे जेंडर अंतरों और असमानताओं की पहचान करता है जिन्हें अन्यथा प्राकृतिक अथवा भगवान का दिया हुआ माना जाता है जैसे पुरुषों और महिलाओं की संस्थाओं तक पहुँच एवं नियंत्रण; विभिन्न भूमिकाओं को अदा करने, भिन्न पाबंदियों का सामना करने तथा भिन्न लाभों को प्राप्त करने में दोनों के बीच अंतर हैं। ऐसे मामले में महिलाएं किसी भी संदर्भ में पुरुषों के मुकाबले आधीनता की स्थिति में हैं। एक बार इस स्थिति को पहचान कर उजागर करने के बाद समस्याओं को ध्यान से बनाई गई नीतियों और कार्यक्रमों के माध्यम से हल अथवा कम किया जा सकता है।

आपदा प्रबंधन कार्यक्रमों में जेंडर विश्लेषण के महत्व का उदाहरण प्रस्तुत करता है। बाक्स 2.2 सी.ई.डी.ए.डब्ल्यू तथा आपदा में महिलाओं के मानवाधिकारों का ब्यौरा प्रदान करता है।

ckDl 2-1 % vkink izcèku dk;ZØeksa esa tsMj fo'y"k.k

आपदा प्रबंधन जैसे कार्यक्रम में जेंडर विश्लेषण का महव दर्शाने का एक उदाहरण निम्नलिखित है।

गत वर्षों में प्राकृतिक विपदाओं से उत्पन्न आपदाओं का मुकाबला करने के संबंध में लोगों के दृष्टिकोण में प्रमुख सैद्धांतिक परिवर्तन हुआ है। मानवीय सहायता की क्षमता अनिवार्य और महत्वपूर्ण है तथा मानवीय हस्तक्षेप को इस प्रकार तैयार करने की आव कयता है कि समुदायों और सम्पति की असुरक्षा को कम किया जा सके जिससे आपदा का दुश्प्रभाव कम हो। धीरे–धीरे पर्यावरण और विकास के प्रति सचेत लोग प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन के साथ निकट संबंध होने के कारण खतरे और असुरक्षा को कम करने में अधिक से अधिक शामिल हो रहे हैं।

महिलाओं पर चौथे विश्व सम्मेलन (1995) के अवसर पर कार्रवाई हेतु बीजिंग मंच ने माना कि महिलाएं पर्यावरणीय आपदाओं, बीमारियों और हिंसा से विशेष रूप से प्रभावित होती हैं। इसने सरकारों से निवेदन किया कि वे महिलाओं और विशेष रूप से ग्रामीण एवं स्थानीय महिलाओं की भोजन संग्रहण एवं उत्पादन, मृदा संरक्षण, सिंचाई, जल विभाजक प्रबंधन, सफाई, तटीय क्षेत्र और सागरीय संसाधन प्रबंधन, एकीकृत पीड़क जीव प्रबंधन, भूमि प्रयोग के नियोजन, वन संरक्षण एवं सामुदायिक वनीकरण, मछली पालन, प्राकृतिक आपदा रोकने, नई तथा नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्रों में देसी ज्ञान एवं अनुभव पर ध्यान केंद्रित करते हुए ज्ञान एवं शोध कार्य को प्रोत्साहित करें।

बीजिंग + 5 ने पांच वर्ई बाद 2000 में कार्रवाई के लिए बने बीजिंग मंच ने पुनरावलोकन और मूल्यांकन में पाया कि प्राकृतिक आपदाएं और महामारियाँ नये

मुद्दों के रूप में उभर रहीं हैं जिन पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है। यह नोट किया गया कि प्राकृतिक आपदाओं और महामारियों के सामाजिक और आर्थिक प्रभाव, विशेष रूप से महिलाओं की स्थिति और जेंडर समानता को प्राप्त करने पर हुए प्रभाव नीतिगत मुद्दे के रूप अपेक्षाकृत न के बराबर दिखाई दिए। अफ्रीका और एशिया में कई देशों ने गरीबी के महिलाकरण का उदाहरण दिया है। जो प्रायः प्राकृतिक आपदाओं, एवं फसल न होने के कारण और अधिक खराब स्थिति में पहुँच जाती है और जेंडर समानता के रास्ते में बाधा बनती है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा क 23वें विशेष अधिवेशन में ''महिलाएं –2000 21वीं सदी के लिए जेंडर समानता, विकास और शांति'' शीर्षक के अंतर्गत यह स्वीकार किया गया कि प्राकृतिक आपदाओं के कारण होने वाली मौतों और क्षति में वृद्धि हुई है तथा जेंडर परिप्रेक्ष्य में ऐसी संकटकालीन स्थितियों से निपटने के लिए वर्तमान उपागमों एवं हस्तक्षेप के तरीकों की कमी एवं अक्षमताओं के प्रति जागरूकता को बढ़ाया। यह सुझाव दिया गया कि आपदा रोकने, कम करने तथा आपदा से उबरने की रणनीतियों में जेंडर परिप्रेक्ष्य को शामिल किया जाए। इस विशेष अधिवेशन ने यह सिफारिश भी की कि संयुक्त राष्ट्र व्यवस्था तथा अंतरराष्ट्रीय संगठनों को प्राकृतिक आपदाओं से उपजे मानवीय संकटों से निपटने के लिए सहायता प्रदान करने में जेंडर संवेदनशील रणनीतियाँ विकसित करनी चाहिए।

ckDl 2-2 ¼ lhbMh,MCY;w vkj ikdfrd vkinkvksa ds nkSjku efgykvksa ds vf/kdkjksa dh j{kk.k bl ds iHkko

महिलाओं के विरुद्ध सब प्रकार के भेदभाव के उन्मूलन पर हुए अधिवेशन के अनेक अनुच्छेद प्राकृतिक आपदाओं के दौरान महिलाओं के मानवाधिकारों के उल्लंघन की छान–बीन करते हैं। कमेटी ने कई देशों से पर्यावरण और प्राकृतिक आपदाओं पर अधिक ध्यान देने का आग्रह किया है। इसने बताया कि प्राकृतिक आपदाओं के पक्ष महिलाओं को उनके अधिकारों का पूरा आनन्द लेने से रोकते हैं। पर्यावरण निम्नीकरण भी पूरी आबादी तथा विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य पर बहुत ही नकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

संयुक्त राष्ट्र के महिलाओं की स्थिति पर बने आयोग ने अपने 2002–06 के लिए काम के कार्यक्रम में पर्यावरण प्रबंधन तथा प्राकृतिक आपदाओं को कम करने पर जेंडर परिप्रेक्ष्य में विचार किया/संयुक्त राष्ट्र के डिवीज़न ने महिलाओं की उन्नति पर आपदा न्यूनीकरण सचिवालय के लिए अंतरराष्ट्रीय रणनीति के साथ मिल कर महिलाओं की उन्नति के लिए एक विशेषज्ञ समूह का गठन किया। विशेषज्ञ समूह की बैठक में जेंडर तथा पर्यावरण प्रबंधन के बीच जुड़ाव का गहराई से अध्ययन किया और इस मुद्दे को पूरी तरह से महिलाओं के अधिकारों को केंद्र में रख कर हल करने के प्रति अपनी चिंता भी व्यक्त की।

संयुक्त राष्ट्र का आपदा के खतरे को कम करने वाला ढांचा खतरे के कारणों का विश्लेषण करने पर बल देता है जिसमें भौमिकी, वर्षा एवं मौसम संबंधी, जैविक तथा प्रौद्योगिकी से संबंधित खतरे शामिल हैं तथा ऐसे खतरों को कम करने के लिए संस्थागत ढांचे, नीतियों, कानूनों और आचार संहिता के प्रति प्रतिबद्धता द्वारा एक मानीटरिंग का तरीका तैयार करना भी शामिल है।

पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में 'भूमि प्रयोग नियोजन' पर्यावरण एवं आजीविका को टिकाऊ बनाए रखने के लिए सरकार द्वारा उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। संयुक्त राष्ट्र का यह ढांचा इसके कारणों तथा किसी विशेष परिस्थिति में

भिन्न–भिन्न कार्यकर्ताओं तथा लागू करने वाली संस्थाओं के प्रत्युतरों का वर्णन करता है। यद्यपि निर्णय निर्माण की प्रक्रिया तथा आपदा प्रबंधन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए इस ढांचे पर गहन सोच विचार करने की आवश्यकता है।

क्रियाकलाप 1 : पिछली किसी प्राकृतिक आपदा के साथ जेंडर विश्लेषण को जोड़कर भिन्न स्तरों जैसे आधारभूत, क्षेत्रीय, राज्य, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर नियोजन, क्रियान्वयन, मानीटरिंग और पूरे कार्यक्रम के मूल्यांकन के महत्व को समझने की कोशिश कीजिए।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) प्रश्नों के उत्तर नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ii) अपने उत्तर की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. जेंडर विश्लेषण का भिन्न–भिन्न स्तरों पर प्रयोग कैसे किया जाता है? स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

2. सीईडीएडब्ल्यू को परिभाषित कीजिए।

....

....

....

2.4 जेंडर विश्लेषण का लक्ष्य

जेंडर विश्लेषण इस बात को मानता है कि पुरुष और स्त्रियों के बीच अंतर अनेक कारकों से प्रभावित होते हैं जैसे वर्ग, सामाजिक–आर्थिक हैसियत, लैंगिक अनुकूलन, जेंडर पहचान, वंश, जाति, भौगोलिक स्थिति, शिक्षा तथा शारीरिक एवं दिमागी योग्यता इत्यादि।

जेंडर विश्लेषण महिलाओं और पुरुषों द्वारा निभाई गई भूमिकाओं, उनके द्वारा सत्ता पर कब्जे के विभिन्न स्तरों, उनकी अलग–अलग जरूरतों, पाबंदियों तथा अवसरों का उनके जीवनों पर इनसे होने वाले भिन्न–भिन्न प्रभावों का परीक्षण करने का एक साधन अथवा उपकरण है।

जेंडर विश्लेषण के मुख्य लक्ष्य अद्योलिखित हैं।

1. अपने समुदायों को बेहतर ढंग से समझना : जेंडर विश्लेषण एक ऐसा लेंस प्रदान करता है जिससे हम अपने समुदाय का परीक्षण करते हैं।

2. अपने कार्यों द्वारा जेंडर समानता को बढ़ावा देना : जेंडर विश्लेषण हमें गरीबी कम करने के कार्यों में सहायता देता है जिससे जेंडर समानता के लिए वातावरण बनता है।

सारांश में हम कह सकते हैं कि जेंडर विश्लेषण जरूरतों को समझने, भागीदारी में पाबंदियों एवं कठिनाइयों को जानने, भाग लेने की योग्यता तथा भागीदारी से होने वाले लाभों को जेंडर परिप्रेक्ष्य से देखने पर बेहतर ढंग से समझ सकने में मदद मिलती है।

गुणात्मक और संख्यात्मक जेंडर विश्लेषण तार्किक शोध का जेंडर मुद्दों पर जागरूकता पैदा करने, नीति निर्माताओं को सूचित करने, जेंडर प्रशिक्षण के लिए सामग्री प्रदान करने और पुरुषों एवं महिलाओं के लिए निर्मित नीतियों, परियोजनाओं एवं बजट वचनबद्धता के प्रभावों को मानीटर करने के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है।

fØ;kdyki 1

भारतीय संदर्भ में आमतौर पर महिलाएं परिवार में आजीविका पैदा करने वाली होती हैं परंतु उन्हें दूसरे दर्जे का मजदूर माना जाता है। अधिकांश बार जब कार्य एक घरेलू संयुक्त उद्यम जैसे खेती होती है, तब महिलाओं के योगदान को केवल 'सहायता' माना जाता है। आइए, हम सहायक और सहायता प्राप्त करने वालों के बीच के संबंधों की सामाजिक जेंडर संबंधों के संकेतक के रूप में छानबीन करें। प्रायः जो भी सहायता प्राप्त करता है अथवा जिसकी सहायता की जाती है, उसके साथ समझौता किया जा सकता है और उसे मानसिक एवं वैचारिक दृष्टि से सहायता करने वाले पर निर्भर होना पड़ता है परंतु फिर भी वह सहायक ही कहलाता है। इसका श्रम विभाजन पर प्रभाव हो सकता है क्योंकि प्रायः सहायता के रूप में किए जाने वाले कार्य को मान्यता नहीं मिलती।

कृषक समुदायों में महिलाएं पशुओं को पानी पिलाने, नये और छोटे पशुओं की देखभाल करने तथा उत्पादन का रख–रखाव एवं प्रयोग करने के माध्यम से परिवार की सहायता करती है। प्रायः महिलाओं द्वारा घर पर किए गए पूरे कार्य को मान्यता नहीं दी जाती और उसके बदले कोई इनाम अथवा सुविधा नहीं दी जाती। पुरुषों की गतिविधियों को दूसरे तरीके से माना जाता है। अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने की कोशिश कीजिए :

- सहायता को कैसे परिभाषित किया जाता है?
- सहायता कौन करता है?
- सहायता के क्या रूप हैं?
- सहायता कौन मांगता है?
- सहायता कौन देता है?
- कब किसी की सहायता की जाती है?

इसका अभिप्राय है कि व्यक्ति को स्पष्ट होना चाहिए कि सहायता किसे कहते हैं? कुछ प्रकार की सहायता को उसको इनाम मिलता है। इस प्रकार एवं रूप की सहायता के इनाम पर ब्यौरा दिए हुए संदर्भों में सामाजिक जेंडर संबंधों को समझने के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

2-5 t:Mj fo'y"k.k D;k\

जेंडर विश्लेषण सभी स्तरों पर अर्थात् राष्ट्रीय कानून और नीति निर्माण से लेकर नियोजन एवं विशेष हस्तक्षेप की मानीटरिंग तक, जेंडर को मुख्यधारा में लाने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करता है। आइए हम आजीविका नियोजन हस्तक्षेपों का उदाहरण लें। जेंडर विश्लेषण से प्राप्त जानकारी निम्नलिखित को समझने में उपयोगी होगी।

t:Mj fo'y"k.k %
,d ifjp;

vko';drk

पुरुषों और महिलाओं की विभिन्न आवश्यकताओं की पहचान करना जो उन्हें टिकाऊ आजीविका रणनीति बनाने में सहायता करेंगी।

Hkkxhnkjh e: dfBukb;k ¼ikcfn;k½

पुरुषों और महिलाओं की विभिन्न जिम्मेदारियों को उजागर करना जो आजीविका परियोजना में उनकी भागीदारी पर पाबंदी लगा सकती हैं।

Hkkxhnkjh djus dh ;kX;rk

विभिन्न दावेदारों की किसी हस्तक्षेप विशेष में भागीदारी की क्षमता को समझना अर्थात् शिक्षा एवं स्वायतता के विभेदी स्तर।

Hkkxhnkjh d: fHkUu&fHkUu ykHk

विशेष आजीविका हस्तक्षेपों से पुरुषों और महिलाओं को लाभ पहुँचाने अथवा नहीं पहुँचाने के विभिन्न तरीकों को पहचानना।

गुणात्मक और संख्यात्मक जेंडर विश्लेषणात्मक शोध को जेंडर मामलों में जागरूकता पैदा करने, नीति निर्माताओं को सूचित करने अर्थात् जानकारी देने, जेंडर प्रशिक्षण के लिए सामग्री प्रदान करने तथा नीति, परियोजना एवं महिलाओं और पुरुषों के लिए बजट निश्चित करने के विभेदकारी प्रभाव को मानीटर करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

2-6 t:Mj fo'y"k.k d: vk;ke

प्रमुख विकास क्षेत्रों जैसे कृषि और विज्ञान के चुने हुए जेंडर आयाम जेंडर के गहर विश्लेषण के संभावित क्षेत्रों को उजागर करते हैं। इसी प्रकार अन्य क्षेत्रों के लिए भी जेंडर के पक्षों अथवा आयामों की पहचान की जा सकती है।

t:Mj vkj df'k

महिलाएं कृषि उत्पादन तथा खाद्य और पोषण सुरक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। फिर भी उन्हें पुरुषों के मुकाबले उत्पादन की संपत्तियों जैसे भूमि और सेवाओं जैसे वित्त और विस्तार में कम पहुँच प्राप्त होती है। कृषि सहकारिता अथवा जल प्रयोग करने वाली समितियों के सदस्य के रूप में सामूहिक कार्रवाइयों में उनके भाग लेने पर अनेक पाबंदियाँ होती हैं। केंद्रित और विकेन्द्रित–दोनों शासन पद्धतियों में उनकी राजनीतिक आवाज कम ही होती है। जेंडर असमानता का परिणाम है खाद्यानों का कम पैदा होना, कम आय अर्जित होना, गरीबी और खाद्य असुरक्षा का स्तर ऊँचा होता। कम आय वाले विकासशील देशों में कृषि एक ऐसा क्षेत्र है जिसका गरीबी कम करने के संदर्भ में अत्याधिक प्रभाव है। कृषि के विकास हेतु इस क्षमता को पूरा करने के लिए जेंडर असमानताओं के मामलों को हल करके प्रभावशाली ढंग से कम करना चाहिए।

t:Mj vkj [kk| lqj{kk

खाद्य सुरक्षा टिकाऊ कृषि विकास का प्राथमिक लक्ष्य है तथा यह आर्थिक और सामाजिक विकास की नींव का पत्थर है। भोजन की बढ़ती कीमतें कृषि विकास के केन्द्रीय लक्ष्य के रूप में खाद्य सुरक्षा पर ठीक ढंग से ध्यान देने के लिए पुनः स्मरण कराती हैं। खाद्य सुरक्षा तभी वास्तविकता हो सकती है जब कृषि क्षेत्र में तेजी हो।

सक्रिय और तेज कृषि क्षेत्र के उत्पादों को खाद्य और पोषण सुरक्षों में बदलने में महिलाएं अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। हालांकि उनकी पुरुषों के मुकाबले उत्पादन के संसाधनों तथा

आर्थिक अवसरों तक पहुँच बहुत कम है। खाद्यान्न उत्पादन की श्रृंखला में जेंडर आधारित असमानताओं को अवश्य हटा देना चाहिए। खाद्य और पोषण सुरक्षा प्राप्त करने के लिए निर्णय निर्माण के सभी स्तरों पर महिलाओं की सक्रिय भागीदारी अत्याव यक है।

tsMj vkSj df"k vkèkkfjr vkthfodk% 'kklu dk etcwr djuk

गरीबी दूर करने तथा विकास को बढ़ावा देने के लिए सुशासन कदाचित अनेला महत्वपूर्ण कारण है। कृषि में सुशासन के प्रमुख तत्वों में कृषि नीतियाँ और नियम, कृषि सेवाएं और कृषि तंत्र में कार्य कुशलता तथा न्याय, भ्रष्टाचार कम करना, न्याय तथा अधिकारों को लागू करने तक की पहुँच को शामिल किया जाता है।

निजी क्षेत्र तथा कई कृषि संस्थानों में गत सुधारों के बावजूद ग्रामीण क्षेत्रों में जवाबदेही के प्रति बढ़ती मांग लोकतांत्रिक देशों में भी एक चुनौती बनी हुई है। ग्रामीण महिलाएं अपनी आवाज सुना पाने में विशेष बाधाओं का सामना करती हैं। अतः सुधारों को जेंडर मुद्दों पर ध्यान देना चाहिए और ऐसे सुधार जेंडर संवेदनशीलता के साथ लागू किए जाने चाहिए। शासन संबंधी सुधार जेंडर संवेदनशील होते हैं यदि वे जेंडर अंतरों के प्रति संवेदनशील, जेंडर पर आधारित, महिला सशक्तीकरण और सुधारात्मक हों।

tsMj vkSj xzkeh.k foÙk

अच्छी वित्तीय सेवाओं तक पहुँच पाना गरीब परिवारों की सम्पतियाँ निर्मित करने, बाजार में प्रभावशाली ढंग से भागीदारी करने और संकटों से असुरक्षा को कम करने में सहायता कर सकता हैं। 1990 के दशक से शुरू हुए सूक्ष्म वित्तीय कार्यक्रम अधिकतर महिलान्मुख थे क्योंकि महिलाओं की ऋण लौटाने की दर पुरुषों की तुलना में ऊँची थी तथा महिलाओं के लिए दान दाताओं की सहायता से चलने वाले सूक्ष्म वित्तीय कार्यक्रम उत्पादन में महिलाओं की भूमिका बढ़ाने की प्रभावशाली रणनीति भी थी। हालांकि वित्तीय सेवाओं तक ग्रामीण महिलाओं की पहुँच पूरी तरह से सूक्ष्म वित्त पर निर्भर थी। महिलाओं को प्रायः एक ही काम के लिए पुरुषों से कम ऋण प्राप्त होता है तथा बड़े ऋणों को वित्त प्रदान करने वाले कार्यक्रमों में उनका प्रतिनिधित्व नही ंके बराबर होता है। बड़े ऋणों तक पहुँच न होने के कारण प्रायः उनका व्यापार असफल हो जाता है क्योंकि वे घटिया उपकरण अथवा सामग्री खरीदने के लिए विवश होती हैं। महिलाओं की ऋण संबंधी आवश्यकताएं छोटे समूह ऋणों पर प्रारंभिक ध्यान देने से कहीं अधिक विविध हैं। महिलाओं को संपतियाँ बनाने तथा उत्पादक एवं सार्थक गतिविधियों में निवेश करने के लिए लम्बी अवधि के अधिक राशि वाले ऋणों की जरूरत होती है।

कृषि के विकास तथा मूल्य श्रृंखला में वृद्धि के लिए बड़े दर्जे के ग्रामीण वित्त और लीज़ कार्यक्रमों सहित पूरे वित्त क्षेत्र में जेंडर और महिला सशक्तीकरण को मुख्य धारा में लाना आवश्यक है। इससे न केवल महिलाओं को ही लाभ होगा अपितु वित्तीय सेवाओं के स्थायित्व और सामान्य रूप से ग्रामीण अर्थव्यवस्था की गतिशीलता में भी सुधार होगा।

Hkwfe uhfr;ka vkSj iz'kklu esa tsMj eqís

शहरी और ग्रामीण गरीबों के लिए भूमि एक बड़ी सम्पति है। भूमि अधिकार प्रमुख बाजारों तथा गैर बाजारी संस्थानों जैसे कि घरेलू संबंधों, और समुदाय स्तर के शासकीय ढांचों तक सामाजिक पहुँच का काम करते हैं तथा अन्य स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों जैसे वृक्षों, चरागाहों और पानी पर भी अधिकार प्रदान करते हैं।

पुरुषों के अधिकार में भूमि औसतन महिलाओं के अधिकार में भूमि से तीन गुणा थी। भूमि तक इस प्रकार की पहुँच के कारण महिलाओं को फसलों के चयन पर आधे अधूरे फैसले करने पड़ते हैं और कम उत्पादन प्राप्त होता है जो कि अन्यथा अच्छा हो सकता है यदि उन्हें घरेलू संसाधन अच्छे ढंग से प्रदान किए जाएं।

tMj fo'y"k.k %
,d ifjp;

भूमि प्रशासन के अंतर्गत आधारभूत जेंडर नीति को महिलाओं की भूमि तथा अनय प्राकृतिक संसाधनों तक। पुरुष रिश्तेदारों तथा उनकी सामाजिक हैसियत से स्वतंत्र सुरक्षित पहुँच को बढ़ावा देना चाहिए। कानूनी सुधारों को बहुत प्रकार से प्रयोग करने के भूमि अधिकारों, विशेषतः महिलाओं के अधिकारों तथा तलाक अथवा अन्य प्रकार से विरासत की व्यवस्था द्वारा महिलाओं की भूमि तक पहुँच के अधिकारों को ध्यान में रखना चाहिए।

tMj vkj df"k cktkj

श्रम के पारंपरिक जेंडर विभाजन के कारण महिलाएं प्रायः अपने घर की खपत के लिए जीविका फसलों का उत्पादन करने तक सीमित रहती हैं। वाणिज्यिक उत्पादन को पुरुषों का क्षेत्र मानने वाली नीतियाँ और हस्तक्षेप महिलाओं के उत्पादन करने की अपार शक्ति और क्षमता के अवसरों का लाभ उठाने में चूक जाती हैं जिसका आगे चलकर घरेलू खाद्य सुरक्षा और कल्याण पर प्रभाव पड़ता है। अध्ययनों से ऐसे संकेत मिलते हें कि महिलाओं की आय और संसाधनों में बढ़ोतरी से शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण पर काफी प्रभाव पड़ता है और परिवार के कल्याण हेतु किया जाने वाला निवेश भी बढ़ता है।

महिलाओं को संरचनात्मक सेवाओं, सूचनाओं, ऋण तथा अन्य व्यापार विकास की सेवाओं तक पहुँच पाने की जरूरत होती है ताकि वे बाज़ार के नये अवसरों के साथ–साथ बदलती अथवा उभरती मूल्य श्रृंखला का लाभ उठा सकें। अधिकारों और सेवाओं तक पहुँच को बेहतर बनाने के लिए महिला समूहों का निर्माण सामाजिक और आर्थिक सशक्तीकरण का एक सुस्थापित तरीका है जिनमें सदस्य सामूहिक रूप से उत्पादकता और आय को बढ़ाते हैं। आर्थिक संगठनों में महिलाओं को सक्रिय सदस्य बनाए रखने तथा निर्णय निर्माण एवं नेतृत्व में महिलाओं द्वारा महत्वपूर्ण पदों को प्राप्त करना सुनिश्चित करने के लिए क्षमता निर्माण की आवश्यकता होती है। आय पैदा करने वाली महत्वपूर्ण संपतियों पर महिलाओं का नियंत्रण बनाए रखने के लिए प्रायः विशेष नीतियों और प्रावधानों की जरूरत होती है।

df"k ty izcèku esa tMj dk e[;èkkjk esa ykuk

कृषि जल प्रबंधन में सिंचाई और जल निश्कासन, वर्शा आधारित कृषि में जल प्रबंधन, पुनर्चक्रित जल का पुनर्पयोग, जल और भूमि का संरक्षण और जल विभाजकों के प्रबंधन को शामिल किया जाता है। कृषि जल प्रबंधन खाद्य सुरक्षा के लिए अनिवार्य है लेकिन यह ग्रामीण क्षेत्रों में मानव पूंजी निर्मित करने में भी मौलिक भूमिका निभाता है।

अनेक देशों में जल के अधिकार सीधे भूमि अधिकारों से संबंधित होते हैं। क्योंकि औपचारिक जल प्रयोग करने वाली समितियों में उनकी भागीदारी तथा प्रतिनिधित्व प्रायः बहुत कम होता है इसलिए इस परिदृश्य का उनकी उत्पादकता एवं उत्पादक के रूप में उनकी राय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। भूमि एवं अन्य संपति तक पहुँच में वास्तविक और कानूनी सुख को सुनिश्चित करना आवश्यक और महत्वपूर्ण है। महिला कृषकों को भूमि और जल प्रबंधन कार्यक्रमों के नियोजन एवं लागू करने में सक्रिय रूप से शामिल किया जाता है? भूमिगत पानी का अनियमित प्रयोग एक अन्य महत्वपूर्ण कृषि जी प्रबंधन है। इससे जलाशयों का अतिरिक्त दोहन हुआ जिससे पीने के मीठे पानी की कमी हुई तथा लोगों के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव हुआ। कृषि जल प्रबंधन में पानी की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है। बहुउद्देशीय प्रयोगों के लिए नियोजन परियोजनाओं में गैर कृषि प्रयोग और विशेष रूप से महिलाओं की जरूरत पर गहन खोजन करने की आवश्यकता है। महिलाओं और पुरुषों की जल की बहुमुखी

आवश्यकताओं को प्रारंभिक बिंदु लेकर तथा पानी के बहुल स्रोतों का एकीकृत ढंग से आकलन करके बहु प्रकार की जल सेवाओं के प्रयोग से भलाई (कल्याण) की विस्तृत श्रृंखला को प्राप्त किया जाता है, इससे परियोजना का जीवन बढ़ता है, देने की इच्छा और क्षमता बढ़ती है और एक न्यायपूर्ण जल प्रबंधन स्थापित होता है।

df"k dh uohurk vkj f'k{kk esa tsMj

पुरुषों की तुलना में महिलाएं उच्च शिक्षा में वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों तथा नीति निर्माताओं में कम प्रतिनिधित्व प्राप्त कर पाती है यद्यपि विगत वर्षों में इस दिशा में कुछ प्रयास किए गए हैं। महिलाओं को सूचनाएं प्राप्त करने, विस्तार करने, परामर्शक सेवाएं और शिक्षा प्राप्त करने के साथ भूमि और प्रौद्योगिकी को प्राप्त करने अथवा उसका स्वामित्व पाने में पुरुषों के मुकाबले अधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है। अधिकांश महिलाएं आज भी पारम्परिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रही हैं जिसमें अधिक श्रम, समय और ऊर्जा खर्च होती है। प्रौन्नत प्रौद्योगिकी को अधिकांश पुरुषों के कार्यों के संबंध में अपनाया गया है जिसका प्रायः नकारात्मक परिणाम हुआ है।

यदि कृषि विज्ञान कृषि विकास की ओर ले जाने की आशा करता है तो उसे शोध, विस्तार और शिक्षा व्यवस्था में महिलाओं को लगाना चाहिए जो सीमित संसाधन वाले कृषकों, लघु स्तर की खाद्य संसाधकों, अनेक स्थानीय व्यापारियों के आधे से भी अधिक हैं। कृषि नीतियों को नवीनीकरण के सिस्टमों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना चाहिए और महिला समूहों तथा उनसे संबंधित तंत्रों को प्रतिस्पर्धात्मक, प्रत्यक्ष एवं मान्य बनाने के लिए बल प्रदान करना चाहिए। महिलाओं को व्यापक रूप से कार्यरत करने एवं नवीनीकरण सिस्टमों को रूप देने में महत्वपूर्ण भाग लेने हेतु उनकी शक्ति को मुक्त करने के लिए नई और पुनर्बलित प्रौद्योगिकी और प्रबंधन क्रियाओं के साथ–साथ सामाजिक और सांगठनिक नवीनीकरण की जरूरत होती है। महिलाओं के संदर्भ में निम्नलिखित आंकड़े कृषि विज्ञान में उच्च शिक्षा शोध के क्षेत्र में जेंडर असमानता को प्रकट करते हैं। कृषि विज्ञान और प्रौद्योगिकी सूचकांकों (ए.एस.टी.आई.) के प्रयास ने कम से कम कृषि के क्षेत्र में इस खालीपन को भरने के लिए अपने आंकड़े संग्रहित करने की सकल प्रक्रिया के एक भाग के रूप में कृषि शोध और विकास, निवेश और क्षमता संबंधी आंकड़ों को एकत्र किया है। ये आंकड़े परिणामों की एक प्रारम्भिक झलक प्रस्तुत करते हैं जो 67 देशों के आंकड़ों पर आधारित है। वर्तमान में विकासशील देशों में कृषि पर शोध करने वाले पाँच वैज्ञानिकों में केवल एक महिला है। विभिन्न क्षेत्रों के बीच महिला वैज्ञानिकों की औसत हिस्सेदारी मिडिल ईस्ट और उत्तर अफ्रीका के लिए 2001–03 में 17% के लगभग, 2002–03 के लिए प्रशांत एशिया में 20% तक, लैटिन अमेरिका और कैरिबियाई क्षेत्र में 1996 से वर्तमान वर्ष तक के प्रासंगिक आंकड़े उपलब्ध हैं।

{ks=	ch-,l-lh	,e-,l-lh	ih,p-Mh	dqy ;ksx
अफ्रीका का उप सहारा क्षेत्र (27)	23.1	18.8	13.5	18.4
प्रशांत एशिया (12)	31.1	19.3	14.7	20.3
मध्य पूर्व और उत्तर अफ्रीका (5)	24.7	14.2	8.5	16.9
आंशिक योग	28.2	18.4	13.8	19.4
लैटिन अमेरिका और कैरिबियाई				
क्षेत्र (23)	एनए	एनए	एनए	20.1
कुल योग 67	एनए	एनए	एनए	19.5

स्रोत :

ukV % कोष्ठक में दी गई संख्या प्रत्येक वर्ग में सम्मिलित देशों की संख्या दर्शाती है। सैम्पल साईज़ के लिए देश विशेष के आंकड़े देखिए। अफ्रीका के सब–सहारा क्षेत्र के आंकड़े 2000–01 के लिए हैं, प्रशान्त एशिया (चीन को छोड़कर) वर्ष 2002–03 के लिए हैं, मध्य पूर्व और उत्तर अफ्रीका के वर्ष 2001–03 के लिए हैं तथा लेटिन अमेरिका और कैरिबियाई देशों के वर्ष 1996 के लिए है। एनए का अर्थ है आंकड़े उपलब्ध नहीं है।

क्षेत्रों के अंतर्गत देशों के बीच बहुत अधिक अंतर विद्यमान है। अफ्रीका के सब सहारा क्षेत्र में 2000 में बोत्सवाना, मारीशिस और दक्षिण अफ्रीका में कृषि शोध स्टाफ में महिला शोधकर्ताओं की संख्या 30% से अधिक थी, इसके विपरीत एरिट्रिया और इथोपिया में उसी वर्ष शोध कार्य करने वाली महिलाएं क्रमशः केवल 4% और 7% थीं। लैटिन अमेरिका कैरिबियाई क्षेत्र तथा प्रशांत एशिया क्षेत्र में यह अंतर और अधिक था। 2002/03 में पाकिस्तान और नेपाल में कुछ शोध स्टाफ की महिलाएं क्रमशः 6% और 9% थी जबकि म्यांमार में 2003 में शोध करने वालों में आधे से अधिक महिलाएं थी। लैटिन अमेरिका और कैरिबिया में यह अंतराल सैन्ट किट्स नेविस में 0% से सेन्ट लूसिया में 69% था। औसतन कृषि क्षेत्र में महिला शोध एवं विकासकर्ता स्टाफ की संख्या कैरिबिया में अधिकांश लेटिन अमेरिकी देशों से अधिक थी। उरगवे एक अपवाद है जहाँ 1996 में महिला शोधकर्ताओं की हिस्सेदारी 44% थी। इसके विपरीत मध्य पूर्व और उत्तर अफ्रीका के देशों के बीच अंतर बहुत कम है – जार्डन में 13% और ट्यूनिशिया में 28% (यद्यपि यह आंशिक रूप से केवल पाँच देशों का सैम्पल लेने के कारण है।)

df"k Je e tMj enn

अनेक क्षेत्रों में पुरुषों के मुकाबले महिलाएं कृषि क्षेत्र में अधिक रोजगार प्रदान करती हैं। यद्यपि महिलाएं और पुरुष अलग अलग गतिविधियों में कार्य करते हैं जिनके इनाम और कैरियर के अवसर भी अलग–अलग होते हैं जबकि उनकी शिक्षा और श्रम बाजार के कौशल एक जेसे होते हैं। महिलाएं अनौपचारिक क्षेत्रों और नौकरियों पर कम वेतन के साथ सम्बद्ध होने के कारण अपनी अनमनीयता का खामियाजा भुगतती है। बच्चों की देखभाल भी महिलाओं का काफी समय ले लेती है और बच्चों की देखभाल में कमी महिलाओं के रोजगार में बाधक बनती है। कुछ देशों में महिलाओं को अभी भी कानूनी अवयस्क माना जाता है और उन्हें अदालत में खड़ा होने की अनुमति नहीं है।

पुरुषों और महिलाओं, दोनों के लिए कृषि श्रम पर सबसे महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव कृषि और गैर कृषि क्षेत्र में प्राथमिक तौर पर अच्छे निवेश का वातावरण तैयार करके गतिशील ग्रामीण अर्थ व्यवस्था के माध्यम से होगा। लेकिन श्रम बाजार में जेंडर भेदभाव पर ध्यान देने की बड़ी आवश्यकता है। जिसमें वेतन में असमानता, व्यवसायों का विभेदीकरण, महिलाओं पर समय का बोझ, हिंसा तथा कार्य स्थलों पर स्वास्थ्य और सुरक्षा शामिल हैं। श्रम बाजार के वर्गीकरण एवं वेतन असमानताओं को कम करने से श्रमिकों की गतिशीलता बढ़ती है, रोजगार बढ़ते हैं और आर्थिक वृद्धि में योगदान मिलता है। अनुभव जनित साक्ष्य दर्शाते हैं कि महिलाएं बच्चों के विकास में पुरुषों से अधिक निवेश करती हैं अतः महिलाओं के लिए रोजगार के उचच स्तर और आमदनी न केवल योगदान देते हैं अपितु इसका पीढ़ियों के बीच भी प्रभाव होता है।

df"k vkthfodk d fy, xkeh.k <kpk e tMj

ग्रामीण ढांचे में भौतिक ढांचे की एक विस्तृत श्रेणी तथा संरचनात्मक (ढांचागत) सेवाओं से उत्पन्न सेवाएं जैसे ऊर्जा, परिवहन, आईसीटी, सिंचाई, सफाई और स्वच्छता, पीने का पानी, बाजार का ढांचा एवं सामाजिक और प्रशासनिक ढांचा इत्यादि शामिल हैं। ग्रामीण

ढांचे के संदर्भ में विभिन्न अध्ययनों ने पुरुषों और महिलाओं के बीच चार प्रमुख अंतरों को चिन्हित किया हैं (1) भौतिक ढांचे की अवस्थिति और प्रकार के लिए जरूरतों में अंतर; (2) ढांचागत सेवाओं के लिए प्राथमिकताओं में अंतर; (3) परिवारों और समुदायों के अंतर्गत ढांचागत सुविधाओं के चयन पर निर्णय निर्माण में भागीदारी करने अथवा ढांचागत कार्यक्रमों को लागू करने तथा सेवाएं प्रदान करने के अवमान अवसर और (4) ढांचागत सेवाओं तक पहुँच में महत्वपूर्ण भेदभाव। पुरुषों और महिलाओं के बीच समय की उपलब्धता में असमानता एक अकेला महत्वपूर्ण आर्थिक कारक है जो जेंडर न्याय और समानता को ग्रामीण ढांचे, नीतियों, कार्यक्रमों और परियोजनाओं के साथ एकीकृत करने की पुष्टि करता है।

ढांचे तथा ढांचागत सेवाओं के लिए पुरुषों और महिलाओं के बीच आवश्यकताओं की विस्तृत श्रेणी के दृष्टिगत नियोजन, निर्णय निर्माण और प्रबंधकीय प्रक्रियाओं में जेंडर समानता को सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है अन्यथा ढांचे का विकास और सेवाएं जेंडर असमानताओं को बढ़ा तथा खराब कर सकती हैं।

tsMj vkSj ikdfrd lalkèku icèku

विकासशील देशों में ग्रामीण निर्धन अपने भोजन और आजीविका के लिए सीधे प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं। पर्यावरणीय अपक्षय के कारण महिलाओं का घरेलू कार्यों में लगने वाले श्रम का समय बढ़ जाता है जैसे ईंधन के रूप में लकड़ी इक्ट्ठा करने अथवा पानी लाने के लिए अधिक दूर तक चलना पड़ता है। पर्यावरणीय संसाधनों की महिलाओं के लिए आवश्यकता को न केवल फसलों के उत्पादन अपितु इंधन और पानी की दृष्टि से पहचानने तथा इनको अच्छे पर्यावरणीय प्रबंधन में निर्मित करने से महिलाओं को आय पैदा करने, बच्चों की देखभाल तथा निजी विकास के लिए अधिक समय मिल जाता है।

प्रायः महिलाओं को स्थानीय जैविक विविधता के संबंध में अद्वितीय दृष्टि और समझ होती है और वे पौधों को ब्रीड बनाने में प्रमुख भागीदार हो सकती हैं क्योंकि वे अपनाई गई और बेहतर वेरायटी के लिए काम करती हैं। अध्ययन दर्शाते हैं कि महिला कृषक स्थानीय कृषि के लिए बेहतर वेरायटी चुनने में पुरुषों से बेहतर होती हैं। अधिकांश समाजों में महिलाओं के पास पुरुषों की तुलना में भूमि के अधिकार कम हैं। सुरक्षित अधिकारों के बिना महिला और पुरुष कृषकों के पास बेहतर प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और संरक्षण कार्यों में निवेश करने के लिए ऋण तक की पहुँच लगभग न के बराबर है।

tsMj vkSj ladV % df"k dk fy, iHkko

महिलाओं, पुरुषों लड़कों और लड़कियों के संघर्ष और प्राकृतिक आपदा की स्थितियों में बिल्कुल अलग अनुभव तथा खतरों के अनुभव हो सकते हैं। ये अनुभव उनकी आजीविका बनाए रखने की क्षमता, खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने तथा कृषि क्षेत्र में काम करने से निर्मित होते हैं तथा इन पर अनुभवों का सीधा प्रभाव भी होता है। अधिकांश समाजों में विश्व के 70% गरीबों और उनकी असमान सामाजिक हैसियत का प्रतिनिधित्व महिलाएं करती हैं। इस जानकारी के आधार पर वे पुरुषों से अधिक खतरे में रहती हैं। यद्यपि महिलाएं निश्क्रिय भागीदार नहीं हैं। वे प्रयः खतरों को न्यूनतम करने की कोशिशों में अधिक सक्रिय होती हैं और उभरती स्थितियों के साथ तालमेल बैठाती हैं। विभिन्न संगठनों को हस्तक्षेप तैयार करते समय संकट के परिणाम स्वरूप सामाजिक पूंजी को समझना चाहिए तथा कौशल, ज्ञान, पहुँच और कृषि से संबंधित गतिविधियों में भागीदारी के संदर्भ में जेंडर अंतरों को अवश्य पहचानना चाहिए।

t:Mj fo'y"k.k %
,d ifjp;

संकट नये व्यवहारों और व्यवस्थाओं को शुरू करने के अवसर प्रस्तुत करते हैं। सामने आने वाली कठिनाइयों के बावजूद मुख्य संकट भू स्वामित्व, इसकी अवधि और प्रयोग के संदर्भ में जेंडर आधारित असमानताओं से निपटने के नए अवसर भी पैदा करते हैं। यथा स्थिति अभ्यासों की ओर लौटने तथा असुरक्षा में योगदान देने वाले अभ्यासों को हल करने के जरूरत के बीच संतुलन बनाने की चुनौती है।

Qly df"k e: t:Mj

अधिकांश देशों में फसल उत्पादन महिलाओं के लिए प्राथमिक रोजगार प्रदाता है। महिलाएं बहुआयामी कार्यों, उद्देश्यों और प्रजातियों से जुड़ी जटिल उत्पादन व्यवस्थाओं को सम्भालने की कोशिश करती हैं। यह व्यवस्थाएं किसी एक फसल के उत्पादन को अधिकतम करने के लिए तैयार नहीं की जाती लेकिन ये व्यवस्थाएं कुल मिलाकर उत्पादित फसलों में स्थायित्व और लचीलेपन को सुनिश्चित करने के तैयार की जाती हैं जिन्हें आमतौर पर फसल उत्पादन हेतु किए गए प्रदर्शन का मूल्यांकन करते समय किसी अकेली फसल के उत्पादन को मापदंड लेते समय नजर अंदाज कर दिया जाता है लेकिन जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में अधिकाधिक महत्वपूर्ण बनती जा रही हैं।

महिला कृषकों की सूचनाओं, ऋण तथा अन्य जानकारियों तथा ऐसे संगठनों तक पहुँच होनी चाहिए जिनके माध्यम से बाज़ारों तक पहुँच बनती है और नीतियाँ प्रभावित होती हैं। वाणिज्यिक फसलों में महिलाओं के शामिल होने तथा उन्हें शोध, विस्तार, ऋण, भूमि के आवधिक अधिकार और बाजार तक पहुँच का लाभ सुनिश्चित करने के लिए अभी भी कृषि सेवाओं में संगठन के स्तर पर महत्वपूर्ण परिवर्तनों की जरूरत है। इस प्रकार के परिवर्तन के बिना महिला कृषकों के आधार को बढ़ाना बहुत कठिन होगा और इस प्रकार कृषि के लिए गरीबी घटाने, पर्यावरण को बचाए रखने तथा आर्थिक वृद्धि में योगदान दे पाना भी कठिन होगा।

eRL; m|kx vkj df"k e: t:Mj

मत्स्य केन्द्र तथा जलचर संबंधित क्षेत्र की उत्पादन व्यवस्था, विपणन और प्रौद्योगिकी में बड़ी तेजी से परिवर्तन आ रहा है। इन परिवर्तनों के कारण उत्पन्न होने वाली आजीविका संबंधी समस्याओं को हल करना बहुत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है तथा अनेक मछली पालन करने वाले समुदायों और गरीब समाजों में विद्यमान जेंडर असमानताओं का हल खोजने के लिए प्रवेश बिंदुओं तथा निवेशों का परीक्षण करना भी जरूरी है। इन जेंडर असमानताओं में महिलाओं द्वारा किए गए कार्यों का तुलनात्मक दृष्टि से कम मूल्य देना तथा तालाबों जैसे अनिवार्य संसाधनों, नई प्रौद्योगिकी, शिक्षा, सूचना और कौशलों तक सीमित पहुँच होना शामिल है।

महत्वपूर्ण प्रवेश बिंदुओं में (1) जेंडर संवेदनशील संसाधन प्रबंधन निकायों का गठन करना तथा जलचर संबंधित क्षेत्र के विकास के लिए आवश्यक संसाधनों के आकलन के लिए छोटे समूह बनाना; (2) जेंडर संवेदनशील परामर्शक सेवाओं का प्रावधान करना जो इन सेवाओं के पैदा करने तथा संबंधित लोगों तक पहुँचाने की प्रक्रिया में होने वाले क्रमबद्ध पक्षपात को देख सके; (3) हाशिए पर स्थित मछुआरों, प्रोसेस करने वालों और व्यापारियों को बाजार तक पहुँच बनाने में सक्षम बनाने हेतु तथा श्रम बाजार में काम करने की स्थितियों में सुधार लाने हेतु कार्रवाई; (4) गरीब महिलाओं सहित हाशिये पर लाए गए समूहों की केवल मत्स्य उद्योग पर निर्भरता को कम करने के लिए धारणीय आजीविकाओं को तलाश करना क्योंकि अन्यथा इन गतिविधियों से जल संसाधनों और तटीय पारिस्थितिकी पर दबाव पड़ता है।

पूरे विश्व में पशुधन बढ़ रहा है। कुछ देशों में अब पशुधन का प्रतिशत सकल घरेलु कृषि उत्पाद का 80% है। पशुधन क्षेत्र को अनेक प्रकार की चुनौतियों जैसे पशुओं का भोजन सुनिश्चित करना, छोटे पशु पालकों एवं प्रोसेसरों के लिए संसाधन और आजीविका सुरक्षा की चुनौतियाँ शामिल हैं। इससे अधिक वर्तमान सामाजिक, आर्थिक तथा सीमा पार से आने वाली बीमारियों जैसे एविमन इन्फलूंजा के स्वास्थ्य संबंधी प्रभावों की चिंताएं पशुधन के सामने के अनेक अन्य मुद्दों को उजागर करती है। ये चुनौतियाँ नई और टिकाऊ सोच की मांच करती है क्योंकि एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका में 200 मिलियन छोटे किसान आय के मुख्य स्रोत के रूप में पशुधन पर निर्भर करते हैं।

आमतौर पर पुरुष और महिलाएं पशुधन से संबंधित विभिन्न कार्यों के लिए श्रम प्रदान करती हैं, वे जीन प्रवाह तथा पशु विविधता को बढ़ाने के लिए अपना योगदान देते हैं तथा पशुओं को बीमारियों से बचाने तथा इलाज करने का उपयोगी ज्ञान भी रखते हैं। यद्यपि महिलाओं को पशुधन सेवाओं एवं सूचनाओं तक पहुँच बनाने में पुरुषों की तुलना में अधिकचुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पशुधन और चिकित्सकीय सुविधाएं पाने और प्रदान करने में जेंडर असमानता से न केवल महिला और पुरुष पशुपालक, उत्पादक एवं संसाधित करने वालों की हानि होती है अपितु इससे प्रदत्त पशुधन मूल्य श्रेणी के लिए अधिक टिकाऊ और प्रभावकारी कार्रवाइयों की भी हत्या होती है।

tMj vkj foKku % tMj foHknd dh Nku&chu

विज्ञान और प्रौद्योगिकी का जेंडर पक्ष पूरे विश्व में अधिक महत्वपूर्ण और प्रासंगिक विषय बन गया है। अब से 30 वर्ष पहले से संयुक्त राष्ट्र महासभा और संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग महिलाओं और लड़कियों के लिए खुले शिक्षा के अवसरों और महिलाओं की प्रशिक्षण एवं श्रम बाजार तक पहुँच में असमानताओं और भेदभाव की चर्चा करता आया है। 1976–85 से जब ''महिलाओं के लिए संयुक्त राष्ट्र दशक : समानता, विकास और शांति'' ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की भूमिका की ओर विशेष ध्यान देने की बात की थी तब से विज्ञान, प्रौद्योगिकी और महिलाओं के संबंध में कार्रवाई करने का आह्वान धीरे धीरे तेज हो गया है। जब 2000 में संयुक्त राष्ट्र के (सहस्त्राब्दी लक्ष्यों) मिलेनियम डेवेल्पमेंट गोल्स में जेंडर समानता एक लक्ष्य बन गई तब से विज्ञान और प्रौद्योगिकी जेंडर आयाम और अधिक केन्द्र में आ गया है।

विज्ञान और इंजीनियरिंग में महिलाओं की प्रतिभागिता की कमी को अब वैज्ञानिक विकास, उत्पादकता और श्रेष्ठता को प्रभावित करने वाला मुद्दा माना जाता है। यूनेस्को ने 2007 में भविष्यवाणी की थी कि यदि विज्ञान और प्रौद्योगिकी में शोध और विकास की वर्तमान वृद्धि दर निरंतर बनी रहती है तो पूरे विश्व स्तर पर महिला और पुरुष शोधकर्ताओं की संख्या को बढ़ाना आवश्यक होगा। ओ.ई.सी.डी. देशों में बढ़ते हुए कार्य और शिक्षा में महिलाओं की प्रतिभागिता के बावजूद पूरी दुनिया में अनेक महिलाओं को गरीबी, शिक्षा की कमी, कानूनी और सांस्थानिक एवं सांस्कृतिक कारणों से वैज्ञानिक कैरियर के पूरे लाभ से वंचित कर दिया जाता है। यह आवश्यक है कि निजी और व्यापारिक क्षेत्रों से व्यवस्थित और तुलनात्मक आंकड़े नीति निर्माताओं को सूचित करने के लिए एकत्र किए जाएं।

प्रत्येक तीन वर्ष में तैयार किए गए यूरोपीयन यूनियन के SHE आंकड़ों द्वारा अनेक संकेतकों और सूचकांकों के साथ प्रगति को मानीटर करना इस दिशा में एक अच्छी व्यवस्था का उदाहरण है।

tMj fo'y"k.k % ,d ifjp;

यूनेस्को द्वारा दिए गए 2003 के आंकड़ों के अनुसार पूरे विश्व में महिला वैज्ञानिकों की संख्या इस प्रकार है : ग्रेड सी 42%, ग्रेड बी 32%, ग्रेड ए 15%। विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की संख्या इंग्लैंड में 18.8%, लक्सम्बर्ग में 8.6%, लिथूनिया में 28.2%, ओ.ई.सी.डी. में 25–30% तथा जापान और कोरिया में 12% है। इंग्लैंड की इन 18.8% में 30% शोधकर्ता, 26% प्रवक्ता और ¼ से कम प्रोफेसर हैं। कुछ देशों में शोधकर्ताओं की कुल संख्या में महिलाओं की हिस्सेदारी इस प्रकार है : श्रीलंका को छोड़कर दक्षिण एशियाई क्षेत्र में अधिकतम 30%, जापान 70%, रूस 45%। यूरोपीयन यूनियन के संदर्भ में महिलाएं प्राकृतिक विज्ञान में 19%, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में 12%, मेडिकल साईंस में 23%, कृषि विज्ञान में 4%, सामाजिक विज्ञान में 21% तथा मानविकी में 18% हैं। वैज्ञानिक बोर्डों में महिलाओं की हिस्सेदारी इस प्रकार है – नार्वे में 48%, इंग्लैंड में 31%, स्विटजरलैंड में 20% तथा जर्मनी में 17% है।

भारत में वैज्ञानिक समुदाय में महिलाओं की संख्या नगण्य है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर 2003 में बनी राष्ट्रीय नीति का लक्ष्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रही गतिविधियों में महिलाओं के सशक्तीकरण को बढ़ावा देना तथा उनकी पूरी एवं सक्रिय प्रतिभागिता को सुनिश्चित करना है। यह उद्देश्य पूरा नहीं हुआ। इंडियन नेशनल साईंस एकेडेमी की ऊशा एम. मुंशी तथा इंडियन कौंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (ICMR) की दिव्या श्रीवास्तव द्वारा किए गए अध्ययन के अनुसार कौंसिल ऑफ साईंटिफिक एंड इन्डस्ट्रियल रिसर्च, डिपार्टमेंट ऑफ बायो टेक्नालोजी, आईसीएमआर, डिपार्टमेंट ऑफ एटामिक एनर्जी (DAE), डिपाटेमंट ऑफ ओशन डेवेल्पमेंट (DOD) तथा इंडियन कौंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च जैससी संस्थाओं में महिलाओं की संख्या केवल 20% है। कौंसिल ऑफ साईंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च का सबसे प्रतिश्ठित सम्मान का नाम 'भटनागर पुरस्कार' है। 1958 से आजतक दिए गए 333 इनामों में से 2004 तक केवल 8 महिलाओं ने यह पुरस्कार प्राप्त किया है। जबकि 2004 को मिलाकर पिछले 6 सालों में यह पुरस्कार किसी को नहीं दिया गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि केवल महिला वैज्ञानिकों में से केवल 2.4% पर इस पुरस्कार के लिए विचार किया गया। इसी प्रकार ऊँचे पदों पर भी महिला वैज्ञानिकों का कोई विशेष प्रतिनिधित्व नहीं है। केवल कुछ छुटपुट उदाहरण मिल जाते हैं जैसे एक प्रख्यात विज्ञान विभाग डी.बी.टी. की अध्यक्ष भारत सरकार की सचिव महिला वैज्ञानिक थी। लेकिन ऐसे उदाहरण बहुत कम और बहुत अन्तराल के बाद मिलते हैं। वैज्ञानिक समुदाय की युवा पीढ़ी की ओर आएं तो 1974 से 2005 के बीच 468 युवा वैज्ञानिकों को दिए गए पुरस्कारों में महिलाओं की संख्या 9% से थोड़ा अधिक है।

उपरोक्त तथ्य विज्ञान के संबध में सोच की जेंडर धारण को उजागर करते हैं तथा ये वैज्ञानिक समुदाय में जेंडर गैप (खालीपन) की वर्तमान स्थिति को भी दर्शाते हैं। लेकिन हम यह महसूस नहीं कर रहे कि ये पूरे समाज को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। सभी समाजों में सामाजीकरण की प्रक्रिया विशेषतः भारतीय समाज में महिलाओं और पुरुषों के बीच वैज्ञानिक व्यावसाय में एक बहुत बड़ा गैप (खालीपन) दिखाई देता है। विज्ञान में महिलाओं के ज्ञान का कम उपयोग करना वैज्ञानिक समुदाय के लिए एक गंभीर खतरा है। किसी देश का वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक विकास उस देश की महिलाओं और पुरुषों की वैज्ञानिक और बौद्धिक क्षमता पर निर्भर करता है। लेकिन भारतीय समाज में महिलाओं को आधीन रखा जाता है और वे आधीनता की भूमिका निभाती है। अधिकांश महिलाएं शैक्षणिक योग्यता तो प्राप्त कर लेती हैं परंतु समाज की मांग के सामने हथियार डाल देती हैं और अपने बौद्धिक झुकाव को दबा देती है। भारतीय समाज में महिलाओं को भिन्न भूमिका निभानी होती है। अपने कैरियर के प्रारंभिक वर्षों में वे कई वर्ष बच्चे पैदा

करने और पालने में लगाती हैं। इन सामाजिक सीमाओं के कारण एक वैज्ञानिक के रूप में महिलाओं का कैरियर छोटा हो जाता है। शोध कार्य बहुत समय मांगता है और साथियों के असहयोगात्मक व्यवहार एवं घरेलू विवशताओं के कारण महिलाओं द्वारा वैज्ञानिक के कैरियर को निभा पाना कठिन हो जाता है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि पुरुषों और महिलाओं के बीच जैविक अंतर है। मानव जाति के स्वास्थ्य पर शोध करते हुए सभी नयी दवाइयों और ड्रग्स को केवल पुरुषों पर टेस्ट किया जाता है और यह मान लिया जाता है कि पुरुषों पर परीक्षण करना ही पर्याप्त है और महिलाओं की जैविक आवश्यकताओं पर ध्यान नहीं दिया जाता। पूरी जनसंख्या के आधे भाग की आवश्यकताओं को समझना होगा और सभी वैज्ञानिक खोज जेंडर से निरपेक्ष नहीं हो सकती। इस क्रम को उल्टा जा सकता है यदि महिलाएं अधिक संख्या में वैज्ञानिक बन जाएं।

समाज की वर्तमान सोच है कि महिलाएं बहुत सशक्त और संघर्षशील वैज्ञानिक नहीं हो सकती परंतु इस धारणा को अनेक महिला वैज्ञानिकों जैसे मैरे क्यूरी, सुनीता विलियम्स, कल्पना चावला, डॉ. मधु लक्ष्मी रेड्डी इत्यादि ने झुठलाया है। दिमागी स्पष्टता और विचारों में संतुलन वैज्ञानिक होने की पहली शर्त हैं। ये गुण मानव विशेष में होते हैं और केवल पुरुषों की बपौती ही नहीं होते।

जैसा कि हम पहले चर्चा कर चुके हैं कि समाजीकरण प्रक्रिया के कारण महिलाएं वैज्ञानिक शोध की मुख्य धारा में नहीं हैं। भारत में महिला वैज्ञानिकों का ही प्रतिशत बहुत कम नहीं है अपितु सभी काम करने वाली भारतीय महिलाओं का भी एक छोटा भाग ही है। अपनी शैक्षणिक योग्यता के बावजूद पितृ प्रधान धारणाओं के चलते महिला वैज्ञानिकों का कैरियर अन्य असंगठित क्षेत्र को महिलाओं अथवा अन्य व्यावसायिक कार्यों जैसे डाक्टर अथवा वकीलों की तरह प्रभावित होता है क्योंकि यहाँ महिलाओं को परिवार में एक बेटी, पत्नी अथवा माँ के रूप में देखा जाता है।

भारत में स्कूलों की पाठ्य पुस्तकों में समाजीकरण की प्रक्रिया को प्रस्तुत करने का ढंग भी महत्व रखता है। पुरुषों को डाक्टर, इंजीनियर अथवा वैज्ञानिक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जबकि महिलाओं को नर्स, माँ और गृह लक्ष्मी के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। महिलाओं का कैरियर स्वयं उनके द्वारा चुने जाने के बजाय परिवार चुनता है। परिवार ऐसी नौकरियों को प्राथमिकता देते हैं जिनमें महिलाओं के पास अपने परिवार की देखभाल के लिए काफी समय मिल सके। यद्यपि बहुत कम महिलाएं विज्ञान में डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त करती हैं परंतु उनके लिए शोध का कैरियर निभा पाना और एक स्थायी स्थिति बना पाना कठिन होता है। अपने अध्ययन में ब्रेक के कारण तथा पारिवारिक प्रतिबद्धताओं के कारण महिलाओं के लिए प्रख्यात वैज्ञानिक संस्थानों में काम करना अथवा कैरियर शुरू करना बहुत कठिन होता है। बच्चे पैदा करना और पालने के निर्णय महिलाओं को पुरुषों की तुलना में पारम्परिक पितृ प्रधान परिवारों के परिवेश में बहुत गंभीर ढंग से प्रभावित करते हैं। यह संभव है कि ऐसी स्थिति में महिलाओं द्वारा अपना कैरियर निभाने का लक्ष्य पीछे छूट जाता है क्योंकि महिलाओं को परिवार की जरूरतें पूरी करने के लिए छोटे बड़े अवकाश लेने पड़ते हैं। आगामी वर्षों में इसके कारण समान आयु और योग्यता होने के बावजूद महिलाओं की अपने व्यवसाय में उपलब्धियाँ पुरुषों से कम रह जाती हैं। इसलिए जब स्थायी पद ढूंढ़ने की बात आती है तो बहुत कम महिला वैज्ञानिक इसके लिए प्रयास करती हैं और उनसे भी कम उसी पद के लिए पुरुषों के साथ सफलतापूर्वक मुकाबला कर पाती हैं।

अगला प्रश्न है कि वैज्ञानिक निर्गत के रूप में महिला वैज्ञानिक किस तरह पुरुषों का मुकाबला करती हैं? शोध के निर्गतों को सहकर्मियों द्वारा अवलोकित जोर्नल्स (पत्रिकाओं)

में छपे वैज्ञानिक लेखों द्वारा मापा जाता है। वैज्ञानिक शोध कार्य में एक टीम के रूप में कार्य किया जाता है और उनसे प्राप्त जानकारियों को टीम लीडर के नाम से प्रकाशित किया जाता है जो प्रायः कोई पुरुष ही होता है। अतः महिलाओं का योगदान दबा दिया जाता है और उसे आवश्यक पहचान और मान्यता नहीं मिल पाती। इससे महिलाओं का नैतिक बल स्वतः प्रभावित होता है। प्रकाशनों की भांति व्यावसायिक निकायों में भी घुस पाना महिलाओं के लिए कठिन होता है। और इन निकायों पर अधिकांशतः पुरुषों का वर्चस्व होता है। इसी प्रकार सम्मान और पुरस्कार वैज्ञानिकों की पहचान बनाते हैं। अवार्ड और फेलोशिप के लिए आवेदन करने की आयु सीमा महिलाओं को आवेदन करने से प्रतिबंधित करती है और पहचान बनाने से वंचित करती है। 1999 में डी.बी.टी. द्वारा नेशनल बायो साईंस अवार्ड्स की स्थापना की गई थी और 2003 तक कुल 24 वैज्ञानिकों ने यह पुरस्कार प्राप्त किया। भटनागर अवार्ड के पूरे इतिहास में बहुत ही कम महिलाओं को विज्ञान के किसी क्षेत्र में पुरस्कार के योग्य समझा गया।

जीव विज्ञान के क्षेत्र में यह आंकड़ा 3% तक आ जाता है। पिछले दस सालों के आंकड़े और भी चौंकाने वाले हैं। चिकित्सा क्षेत्र में पिछले 10 वर्षों में केवल एक महिला को भटनागर अवार्ड मिला है। इन आंकड़ों से कुछ अनुमान लगाए जा सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है स्वतंत्रता उपरांत के प्रारंभिक वर्षों में बहुत कम महिलाएं शोधकर्ता के रूप में कार्य कर रही थी और बाद के वर्षों में उनकी संख्या में मामूली वृद्धि हुई। यदि क्षेत्र में अनुपातिक दृष्टि से महिलाएं कम संख्या में थीं तो आशा की जानी चाहिए कि पुरस्कार विजेताओं में भी उनका प्रतिनधित्व कम ही होगा। इससे संकेत मिलता है कि महिला वैज्ञानिकों की संख्या में वृद्धि के बावजूद आज भी जेंडर आधारित हानियाँ चल रही हैं और यहाँ तक कि शैक्षिक योग्यता प्रदर्शित करने पर आधारित प्रतिस्पर्धाओं में भी यह भेदभाव चल रहा है। इस संबंध में परियोजना (प्रोजेक्ट) कार्यों के प्रस्तावों की स्वीकृति, नौकरियों पर नियुक्ति हेतु उम्मीदवारों के चयन तथा निर्णय लेने वाले पदो ंके लिए नामांकन हेतु जेंडर निरपेक्ष, पारदर्शी मापदंड स्थापित करने से समस्या का बोझ कुछ कम होगा। यह मुद्दा इसलिए और भी गंभीर और महत्वपूर्ण हो जाता है कि आधारभूत प्राकृतिक विज्ञानों में शैक्षिक शोध को सम्मानजनक तो माना जाता है परंतु इससे अधिक आय अर्जित करने वाला व्यावसाय नहीं माना जाता। इसका परिणाम यह होगा कि कम से कम नये युवा इस क्षेत्र में आना चाहेंगे अपितु वे सूचना प्रौद्योगिकी (आई.टी.) अथवा प्रबंधन के क्षेत्र में जाना चाहेंगे। दूसरी ओर महिलाओं की आप को अभी भी परिवार की दूसरी आय के रूप में देखा जाता है अतः वे शैक्षिक वैज्ञानिक शोध में अधिक प्रमुखता प्रापत कर सकती हैं। महिलाओं के साथ वर्तमान में चल रहे जेंडर सापेक्ष व्यवहार को कम करते हुए एक व्यावसायिक सहकर्मी के रूप में व्यवहार करना लाभकारी हो सकता है।

Ckèk iz'u 2

ukV : i) प्रश्नों के उत्तर नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ii) अपने उत्तर की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. विज्ञान शोध में महिलाओं की प्रतिभागिता कम होने के कारणों का विश्लेषण कीजिए।

....

....

....

2-7 lkjka'k

इस इकाई में हमने जेंडर विश्लेषण और प्रतिभागिता के महत्व तथा समाज के सभी वर्गों की जरूरतों को पूरा करने में प्रतिभागिता कितनी प्रभावशाली होगी, पर चर्चा की है। कुछ चुने हुए संकेतकों की सहायता से जेंडर गैप सूचकांक मापे जाते हैं। इस इकाई में जेंडर गैप सूचकांक पर भी चर्चा की गई है। जेंडर गैप सूचकांक से स्पष्ट होता है कि महिलाएं सशक्त हैं या नहीं। जेंडर गैप को क्षेत्रवार भी विश्लेषित किया जाता है। इस इकाई में भी ऐसे ही किया गया है। इस इकाई में किया गया विश्लेषण आपको जेंडर विश्लेषण का महत्व समझने में सहायता करेगा। अगली इकाइयों में जेंर करने की विश्लेषण की विधियों और मैट्रिक्स पर चर्चा की जाएगी।

2-8 'kCnkoyh

Naila Kabeer, Reversed Realities Gendered Hierarchies in Development Thought, New Delhi: Kali for Women, 1994

Ranjani K.Murthy, Mercy Kappan Institutionalising Gender within Organisations and Programmes, Bangalore: Visthar, 2007

Vineeta Bal, Current Science, Vol. 88, No. 6, 25 March 2005,

Indian National Science Academy, Year Book 2006.

2-9 cksèk iz'uksa ds mÙkj

Ckksèk iz'u 1

1. जेंडर विश्लेषण को महिलाओं और पुरुषों तथा लड़के और लड़कियों पर होने वाले विभेदकारी प्रभावों के संदर्भ में भिन्न प्रकार की अन्तर्संबंधित प्रक्रियाओं की सूचना देने के लिए विभिन्न स्तरों पर प्रयोग किया जा सकता है। राष्ट्रीय स्तर पर इसको भागीदार देशों की राष्ट्रीय नीति ढांचों तथा राष्ट्रीय विकास रणनीतियों और/अथवा गरीबी कम करने की रणनीतियों, बड़ी नीतियों, सार्वजनिक व्यय कार्यक्रमों/बजटों, कानूनों, नियमों और प्रक्रियाओं में प्रयोग किया जाता है।

   जेंडर विश्लेषण को क्षेत्रकों, क्षेत्रक नीतियों, रणनीतियों और कार्यान्वयन योजनाओं एवं संचालन हेतु दिशा निर्देशों के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

   उप राष्ट्रीय स्तर पर जेंडर विश्लेषण को प्रांतीय अथवा जिला विकास योजनाओं, रणनीतियों, बजटों, कानूनों, नियमों और प्रक्रियाओं में प्रयोग किया जा सकता है।

   विकास कार्यक्रमों और परियोजनाओं के संबंध में, सामुदायिक विकास योजनाओं, कार्यक्रमों और गतिविधियों तथा दान द्वारा संचालित विकास कार्यक्रमों और परियोजनाओं की पहचान, डिजाइन और आकलन के लिए जेंडर विश्लेषण का प्रयोग किया जा रहा है।

2. महिलाओं के विरुद्ध सभी प्रकार के भेदभाव मिटाने पर अधिवेशन

Ckksèk iz'u 2

1. विज्ञान और प्रौद्योगिकी का जेंडर पक्ष पूरे विश्व में अधिकाधिक महत्वपूर्ण और प्रासंगिक विषय बन गया है। अब से 30 वर्ष पहले से संयुक्त राष्ट्र महासभा और संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग महिलाओं और लड़कियों के लिए खुले

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

tMj fo'y"k.k % ,d ifjp;

शिक्षा के अवसरों और महिलाओं की प्रशिक्षण एवं श्रम बाजार तक पहुँच में असमानताओं और भेदभाव की चर्चा करता आया है। 1976–85 से जब 'महिलाओं के लिए संयुक्त राष्ट्र दशक : समानता, विकास और शांति' ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की भूमिका की ओर विशेष ध्यान देने की बात की थी तब से विज्ञान, प्रौद्योगिकी और महिलाओं के संबंध में कार्रवाई करने का आह्वान धीरे–धीरे तेज हो गया है। जब 2000 में संयुक्त राष्ट्र के सहस्त्राब्दी लक्ष्यों में जेंडर समानता एक लक्ष्य बन गई तब से विज्ञान और प्रौद्योगिकी का जेंडर पक्ष और अधिक केन्द्र में आ गया है। उपरोक्त तथ्य विज्ञान के संबंध में जेंडर प्रभावित धारणा को स्पष्ट करते हैं तथा यह विज्ञानियों के समुदाय में जेंडर गैप की वर्तमान स्थिति को भी दर्शाते हैं। लेकिन हम महसूस नहीं कर रहे कि यह पूरे समाज को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। सभी समाजों मे समाजीकरण की प्रक्रिया विशेषतः भारतीय समाज में महिलाओं और पुरुषों के बीच वैज्ञानिक समुदाय में एक बहुत बड़ा गैप दिखाई देता है। विज्ञान में महिलाओं के ज्ञान का कम उपयोग करना वैज्ञानिक समुदाय के लिए गंभीर खतरा है। किसी देश का वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक विकासउस देश की महिलाओं और पुरुषों की वैज्ञानिक और बौद्धिक क्षमता पर निर्भर करता है। परंतु भारतीय समाज में महिलाओं को आधीन रखा जाता है और वे आधीनता की भूमिका निभाती हैं। अधिकांश महिलाएं शैक्षणिक योग्यता तो प्राप्त कर लेती हैं परंतु समाज की मांग के सामने हथियार डाल देती हैं और अपने बौद्धिक झुकाव को दबा देती हैं। भारतीय समाज में महिलाओं को भिन्न भूमिका निभानी होती है। अपने कैरियर के प्रारंभिक वर्षों में वे कई वर्ष बच्चे पैदा करने और पालने में लगती हैं। इन सामाजिक सीमाओं के कारण एक वैज्ञानिक के रूप में महिलाओं का कैरियर छोटा हो जाता है। शोध कार्य बहुत समय मांगता है और साथियों के असहयोगात्मक व्यवहार एवं घरेलू विवशताओं के कारण महिलाओं द्वारा वैज्ञानिक कैरियर को निभा पाना कठिन हो जाता है।

2-10 mi;ksxh iLrd

Naila Kabeer, Reversed Realities Gendered Hierarchies in Development Thought, New Delhi: Kali for Women, 1994

Ranjani K.Murthy, Mercy Kappan Institutionalising Gender within Organisations and Programmes, Bangalore: Visthar, 2007

Vineeta Bal, Current Science, Vol. 88, No. 6, 25 March 2005,

Indian National Science Academy, Year Book 2006.

2-11 ckèk i'u ¼euu ,oa vH;kl ds fy;s½

1) नियोजन और नीति निर्माण में हमें जेंडर विश्लेषण की आवश्यकता क्यों होती है?

2) किन्हीं दो क्षेत्रकों में उपयुक्त आंकड़े देकर जेंडर के प्रभाव का विश्लेषण कीजिए।

bdkbZ 3 tsaMj fo'ys"k.k ds rRo

bdkbZ dh :ijs[kk

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 जेंडर विश्लेषण के अवयव

- 3.3.1 लैंगिक विश्लेषण – असंयुक्त आंकड़े एवं सूचनाओं का विश्लेषण
- 3.3.2 भूमिकाओं और जिम्मेवारियों का आकलन/श्रम का विभाजन
- 3.3.3 संसाधनों तक पहुँच और उनके नियंत्रण पर सोच विचार
- 3.3.4 निर्णय निर्माण के प्रतिमानों का परीक्षण
- 3.3.5 जेंडर परिप्रेक्ष्य के प्रयोग द्वारा आंकड़ों का परीक्षण

3.4 जेंडर विश्लेषण के ढांचे

3.5 सारांश

3.6 शब्दावली

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.8 उपयोगी पुस्तकें

3.9 बोध प्रश्न (अभ्यास एवं मनन हेतु)

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

3-1 izLrkouk

जेंडर विश्लेषण जेंडर जागरूकता के साथ समस्याओं और स्थितियों को देखने/विश्लेषित करने तथा समाधान ढूंढ़ने और जेंडर मुद्दों को पहचानने का एक तरीका है। जेंडर विश्लेषण के मुख्य तत्वों में पुरुष और महिलाओं के बीच तथा महिलाओं के अपने बीच समानताओं व असमानताओं को शामिल किया जाना चाहिए। इनका संबंध कार्यों, संसाधनों, जिम्मेवारियों और शक्तियों, प्रोत्साहनों एवं पुरस्कारों, जेंडर समानता के लक्ष्यों को बढ़ावा देने वाले हस्तक्षेपी संस्थानों की क्षमता के आकलन, जेंडर समानता को शुरू करने और बढ़ावा देने में प्रभावकारी बाधाओं और रुकावटों का अनुमान लगाने तथा इन प्रतिरोधों (रुकावटों) का मुकाबला करने के रणनीतियों से है। महिलाओं की व्यावहारिक और रणनीतिक जरूरतों को समझना महत्वपूर्ण है। महिलाओं की व्यावहारिक जरूरतों को ऐसी जरूरतों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो उनकी पारम्परिक अथवा आधीनता वाली भूमिका पर कोई प्रश्न चिह्न नहीं लगाती। ये प्रायः दैनिक जीवन की आवश्यकताएं होती हैं जैसे घर, पानी, स्वास्थ्य की देखभाल और रोजगार इत्यादि। इसके विपरीत रणनीतिक जेंडर हित महिलाओं की ऐसी जरूरतें हैं जिन्हें समाज में उनकी आधीनता वाली भूमिका के आधार पर पहचाना गया है। इनमें संदर्भ के साथ परिवर्तन हो सकता है और इनमें घरेलू हिंसा से मुक्ति का कानूनी अधिकार, भूमि और सम्पति पर अधिकार, लैंगिक अधिकार, परिवार में श्रम का असमान वितरण इत्यादि को शामिल किया जा सकता है। यह प्रायः कम दिखाई देती है पर इनके दीर्घकालिक प्रभाव होते हैं। व्यावहारिक जेंडर जरूरतें और रणनीतिक जेंडर जरूरतें समझने के लिए खंड 2 में एक अलग इकाई निश्चित की गई जिसमें हम इन जरूरतों के बारे में बेहतर समझ सकेंगे।

t:Mj fo'y"k.k ½
,d ifjp;

जेंडर विश्लेषण रणनीतिक योजना निर्माण और कार्य योजना डिजाईन का आवश्यक तत्व है और जेंडर एकीकरण की बुनियाद है। जेंडर विश्लेषण पुरुषों और महिलाओं के भिन्न परंतु परस्पर निर्भर भूमिकाओं तथा लिंगों के बीच संबंधों का परीक्षण करता है। यह पुरुषों और महिलाओं के अधिकारों और अवसरों, शक्ति संबंधों, संसाधनों तक पहुँच एवं नियंत्रण का भी परीक्षण करता है। जेंडर विश्लेषण असमानताओं की पहचान करता है, पता करता है कि ऐसी असमानताएं क्यों विद्यमान हैं, निर्धारित करता है कि क्या ये असमानताएं बाधाएं हैं और यदि हैं तो उन्हें किस प्रकार ठीक किया जा सकता है। जेंडर विश्लेषण को मुख्य रूप से अनेक सामाजिक मुद्दों पर काम करने वाली सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा विकास परियोजनाओं को लागू करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

3-2 mn~ns';

इस इकाई के अध्यन के बाद आप :

- जेंडर विश्लेषण के तत्वों की व्याख्या कर सकेंगे;
- जेंडर विश्लेषण के अवयवों को परिभाषित कर सकेंगे;
- जेंडर विश्लेषण के विभिन्न ढांचों का वर्णन कर सकेंगे; और
- जेंडर विश्लेषण ढांचों का विश्लेषण एवं तुलनात्मक समीक्षा कर सकेंगे।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

3-3 t:Mj fo'y"k.k d vo;o

जेंडर विश्लेषण क सरलीकृत अवयवों में निम्नलिखित सम्मिलित हैं –

1. लिंग संबंधी असंयुक्त आंकड़ों और सूचनाओं का विश्लेषण;
2. भूमिकाओं और जिम्मेवारियों का आकलन/श्रम विभाजन;
3. संसाधनों तक पहुँच एवं नियंत्रण पर विचार;
4. निर्णय निर्माण के प्रतिमानों का परीक्षण;
5. जेंडर परिप्रेक्ष्य का प्रयोग करके आंकड़ों का परीक्षण (पुरुषों और महिलाओं की जेंडर भूमिकाओं और संबंधों के संदर्भ में)

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम जेंडर विश्लेषण के कदमों को निम्नलिखित ढंग से संश्लेषित करता है।

लैंगिक–असंयुक्त आंकड़े	विश्लेषण	एक जेंडर परिप्रेक्ष्य	जेंडर विश्लेषण

सामान्य रूप से जेंडर विश्लेषण के सभी उपागमों को विशेष क्षेत्रों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य अथवा आर्थिक विकास के क्षेत्रों में स्त्री–पुरुषों के प्रतिनिधित्व, संसाधनों का वितरण किस प्रकार का है तथा विशेष क्षेत्र से संबंधित समकालीन सामाजिक संदर्भों का परीक्षण जेंडर असमानताओं और अंतर को समझने के लिए करना चाहिए।

3-3-1 yfxd fo'y"k.k & vl;Dr vkdM ,o lpuvk dk fo'y"k.k

पहला कदम, किसी परियोजना अथवा गतिविधि से जुड़े लैंगिक असंयुक्त आंकड़ों की समीक्षा करना है। ये आंकड़े अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा प्रकाशित स्रोतों, जेंडर विशेषज्ञों, पणधारी परामर्शों अथवा अन्य ढंग जैसे सर्वेक्षणों या फोकस ग्रुप चर्चाओं से एकत्रित आंकड़ों से प्राप्त किए जा सकते हैं।

ckDl 3-1

असंयुक्त लैंगिक आंकड़ों द्वारा जेंडर विश्लेषण प्रदान करने के महत्व का उदाहरण छोटे व्यापार विकास के माध्यम आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा देने वाली काल्पनिक परियोजना से प्राप्त निम्नलिखित आंकड़ों की तुलना कीजिए।

नोट कीजिए कि किस प्रकार असंयुक्त लैंगिक आंकड़े हल की जाने वाली समस्या की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करते हैं।

1. ''किसी शहर X में कार्य करने योग्य जनसंख्या का 64% बेरोजगार है।''
2. ''शहर X में पंजीकृत बेरोजगारों का 74% महिलाएं हैं और 26% पुरुष हैं। यद्यपि पुरुष रोजगार सेवाओं में अपना नाम कम ही दर्ज करवाते हैं क्योंकि वे कार्य ढूंढ़ने के लिए अनौपचारिक चैनलों का प्रयोग करने की कोशिश करते हैं। इसलिए पुरुषों की बेरोजगारी की दर इससे भी अधिक हो सकती है। ठीक उसी समय क्योंकि महिलाएं पुरुषों की तुलना में अधिक समय तक बेरोजगार रहती हैं अतः वे रोजगार सेवाओं की सहायता प्राप्त करने की कोशिश करती हैं।''

3-3-2 Hkfedkvk vkj ftEeokfj;k dk vkdyu@Je dk foHkktu

- औपचारिक तथा अनौपचारिक रोजगार, सामुदायिक भागीदारी, स्थानीय/सामुदायिक राजनीति, परिवारिक और घरेलू भूमिकाओं इत्यादि के संबंध में पुरुषों और महिलाओं की भूमिकाओं और जिम्मेवारियों पर विचार कीजिए।
- महिलाओं अथवा पुरुषों की भागीदारी कहाँ अधिक है? इसके क्या कारण हैं?
- श्रम के समान विभाजन और समान अवसरों के रास्ते में कौन सी बाधाएं हैं।
- श्रम के समान विभाजन और समान अवसरों को प्रोत्साहित करने के अवसर अथवा प्रवेश बिन्दु कहाँ उपलब्ध हैं?
- घर और समुदाय के भीतर लड़के और लड़कियाँ कौन सी अलग भूमिकाएं निभाती हैं? इससे शिक्षा, स्वास्थ्य की देखभाल इत्यादि तक की उनकी पहुँच कैसे प्रभावित होती है?

ckDl 3-2 % Hkfedkvk vkj ftEeokfj;k d fo'y"k.k dk mnkgj.k

निम्नलिखित उदाहरणों में पुरुषों और महिलाओं की अलग जिम्मेवारियाँ क्या हैं? प्रत्येक प्रोजेक्ट में इन अंतरों के साथ कैसे व्यवहार किया जाता है।

स्वास्थ्य : एच.आई.वी. पाज़ीटिव लोगों की देखभाल में सुधार के लिए कार्यक्रमोंको डिजाइन करने में नोट करने योग्य बात है कि एच.आई.वी./एड्स के प्रभावित परिवार के सदस्यों की देखभाल का अधिकांश बोझ महिलाएं उठाती हैं। परिवार के माहौल से बाहर भी नर्सिंग और चिकित्सकीय कार्यों में भी देखभाल करने

> वाली महिलाओं का अनुपात अधिक होता है। इस बात पर विचार करना चाहिए कि किस प्रकार कार्यक्रम देखभाल करने वाली महिलाओं को और अधिक बोझ दे सकते हैं, इन कार्यक्रमों के सामाजिक प्रभावों पर विचार किया जाना चाहिए कि देखभाल करने वाले पुरुषों की संख्या कम होने का एच.आई.वी. प्रभावित लोगों की देखभाल पर ऋणात्मक प्रभाव हो सकता है।

विवाद को कम करना : विवाद उपरान्त के क्षेत्र में कार्य करने वाले कार्यक्रम को पुरुषों और महिलाओं की भूमिकाओं पर विवाद के गहन विश्लेषण को शामिल करना चाहिए। विवाद उत्तर स्थिति में कार्यक्रम के डिजाइन को विवाद उत्पन्न करने, विवाद रोकने तथा शांति निर्माण में तथा विवाद से पुरुषों और महिलाओं के प्रभावित होने के विभिन्न तरीकों में महिलाओं और पुरुषों की भूमिका का स्पष्ट उपागम रेखांकित करना चाहिए।

3-3-3 l lkèkuk rd igp vkj mud fu;=.k ij lkp fopkj

- संसाधनों और सेवाओं तक किसकी पहुँच और नियंत्रण है? महिलाओं और पुरुषों के बीच संसाधनों के विभाजन का परीक्षण करते समय पहुँच और नियंत्रण के सिद्धांतों और अवधारणाओं के बीच अंतर करना आवश्यक है। पहुँच का अर्थ है कि कोई व्यक्ति अथवा समूह किसी संसाधन (फसल पैदा करने के लिए भूमि) का प्रयोग कर सकता है जबकि नियंत्रण का अर्थ है कि व्यक्ति अथवा समूह उस संसाधन के उपयोग करने के बारे अथवा उसको बेचने (भूमि बेचकर लाभ कमाने) के बारे में निर्णय कर सकता है।

- पुरुषों अथवा महिलाओं की सम्पत्तियों, जिनमें मानवीय पूंजी जैसे शिक्षा, वित्तीय सम्पत्तियाँ, प्राकृतिक सम्पत्तियाँ (भूमि) और सामाजिक सम्पत्तियाँ जैसे सामाजिक ताना–बाना तथा समय इत्यादि पर दृष्टि डालिए।

> **ckDl 3-3 % l lkèkuk rd igp vkj mu ij fu;=.k d fo'y"k.k dk mnkgj.k**
>
> संसाधनों का वितरण कैसे होता है? क्या यह कार्यक्रम को प्रभावित कर सकता है?
>
> स्थानीय शासन : स्थानीय शासन के कार्यक्रम को डिजाइन करते समय नीति निर्माताओं को पुरुष और महिला नागरिकों की विशिष्ट अलग अलग आवश्यकताओं तथा जेंडर निरपेक्ष नीतियों के प्रत्यक्ष विभेदकारी प्रभावशील प्रभाव पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जेंडर संवेदनशील बजट निर्माण एक ऐसे साधन का उदाहरण है जिसको यह जागरूकता पैदा करने के एिल प्रयोग किया जाता है कि किस प्रकार बजट निर्धारण से कुछ समूहों को अन्य समूहों की तुलना में अधिक लाभ होता है तथा इसका प्रयोग महिलाओं के अनौपचारिक आर्थिक योगदान को दर्ज करने के लिए भी किया जाता है। जेंडर संवेदनशील बजट निर्माण को स्थानीय शासन के कार्यक्रम में शामिल किया जा सकता है।

3-3-4 fu.k; fuek.k d ifrekuk dk ijh{k.k

कौन से निर्णय निर्माण में पुरुष और महिलाएं भाग लेते हैं? विश्लेषण में राष्ट्रीय, सामुदायिक और घरेलू स्तर को शामिल किया जा सकता है।

निर्णय निर्माण की किसी बाधा को देखिए। कुछ संदर्भों में निर्णय निर्माण में महिलाओं के भाग लेने पर औपचारिक पाबंदी हो सकती है जबकि कुछ अन्य मामलों में यह पाबंदी वास्तविक हो सकती है। स्त्री और पुरुषों द्वारा वास्तव में निर्णय निर्माण में भाग लेने पर चर्चा और विश्लेषण कीजिए। ऐसे विश्लेषण में निर्णय करने के समय उपस्थित लोगों को ही शामिल नहीं किया जाना चाहिए अपितु उन्हें भी शामिल करना चाहिए जिनकी निर्णय निर्माण प्रक्रिया के परिणामों पर वास्तविक शक्ति है।

ckDl 3-4 % fu.k; fuek.k fo'y"k.k d: mnkgj.k

राजनीतिक प्रक्रिया : राजनीतिक दलों और चुनावों में नागरिकों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के बनाए जाने वाले कार्यक्रम तथा चुनावों के प्रबंधन को मानीटर करने में चुने गए पदों पर पुरुषों और महिलाओं के कार्य शैली का परीक्षण कीजिए। उदाहरण के लिए रूसी विशेषज्ञों के अध्ययन यह दर्शाते हैं कि महिलाओं को प्रायः राष्ट्रीय दल की सूचियों में निचले स्तर पर रखा जाता है जिससे उन्हें फेडरल सरकार में सीट मिलने की संभावना बहुत कम होती है। (रूसी महिलाएं फेडरल स्तर के पदों से कहीं अधिक स्थानीय स्तर के पदों पर हैं)। इसलिए किसी चुनाव के मानीटरिंग कार्यक्रम के एक भाग के रूप में चुनाव जीतने तथा पद प्राप्त करने में आने वाली बाधाओं के विश्लेषण को भी शामिल करना चाहिए। विशेष रूप से ऐसा कार्यक्रम फेडरल स्तर पर पार्टी के पुरुष सदस्यों के बीच काम कर सकता है जिन्हें इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है कि वे महिला उम्मीदवारों को नये क्षेत्रों तक पहुँचने में सक्षम समझें तथा महिलाओं को प्रभावशाली ढंग से चुनाव अभियान चलाने का कौशल सीखने में सहायता करें।

कानून का शासन : रूस में कानून का शासन बेहतर करने के लक्ष्य को लेकर न्यायाधीशों पर निशाना साधते हुए कार्यक्रम बनाने में कार्यक्रम के योजनाकारों को जेंडर और न्यायापालिका पर अनेक परिप्रेक्ष्यों से विचार करना चाहिए। पहले यह पता लगाइये कि क्या न्यायपालिका में पुरुष और महिलाओं को समान प्रतिनिधित्व प्राप्त है। रूस में अनेक जस्टिस ऑफ पीस महिलाएं हैं परंतु न्यायालय के प्रशासन को निर्देश वाले अधिकांश मुख्य न्यायधीश पुरुष हैं। ऐसे कार्यक्रम में दूसरा विचारणीय मुद्दा न्यायधीशों द्वारा अपने निर्णयों में जेंडर समानता के सिद्धांत को एकीकृत करने की क्षमता तथा समानता के नियम को लागू करना होगा। तीसरी विचारणीय बात यह होगी कि क्या न्यायालय व्यवस्था तक पहुँच पाने में महिलाओं और पुरुषों के बीच कोई अंतर है अर्थात् क्या महिलाओं को न्यायालय तक मुकदमा लाने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है?

3-3-5 t:Mj ifjis{; d: i:;kx }kjk vkdMk dk ijh{k.k

जेंडर परिप्रेक्ष्य के प्रयोग का अर्थ केवल साधारण ढंग से असंयुक्त लैंगिक आंकड़े प्रस्तुत करना नहीं है अपितु इसका अर्थ पुरुषों और महिलाओं की जरूरतों, प्राथमिकताओं, जिम्मेवारियों, हैसियत, परिप्रेक्ष्य, ताकत, गतिविधियों, अवसरों और अन्य अनेक कारकों में से बाधाओं इत्यादि के लघुकालिक और दीर्घकालिक अंतरों पर विचार करना होता है। क्रमांक 1 से 4 तक के कदमों से संग्रहीत सूचनाओं का प्रयोग करने से जेंडर भूमिकाओं, जिम्मेवारियों और संबंधों के बारे में किसी एक विशेष देश, समुदाय अथवा प्रोजेक्ट की व्यापक तस्वीर बनाना संभव हो जाता है। किसी विशेष विकास समस्या के संदर्भ में ऐसे जेंडर संबंधित आंकड़े कारण और प्रभाव के बीच संबंधों को परिभाषित करने तथा विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक होते हैं।

ckèk iz'u 1

ukV : i) प्रश्नों के उत्तर नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ii) अपने उत्तर की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. जेंडर विश्लेषण के अवयवों की सूची बनाइए।

....

....

....

2. जेंडर विश्लेषण के किसी एक अवयव की उपयुक्त उदाहरण देकर व्याख्या कीजिए।

....

....

....

3-4 tsMj fo'ys"k.k dk <kapk

एक प्रकार का सामाजिक आर्थिक विश्लेषण होने के कारण जेंडर विश्लेषण को किसी समाज विशेष में विद्यमान वर्तमान जेंडर संबंधों तथा समाधान तलाशती विकास समस्याओं के बीच संबंधों तथा समाधान तलाशती विकास समस्याओं के बीच संबंधो को प्रकाश में लाने के उपकरण के रूपा में प्रयोग करने का लक्ष्य होता है। प्रायः जेंडर विश्लेषण का प्रयोग निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए किया जाता है :

1) जेंडर संबंध किस प्रकार टिकाऊ संबंध प्राप्त करने को प्रभावित करते हैं

2) प्रस्तावित परिणाम किस प्रकार पुरुष और महिलाओं के तुलनात्मक स्तरों को प्रभावित करेंगे?

जेंडर विश्लेषण ऐसे जेंडर अंतरों तथा असमानताओं की पहचान करता है जिन्हें अन्यथा सामान्य माना जा सकता है जैसे कि पुरुषों और महिलाओं के बीच संसाधनों तक पहुँच और नियंत्रण, विभिन्न सामाजिक भूमिकाएं निभाने में, विभिन्न पाबंदियों का सामना करने तथा लाभ प्राप्त करने में अंतर हैं। एक बार उजागर किए जाने पर उनकी ओर ध्यान दिया जा सकता है तथा सावधानी से बनाए गए कार्यक्रमों के माध्यम से उन्मूलन किया जा सकता है।

सामान्यतः प्रयुक्त किए जाने वाले जेंडर विश्लेषण के ढांचों में निम्नलिखित को शामिल किया जाता है :

- हार्वर्ड एनेलिटिकल ढांचा जिसे जेजंडर भूमिका ढांचा भी कहा जाता है;
- मोज़र विश्लेषण मैट्रिक्स;
- जेंडर विश्लेषण मैट्रिक्स;
- महिला सशक्तीकरण ढांचा; और
- सामाजिक संबंध उपागम।

प्रत्येक ढांचे पर अलग से चर्चा करने से पूर्व कुछ सामान्य बिंदुओं पर प्रकाश डालना आवश्यक है।

- जेंडर संबंधित सूचनाओं को एकत्र करने एवं विश्लेषित करने तथा ऐसे विश्लेषण को विकास हस्तक्षेपों में प्रभावशाली ढंग से प्रयोग करने के अन्य मॉडल भी हैं। कोई एक ढांचा सभी विकास समस्याओं को उपयुक्त ढंग से हल करने का तरीका प्रदान नहीं कर सकता।

- प्रत्येक माडल जेंडर के निर्मित होने के बारे में कुछ मान्यताओं एवं विकास के सफल परिणाम प्राप्त करने के लिए जेंडर के मुद्दों को समझने की आवश्यकता को दर्शाता है। कुछ माडल मुख्य परिणाम के रूप में समानता पर बल देते हैं और विकास के अन्य उद्देश्यों पर ध्यान नहीं देते। कार्यक्रम प्रबंधक इन मान्यताओं को पहचानना सीख सकते हैं ताकि वे अपनी विशिश्टि आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त माडल चुन सकें।

- विभिन्न बहुपक्षीय एवं द्विपक्षीय विकास एजेंसियों, फाऊंडेशनस, स्वैच्छिक संस्थाओं, देश की विकासशील एवं संक्रमक व्यवस्थाओं को भिन्न–भिन्न जेंडर विश्लेषण ढांचों को अपनाने की जरूरत होती है।

- सभी माडल प्रत्येक संगठन में एक समान ढंग से ठीक काम नहीं कर पाते। अनेक माडलों को विशिष्ट संस्थाओं ने निर्मित किया होता है जिन्हें अन्य सांस्थानिक कार्यक्रमों में अपनाना आसान नहीं होता। कुछ माडल शोध उन्मुख होते हैं और उन्हें क्रियान्वयन के लिए प्रयोग करना कठिन होता है कुछ अन्य केवल विशेष प्रकार की क्रियान्वयन शैली पर ध्यान देते हैं और कई अन्य उपागमों के लिए उपयोगी ब्यौरे पर ध्यान नहीं देते।

- प्रत्येक माडल को किसी विशेष समय पर विकसित किया गया था। सभी माडलों को जेंडर के प्रति हमारे विचारानुसार अथवा विकास की प्राथमिकताओं एवं परिवर्तित उपागमों के अनुसार संशोधित नहीं किया गया है।

- जेंडर विश्लेषण के लिए परामर्शकों को रखते समय उन्हें अपनाए जाने वाले ढांचे के प्रति स्पष्ट करना आवश्यक हो जाता है। कुछ कोई विशेष माडल अपनाते हैं तो कुछ परिस्थिति के अनुसार कई तरीकों को मिला कर प्रयोग करते हैं।

आइए हम जेंडर विश्लेषण के ढांचों के विस्तृत विवरण को समझें –

1. gkoMZ ,ukfyfVdy <kpk

हार्वर्ड एनालिटिकल ढांचे (कभी कभी इसको जेंडर भूमिकाओं का ढांचा अथवा जेंडर विश्लेषण ढांचो भी कहते हैं) को हार्वर्ड इन्स्टीच्यूट ऑफ इंटरनेशनल डेवेलपमेंट (एचआईआईडी) के शोधकर्ताओं एवं यूएसएआईडी (USAID) के कार्यालय 'विकास में महिलाएं; के संयुक्त प्रयास से विकसित किया गया था। यह समाज में महिलाओं और पुरुषों के अलग–अलग स्थानों पर ध्यान केंद्रित करने को व्यवस्थित करने के प्रारंभिक प्रयासों को दर्शाता है। यह इस विचार पर आधारित है कि विकास के प्रयासों में महिलाओं एवं पुरुषों को संसाधन प्रदान करना आर्थिक दृष्टि से ठीक है तथा इससे विकास अधिक दक्ष होगा जिसको दक्षता उपागम कहा गया है।

हार्वर्ड एनालिटिकल ढांचे की मुख्य बात यह है कि इसमें व्यक्तिगत एवं निवास स्तर पर पर्याप्त आंकड़े एकत्र करने होते हैं जिसमें कृषि एवं अन्य ग्रामीण उत्पादन व्यवस्थाओं को

tMj fo'y"k.k % ,d ifjp;

अच्छी तरह से जोड़ना होता है। पुरुषों और महिलाओं की गतिविधियों, जिन्हें प्रजनन एवं उत्पादक प्रकार की गतिविधियों के रूप में पहचाना जाता है, के आधार पर आंकड़े एकत्र किए जाते हैं और फिर उन पर आय एवं संसाधनों तक पहुँच एवं नियंत्रण की दृष्टि से विचार किया जाता है जिससे पुरुषों और महिलाओं को इन प्रोजेक्टों से उनके उत्पादन और प्रजनन की गतिविधियों तथा घर के अन्य सदस्यों की जिम्मेवारियों पर पड़ने वाले प्रभाव का पूर्वानुमान लगाने के लिए उपलब्ध प्रोत्साहन एवं बाधाएं उजागर होती हैं। आंकड़ों को तीन घटकों के रूप में एकत्र किया जाता है : गतिविधि रूप में, पहुँच और नियंत्रण के रूप में जो संसाधनों और लाभों को दृष्टिगत रखता है, प्रभाव डालने वाले कारकों की यूची के रूप में। इस तरीके से जेंडर विश्लेषण समर्पित उपयोगी तरीकों की कम जानकारी रखने वालों को क्षेत्र में उपलब्ध सूचनाओं को दर्ज करने में सहायता मिलती है। एक दाता के अनुसार इससे पुरुषों और महिलाओं का कार्य स्पष्ट दिखाई देता है।

इस ढांचे के उद्देश्यों में निम्नलिखित को शामिल किया जाता है –

- यह प्रदर्शित करना कि महिलाओं और पुरुषों में निवेश करने मं आर्थिक तर्क और कारण है;
- योजनाकारों को अधिक दक्ष और सक्षम प्रोजेक्ट बनाने में सहायता करना;
- दक्ष और प्रभावशाली प्रोजेक्टों के आधार के रूप में विश्वसनीय सूचनाओं के महत्व पर बल देना;
- समुदाय में महिलाओं और पुरुषों के कार्यों का आकलन करना और अंतरों को उजागर करना।

fo'k"krk,a

- माइक्रो स्तर पर सूचनाएं एकत्र करने के लिए चार अन्तर्सम्बन्धी घटों वाला मैट्रिक्स;
    1. सामाजिक आर्थिक गतिविधि प्रोफाईल (कौन, क्या, कहाँ, कब और कितनी देर तक करता है);
    2. पहुँच और नियंत्रण प्रोफाईल (संसाधनों और लाभों तक किसमी पहंच और नियंत्रण);
    3. प्रभाव डालने वाले घटकों का विश्लेषण (जेंडर विभेदीकरण को प्रभावित करने वाले अन्य घटक, पूर्व और वर्तमान के प्रभाव, अवसर और बाधाएं);
    4. प्रत्येक अवस्था में पूछे जाने वाले प्रश्नों की चेक लिस्ट।

fuEufyf[kr dk fy, lokfèkd vuqdy

- कार्यक्रम अथवा नीति नियोजन के बजाय प्रोजेक्ट डिजाइन के लिए;
- एक जेंडर निरपेक्ष प्रवेश बिंदु जब जेंडर संबंधों को देखने का प्रतिरोध करने वालों के साथ काम कर रहे हों;
- आधारभूत आंकड़े एकत्र करने के लिए।

- व्यावहारिक
- श्रम के लैंगिक विभाजन के बारे में सूचनाएं एकत्र करना और व्यवस्थित करना – यह महिलाओं के कार्य को दर्शाता है;
- संसाधनों तक पहुँच एवं नियंत्रण के बीच भेद करता है;
- माइक्रोस्तर (सूक्ष्म स्तर) पर प्रोजेक्ट बनाने के लिए उपयोगी;
- विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में आसानी से अपनाया जा सकता है;
- तुलनात्मक दृष्टि से कम खतरनाक क्योंकि इसका अधिक ध्यान तथ्यों को संग्रहित करने पर है।

dfe;k

- ढांचा अन्य प्रकार की असमानताओं जैसे वर्ग, जाति और नस्ल का उल्लेख नहीं करता;
- ढांचा गतिहीन है और समय के साथ परिवर्तन का परीक्षण नहीं करता;
- महिलाओं और पुरुषों की अन्तर्सम्बन्धी गतिविधियों के बजाय अलग गतिविधियों को देखता है;
- व्यावहारिक और रणनीतिक आवश्यकताओं का दृढ़ विभाजन व्यावहार में हमेशा सहायतक नहीं होता;

3. tUMj fo'y"k.k eSfVªDl (GAH)

जेंडर विश्लेषण ढांचे को 1993 में रानी पार्कर ने मूलाधार पर कार्य करने के लिए उपयुक्त ढांचे की आवश्यकता को पूरा करने के लिए विकसित किया था। पार्कर इस ढांचे का क्या, क्यों, कौन, कब और कैसे जैसे महत्वपूर्ण प्रश्नों का प्रयोग करके वर्णन करती हैं।

क्या : जेंडर विश्लेषण मैट्रिक्स (GAM) सामुदायिक स्तर पर विकास प्रोजेक्टों के जेंडर विश्लेषण के लिए एक उपकरण है। यह जेंडर अंतरों की पहचान एवं विश्लेषण के लिए समुदाय आधारित तकनीक प्रदान करके महिलाओं और पुरुषों पर विकास हस्तक्षेपों के भिन्न प्रभावों को निर्धारित करने में सहायता करता है।

क्यों : जेंडर विश्लेषण मैट्रिक्स (GAM) का प्रयोग विकास हस्तक्षेपों के भिन्न प्रभावों को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह भिन्न प्रभावों को अलग–अलग कर देता है ताकि विकास कार्यकर्ता इन समूहों की आवश्यकताओं और हितों को समायोजित कर सकें।

कौन : समुदाय में से एक प्रतिनिधि समूह विश्लेषण करता है। जहाँ संभव हो वहाँ समूह में महिलाओं और पुरुषों की संख्या बराबर होनी चाहिए। यदि सांस्कृतिक कारणों से महिलाओं और पुरुषों को साथ कार्य करने की अनुमति न हो तो प्रत्येक जेंडर को अलग से मिलना चाहिए और विश्लेषण को दूसरे जेंडर के साथ सांझा करना चाहिए।

कब : जेंडर विश्लेषण मैट्रिक्स का योजना बनाते समय यह जानने के लिए प्रयोग किया जा सकता है कि क्या सक्रिय जेंडर प्रभाव, कार्यक्रम के लक्ष्यों के लिए उपयोगी एवं अनुरूप हैं या नहीं। इसका प्रयोग डिजाइन करते समय भी किया जा सकता है जहाँ जेंडर की सोच प्रोजेक्ट के डिज़ाइन को भी बदल सकती है। मानीटरिंग के लिए जेंडर विश्लेषण मैट्रिक्स (GAM) का प्रयोग आवधिक रूप में अपेक्षित प्रभावों को सत्यापित करने तथा अनापेक्षित परिणामों को पहचानने के लिए किया जा सकता है ताकि उन पर ध्यान दिया जा सके। मूल्यांकन के दौरान जेंडर विश्लेषण मैट्रिक्स जेंडर प्रभावों को निर्धारित करने में सहायता कर सकते हैं। जेंडर विश्लेषण मैट्रिक्स का निम्नलिखित तरीके से प्रयोग किया जा सकता है –

प्रोजेक्ट का कुछ वाक्यों में वर्णित किया जा सकता है –

- प्रोजेक्ट, जिन समूहों का लाभ पहुँचाना चाहता है – उनकी पहचान की जा सकती है। विशिष्ट सूचना महत्वपूर्ण है।
- ऐसे समूहों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए मैट्रिक्स की पुनर्संरचना की जानी चाहिए। मैट्रिक्स को सरलतम रखना चाहिए। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है ताकि मैट्रिक्स व्यापक आंकड़ों का डाटाबेस प्रदान करने के बजाय विश्लेषण प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाए।
- महिलाओं के समय, श्रम, भौतिक संसाधनों एवं सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों पर प्रोजेक्ट के सक्रिय प्रभावों के विषय में प्रश्न पूछ कर मैट्रिक्स को भरा जा सकता है। आगे यही प्रश्न पुरुषों, परिवारों और समुदायों के लिए पूछे जाने चाहिए।
- मैट्रिक्स में दी गई श्रेणियों को आगे और आवश्यकतानुसार उपविभाजित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए श्रम घरेलू, उत्पादक श्रम (अपना व्यापार), वैतनिक श्रम (काम के लिए दिया जाने वाला वेतन) और अवैतनिक श्रम (सामाजिक आवश्यकता के लिए किया गया कार्य) हो सकता है। इस वर्ग अथवा श्रेणी के लिए प्रश्न होगा कि प्रोजेक्ट महिलाओं के घरेलू श्रम, उत्पादक श्रम, वैतनिक श्रम और अवैतनिक श्रम पर क्या प्रभाव डालेगा? निर्धारित आयु समूह, वर्ग, नस्लीय समूह अथवा अन्य प्रासंगिक वर्गों को (प्रोजेक्ट के लक्ष्यों और समुदाय के अनुरूप) शामिल किया जा सकता है।
- यदि समूह के सदस्यों के बीच प्रभाव के बारे में असहमति हो तो सभी विारों को नोट किया जा सकता है (इसको भविश्य के वास्तविक परिणामों के आधार पर हल किया जा सकता है)। सभी खानों के भरे जाने के बाद प्रत्येक बाक्स में अधिसूचित प्रभाव को कार्यक्रम के लक्ष्यों के अनुसार वांछित (उपयोगी) अथवा अवांछित निर्धारित किया जा सकता है और उन्हें (+) अथवा (–) चिह्नित किया जा सकता है।
- इन चिह्नों का प्रयोग ऐसे क्षेत्रों को दर्शाने के लिए किया जा सकता है जहाँ अपेक्षित परिणाम कार्यक्रम के लक्ष्यों के अनुरूप हैं तथा ऐसे क्षेत्र जो कार्यक्रम के लक्ष्यों के अनुरूप नहीं हैं। सकल अथवा कुल प्रभाव ज्ञात करने के लिए इन चिह्नों को नहीं जोड़ना चाहिए।
- प्रोजेक्ट में भाग न लेने वालों पर होने वाले प्रभावों पर विचार किया जाना चाहिए। क्या उन्हें लाभ होगा अथवा हानि। ऐसी कौन सी व्यवस्था की जा सकती है कि प्रोजेक्ट में भाग न लेने वालों पर ऋणात्मक प्रभाव को रोका जा सके।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

	Labour	Time	Resources	Culture
Adolescent Girls				
Other women				
Men				
Household				
Community				

- मानीटरिंग और मूल्यांकन के समय विश्लेषण की समीक्षा होनी चाहिए तथा अपेक्षित प्रभाव की पहले कुछ महीने – महीने में कम से कम एक बार जांच करनी चाहिए और उसके बाद प्रत्येक तीन महीने में एक बार जांच करनी चाहिए। अनापेक्षित परिणामों की पहचान करनी चाहिए ताकि उन पर ध्यान दिया जा सके।

lkj.kh 3-1 % tsMj fo'ys"k.k eSfVªDl dk mnkgj.k

	श्रम	समय	संसाधन	संस्कृति
किशोरियाँ				
अन्य महिलाएं				
पुरुष				
परिवार				
समुदाय				

यह ढांचा सहभागी नियोजन (पार्कर 1993) की वास्तविकता और विचारधारा से अत्यधिक प्रभावित है। यह इस धारणा पर आधारित है कि (i) जेंडर विश्लेषण के लिए आवश्यक सारी जानकारी विश्लेषण के अंतर्गत आने वाले लोगों में ही निहित होती है। (ii) जेंडर विश्लेषण को समुदाय से बाहर के विशेषज्ञों की तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता मात्रा सुविधा प्रदाता से अधिक नहीं होती। इस दृष्टि से यह (रुपान्तरणकारी) परिवर्तनकारी अधिगम का उपकरण है जिसका प्रयोग स्वयं समुदाय द्वारा जेंडर भूमिकाओं तथा समाज द्वारा महिलाओं और पुरुषों के श्रम को दिए गए भिन्न मूल्यों के बारे में आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करके विश्लेषण की प्रक्रिया को शुरू करने के लिए किया जाता है।

volj

- समुदाय आधारित विकास कार्यों के लिए विशेष रूप से डिजाइन किया गया है
- सरल और व्यवस्थित; सुपरिचित वर्गों और अवधारणाओं का प्रयोग किया जाता है
- रुपान्तरणकारी एवं तकनीकी
- सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से उच्चतम विश्लेषण को पुश्ट करना
- महिलाओं और पुरुषों के बीच जेंडर संबंधों पर विचार करने के साथ–साथ प्रत्येक वर्ग द्वारा अलग से अनुभव किए गए अनुभवों की परीक्षण करता है।
- किसी विशेष हस्तक्षेप के अनुकूल विश्लेषण के स्तर बढ़ाए जा सकते हैं
- अमूर्त संसाधनों को शामिल करता है
- समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को पकड़ने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।
- प्रतिरोध का पूर्वानुमान लगाने में सहायक है तथा खतरों से घिरे लोगों को क्या सहायता दी जानी चाहिए।
- पुरुषों को एक जेंडर के रूप में शामिल करता है जिसे पुरुषों को लक्षित हस्तक्षेपों में प्रयोग किया जा सकता है।
- सहभागी प्रभाव आकलन के लिए प्रयोग किया जा सकता है
- आंकड़ों को शीघ्र एवं तीव्रता से एकत्र करने में

dfe;k¡

- एक अच्छे सुविधा प्रदाता की आवश्यकता होती है
- कुछ घटक खो सकते हैं क्योंकि प्रत्येक वर्ग के कई पक्ष होते हैं
- समय के साथ हुए परिवर्तनों पर विचार के दृष्टिगत दोहराव के लिए सावधानी की आवश्यकता
- स्थूल एवं सांस्थानिक विश्लेषण को शामिल नहीं किया जाता
- समुदाय को परिभाषित करने में कठिनाइयाँ
- टाधीनता प्रायः स्पष्ट नहीं होती
- श्राशि देने वालों तथा समुदाय के सदस्यों के बीच शक्ति संबंधों के कारण भ्रमित करने वाले परिणामों का खतरा

4. lkekftd lca/k <kapk % uSyk dchj

सामाजिक संबंधों के ढांचे को नैला कबीर ने इन्स्टीच्यूट ऑफ डेवेल्पमेंट स्टड़ीज़ ससेक्स (इंग्लैंड) में तैयार किया था जो स्पष्ट रूप से नारीवादी जड़ों से संबंधित है। यह पहले के उपागमों से अधिक व्यापक था जिसमें परिवार और घर को सामाजिक संबंधों के ताने–बाने में खोजकर उन्हें समुदाय, बाजार और राज्य के सथ जोड़ा गया है। कबीर लिखती हैं कि मोज़र द्वारा बनाया गया तिहरी भूमिका वाला माडल इस तथ्य के प्रति अपर्याप्त ध्यान देता है कि अधिकांश संसाधनों को भिन्न प्रकार के सांस्थानिक स्थानों (घरों, बाज़ारों, राज्यों और समुदायों) में पैदा किया जा सकता है ताकि उन्हीं संसाधनों को अति भिन्न सामाजिक संबंधों के माध्यम से पैदा किया जा सके। इसके विपरीत सामाजिक संबंध ढांचा परिणाम स्वरूप प्राप्त विश्लेषण को यह दर्शाने के लिए प्रयुक्त करने की छूट देता है कि किस प्रकार जेंडर एवं अन्य असमानताएं संरचनात्मक एवं सांस्थानिक कारकों के अंतर्गत निर्मित और पुनरुत्पादित की जाती है तथा फिर उनको महिलाओं पर प्रतिबंध लगाने वाले कारकों एवं घटकों को बदलने के लिए सक्षम बनाने हेतु नीतियाँ निर्मित करने के लिए प्रयोग करने की इजाजत देता है।

सामाजिक संबंध ढांचा दावा करता है कि :

- विकास; मानव कल्याण में वृद्धि करने की प्रक्रिया है (जिसमें उत्तरजीविता, सुरक्षा और स्वायतता शामिल होते हैं) न कि केवल आर्थिक वृद्धि और उत्पादन में वृद्धि मात्र है।
- सामाजिक संबंध लोगों की भूमिकाओं, अधिकारों, जिम्मेवारियों और दूसरों पर दावों को निर्धारित करते हैं।
- संस्थाएं, जेंडर असमानताओं सहित अन्य सामाजिक असमानताओं को पैदा करने तथा बनाए रखने के लिए कुंजी है। चार प्रमुख संस्थाएं हैं – राज्य, बाजार, समुदाय और परिवार। इनके अपने नियम (चीज कैसे घटित होती हैं), संसाधन (क्या प्रयोग और क्या उत्पादित किया जाता है), लोग (कौन आया/गया कौन क्या करता है), गतिविधियाँ (क्या किया जाता है) और शक्ति (कौन निर्णय लेता है और किसके हित पूरे किए जाते हैं) होती है जो मिलकर सामाजिक संबंधों को बनाते हैं।
- संस्थाओं की कार्यशैली भिन्न–भिन्न जेंडर नीतियों को दर्शाती है। जेंडर नीतियाँ, जेंडर मुद्दों को पहचानने तथा उन पर ध्यान देने की सीमा के कारण एक दूसरे

से भिन्न होती है। जैसे जेंडर के प्रति अंधी नीतियाँ, जेंडर के प्रति जागरूक नीतियाँ, जेंडर निरपेक्ष नीतियाँ और जेंडर पुनर्वितरणीय नीतियाँ

- नियोजन के लिए विश्लेषण को यह परीक्षण करने की जरूरत होती है कि क्या निकटवर्ती, अंतर्निहित और/अथव ढांचात कारक समस्याओं के लिए उत्तरदायी हैं और उनके शामिल लोगों पर क्या प्रभाव हैं।

lkekftd lacaèk mikxe ds mnns';k esa fuEufyf[kr 'kkfey gSa%

- संसाधनों, जिम्मेवारियों और शक्ति के वितरण में जेंडर असमानताओं का विश्लेषण करना
- लोगों की बीच संबंधों, उनके संसाधनों से संबंध तथा गतिविधियों एवं संस्थाओं के माध्यम से इनमें बदलाव लाने का विश्लेषण करना
- विकास के अंतिम लक्ष्य के रूप में मानव कल्याण पर जोर देना

fo'ks"krk,¡

- पाँच अनिवार्य अवधारणाएं

1. विकास मानव कल्याण में वृद्धि कर रहा है (उत्तरदीविता, सुरक्षा, स्वायतता)
2. सामाजिक संबंध विश्लेषण : मूर्त एवं अमूर्त संसाधनों के संदर्भ में लोगों के स्थित होने का तरीका
3. सांस्थानिक विश्लेषण : प्रमुख संस्थानों जैसे राज्य, बाजार, कानूनी, परिवार/रक्त संबंध समूहों का संस्थानों के पक्षों जैसे नियमों, गतिविधियों, लोगों, शक्ति इत्यादि का विश्लेषण करना
4. सांस्थानिक जेंडर नीति विश्लेषण
5. अन्तर्निहित और संरचनात्मक कारणों तथा उनके प्रभावों का विश्लेषण

lokfèkd vuqdwy

- इसको विकास नियोजन के सभी रूपों में प्रोजेक्ट नियोजन से लेकर नीति नियोजन तक में प्रयोग किया जा सकता है।

mi;ksxh@[kfc;k¡

- निर्धनता की एक व्यापार तस्वीर प्रस्तुत करता है
- विकास की सोच में जेंडर को केन्द्र में रखने की अवधारणा न कि केवल एक जुड़ाव
- नियोजन और नीतियों के विकास के लिए भिन्न–भिन्न स्तरों पर प्रयुक्त
- माइक्रो और मैकरो विश्लेषण को परस्पर जोड़ता है
- असमानताओं जैसे जाति, वर्ग, नस्ल आदि के बीच की अन्तर्क्रियाओं को उजागर करता है।
- विश्लेषण को संस्थाओं के इर्द गिर्द केन्द्रित करता है और उनके राजनीतिक पक्षों को उजागर करता है।

- गतिशीलता – गरीबी तथा सशक्तीकरण की प्रक्रियाओं को उजागर करने का कार्य करता है।

dfe;k¡

- यह जटिल प्रतीत होता है।
- सभी असमानताओं पर ध्यान देने के कारण यह जेंडर को अन्य विश्लेषणात्मक वर्गों में विभाजित कर सकता है।
- लोगों की परिवर्तन लाने की क्षमता को नजरांदाज कर सकता है।
- बड़े संस्थानों के प्रभाव को बढ़ा चढ़ाकर दर्शा सकता है।

5- efgyk l'kDrhdj.k <kpk

महिला सशक्तीकरण ढांचे को Sara Hlupekil Longwe ने विकसित किया था जो लुसाका (जर्मनी) की जेंडर विशेषज्ञ थी। उसका माडल व्यापक रूप से राजनीतिक था जिसका तर्क था कि महिलाओं की गरीबी उनके दमन और शोषण के कारण है (उत्पादन की कमी के बजाय) और उनकी निर्धनता को कम करने के लिए महिलाओं का सशक्तीकरण होना चाहिए।

इस ढांचे का लक्ष्य योजना बनाने वालों को महिलाओं की समानता और सशक्तीकरण का व्यावहारिक अर्थ समझने में सहायता करना तथा यह निर्धारित करना है कि कोई विकास हस्तक्षेप किस हद तक अधिक सशक्तीकरण में सहयोग देता है।

यह उपकरण प्रोजेक्ट के डिज़ाइन अथवा वर्गीय कार्यक्रम के तत्वों का यह निर्धारित करने के लिए परीक्षण करता है कि क्या इनसे समानता के पाँच भिन्न स्तरों परनकारात्मक अथवा उदासीन अथवा सकारात्मक प्रभाव पड़ता है अथवा नहीं। महिला सशक्तीकरण ढांचे का उद्देश्य महिलाओं को उत्पादन के घटकों पर समान नियंत्रण बनाने में सक्षम करके तथा विकास प्रक्रिया में उनकी समान रूप से भागीदारी करने द्वारा महिला सशक्तीकरण को प्राप्त करना है।

fo'ks"krk,¡

- यह ढांचा समानता के पाँच श्रेणीबद्ध स्तर प्रस्तुत करता है। (उच्चतर स्तर अधिक सशक्त के लिए है)
  1. नियंत्रण : उत्पादन के घटकों पर निर्णय लेने में समान नियंत्रण
  2. सहभागिता : नीति निर्माण, नियोजन और प्रशासन से संबंधित निर्णय निर्माण की प्रक्रियाओं में समान भागीदारी
  3. नैतिक होना : जेंडर भूमिकाओं की समान समझ प्राप्त करना तथा श्रमक ा सर्वसम्मत एवं न्यायपूर्ण लैंगिक विभाजन
  4. पहुँच : कानून में विभेदकारी प्रावधानों को हटाकर उत्पादन के घटकों तक समान पहुँच बनाना
  5. कल्याण : भौतिक कल्याण (जैसे भोजन, आय, चिकित्सकीय देखभाल इत्यादि) की सामग्री पर समान पहुँच रखना

- यह ढांचा महिलाओं के मुद्दों और चिंताओं के बीच भेद करने के साथ साथ प्रोजेक्ट डिजाइन में महिलाओं के मुद्दों की मान्यता के तीन स्तरों की पहचान करता है।

lokfèkd mi;kxh

- यह विश्लेषण के माइक्रो (प्रोजेक्ट) से लेकर मैकरो (देश की रणनीति) स्तर तक उपयोगी है।
- ऐसे क्षेत्र में उपयोगी है जहाँ विशेष रूप से महिलाओं के सशक्तीकरण पर पूरा ध्यान दिया जाता है।

mi;kfxrk@[kfc;k

- इस ढांचे को मान्यता के स्तरों का प्रोफाइल बनाने तथा क्षेत्रकों में समानता के स्तरों का प्रोफाइल तैयार करने में प्रयोग किया जा सकता है।
- यह व्यावहारिक और रणनीतिक जेंडर आवश्यकताओं की धारणा को प्रगतिशील श्रेणीबद्ध (पदानुक्रम) में परिवर्तित करता है।
- यह सशक्तीकरण को स्पष्ट रूप से विकास का आवश्यक तत्व मानता है।
- सशक्तीकरण के आधार पर आधारित हस्तक्षेपों के आकलन को संभव बनाता है।
- इसका मजबूत (सुदृढ़) राजनीतिक परिप्रेक्ष्य है जो वृतियों को बदलने का लक्ष्य रखता है।

dfe;k

- समानता के स्तरों को दृढ़ रूप से श्रेणीबद्ध मानने की कल्पना पर प्रश्न चिह्न लगे हैं।
- ढांचे के प्रोफाइल निश्क्रिय हैं और समय के साथ हुए बदलावों पर ध्यान नहीं देते
- जेंडर समानता पर फोकस करके केवल अधिकारों और दायित्वों के बीच अंतसंबंधों पर ही ध्यान देता है
- अन्य प्रकार की असमानताओं की अवहेलना करता है।

ckèk iz'u 2

ukV : i) प्रश्नों के उत्तर नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ii) अपने उत्तर की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. आमतौर पर प्रयोग किए जाने वाले जेंडर विश्लेषण ढांचे कौन से हैं?

....

....

....

2. जेंडर विश्लेषण मैट्रिक्स की उपयोगिता एवं कमियाँ स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

3-5 lkjka'k

इस इकाई में हमने जेंडर विश्लेषण के विभिन्न ढांचों का परीक्षण किया है। जेंडर विश्लेषण ढांचे का विश्लेषण करने से पूर्व जेंडर विश्लेषण के घटकों पर चर्चा की गई है। प्रत्येक ढांचे की अपनी खूबियाँ हैं। योजना बनाने वाले योजना के उद्देश्य और स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप किसी भी ढांचे को अपना सकते हैं। उदाहरण के लिए मोज़र ढांचे का उद्देश्य महिलाओं को आधीनता से मुक्त करवाना है। यदि योजना बनाने वाले इसको योजना का वैध उद्देश्य स्वीकार नहीं करें तो सुदृढ़ प्रतिरोध होगा। इसी प्रकार यदि योजना बनराने वाले प्रोजेक्ट में नियोजन के उपकरण के रूप में हार्वर्ड एनालिटिकल ढांचे का प्रयोग करते हैं तो उन्हें उन घटकों पर विचार करना होगा जो जेंडर संबंधों को आकार देते हैं तथा महिलाओं और पुरुषों को अलग–अलग अवसर तथा बाधाएं प्रदान करते हैं।

3-6 'kCnkoyh

Tangible and intangible resources: The resources are classified into tangible and intangible. Tangible resources include physical assets, such as buildings, parks, ponds, grazing places, water taps and natural and common properties. Intangible resources include skills and knowledge about productive and managerial processes. Thus tangible and intangible resources are important for gender analysis.

Access: In the context of material, human and intangible resources, access refers to the opportunity available to use the resources.

Control: Control over a resource is the bargaining power to define or determine the use of that resource.

Rule of law: The rule of law is a legal maxim that states no person is immune to law, and no one can be punished by the government except for a breach of the law. The phrase has been used since the 17th century, but the concept can be traced to ancient Greece. Aristotle said, "Law should govern".

Formal and substantive equality: Formal equality is the based on the notion of the 'sameness' of women and men. Substantive equality, on the other hand, would require taking legislative account of the ways in which women are different from men, both in terms of biological capacities, as well as the socially constructed disadvantages women face relative to men.

3-7 ckèk i:'uk d: mÙkj

Ckkèk i:'u 1

1. असंयुक्त लैंगिक आंकड़ों और सूचनाओं का विश्लेषण, भूमिकाओं और जिम्मेवारियों का आकलन, श्रम का विभाजन, संसाधनों तक पहुँच एवं नियंत्रण पर विचार, निर्णय निर्माण के प्रतिमानों का परीक्षण, आंकड़ों का जेंडर परिप्रेक्ष्य में परीक्षण (महिलाओं और पुरुषों की जेंडर भूमिकाओं और संबंधों के परिप्रेक्ष्य में।

2. संसाधनों तक पहुँच एवं नियंत्रण पर विचार : संसाधनों तथा सेवाओं तक किनकी पहुँच तथा नियंत्रण है। महिलाओं और पुरुषों के बीच संसाधनों के वितरण के ढंग का परीक्षण करते समय पहुँच और नियंत्रण की अवधारणा के बीच अंतर करना

अत्याव यक है। पहुँच का अर्थ है कि कोई व्यक्ति अथवा समूह किसी संसाधन का प्रयोग कर सकता है (जैसे फसल पैदा करने के लिए भूमि) जबकि नियंत्रण का अर्थ है कि कोई व्यक्ति अथवा समूह यह निर्णय कर सकता है कि संसाधन का प्रयोग अथवा अनुप्रयोग कौन करेगा। (जैसे भूमि बेचना और लाभ प्राप्त करना)। पुरुषों और महिलाओं की परिसम्पतियों को देखिए जिसमें मानवीय पूंजी (जैसे शिक्षा), आर्थिक संपति, प्राकृतिक संपति (जैसे भूमि) और सामाजिक संपति जैसे सामाजिक ताना–बाना, समय इत्यादि।

Ckkèk i'u 2

1. हार्वर्ड एनालिटिकल ढांचे को जेंडर भूमिका ढांचा भी कहा जाता है मोज़र जेंडर नियोजन ढांचा, जेंडर विश्लेषण मैट्रिक्स, महिला सशक्तीकरण ढांचा तथा सामाजिक संबंध ढांचा अथवा उपागम।

2. यह विशेष रूप से समुदाय आधारित विकास कार्यों के लिए निर्मित किया गया है। सरल और व्यवस्थित है। प्रचलित श्रेणियों और अवधारणाओं का प्रयोग करता है जो परिवर्तनीय तथा तकनीकी हैं, सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से उच्चतम विश्लेषण को दर्शाता है, महिलाओं और पुरुषों के बीच जेंडर संबंधों पर विचार करता है, तथा प्रत्येक श्रेणी द्वारा अनुभव किए गए अनुभवों का परीक्षण करता है। किसी हस्तक्षेप के अनुरूप विश्लेषण के स्तर जोड़े जा सकते हैं, इसमें अमूर्त संसाधनों को शामिल किया जाता है, समय के साथ हुए बदलावों को पकड़ने के लिए प्रयोग किया जा सकता है, प्रतिरोध का पूर्वानुमान लगाने में सहायता करता है, खतरों से घिरे लोगों को क्या सहायता दी जा सकती है –? विचार करता है – पुरुषों को एक जेंडर के रूप में शामिल करता है तथा पुरुषों पर लक्षित हस्तक्षेपों के लिए प्रयोग किया जा सकता है, सहभागिता के प्रभाव के आकलन और आंकड़ों के तीव्र संग्रहण के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

dfe;k

एक अच्छे सुविधा प्रदाता की जरूरत होती है। कुछ घटक खो सकते हैं क्योंकि श्रेणियों के अनेक पक्ष होते हैं। समय के साथ हुए बदलावों पर विचार करने के लिए दोहराव में सावधानी की आवश्यकता है, समुदाय के सदस्यों पर ध्यान नहीं देता, मैकरो तथा सांस्थानिक विश्लेषण बहिष्कृत करता है, समुदाय को परिभाषित करने में मठिनाइयाँ, आधीनता प्रायः स्पष्ट नहीं होती, राशि देने वालों तथा सामुदायिक सदस्यों के बीच शक्ति संबंधों के कारण भ्रमित करने वाले परिणामों का खतरा।

3-8 mi;kxh iLrd

Overholt, C., M. Anderson, K. Cloud, and J. Austin, (1985), **Gender Roles in Development Projects: Cases for Planners.** West Hartford, CT: Kumarian Press.

Rao, Aruna, Mary B. Anderson, and Catherine Overholt (1991), **Gender Analysis in Development Planning: A Case Book**. West Hartford, CT: Kumarian Press.

Moser, Caroline O.N. (1993) **Gender Planning and Development: Theory, Practice, and Training**. London: Routledge.

Parker, Rani, (1993) "**Another Point of View: A manual on Gender Analysis Training for Grassroots Workers."** New York: UNIFEM. Kabeer, Naila.

(1994). **Reversed Realities: Gender Hierarchies in Development Thought. London**, UK: Verso.

Gender Reference Guide http://www.snvworld.org/gender/gender-mainstreaming_analysis_1.htm,

Candida March, Ines Smyth, and Maitrayee Mukhopadhyay, (1999), **A Guide to Gender- Analysis Frameworks,** London: Oxfam Publishing

International Labour Organization, "Online Gender Learning and Information Module."

Netherlands Development Organization, "Gender Reference Guide."

3-9 ckèk iz'u ¼euu ,oa vH;kl dk fy,½

1) जेंडर विश्लेषण ढांचा क्या है? उदाहरण देकर व्याख्या कीजिए।

2) हार्वर्ड एनालिटिकल ढांचे को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

3) नैला कबीर द्वारा विकसित सामाजिक संबंध ढांचे तथा Longwe द्वारा विकसित महिला सशक्तीकरण ढांचे पर निबंध लिखिए।

bdkbZ 4 tsaMj fo'ys"k.k dk mikxe

bdkbZ dh :ijs[kk

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ

4.4 जेंडर रचनाएं

4.5 अच्छे जेंडर विश्लेषण की अनिवार्यताएं

- 4.5.1 जेंडर संबंधों में महिलाओं की स्थिति
- 4.5.2 लैंगिकता और गतिशीलता का विश्लेषण
- 4.5.3 महिलाओं की आवश्यकताएं/प्राथमिकताएं
- 4.5.4 जेंडर विश्लेषण के लिए शोध के तरीकों की अनुकूलता
- 4.5.5 जेंडर विश्लेषण के आवश्यक तरीके
- 4.5.6 जीवन की गुणवत्ता

4.6 जेंडर विश्लेषण के आधार पत्थर

- 4.6.1 सहभागिता
- 4.6.2 कार्रवाई
- 4.6.3 सशक्तीकरण

4.7 स्थिति का प्रतिभागी मूल्यांकन

- 4.7.1 कार्रवाई शोध
- 4.7.2 फोकस समूह पर चर्चाएं
- 4.7.3 साक्षात्कार
- 4.7.4 वर्णन
- 4.7.5 केस अध्ययन
- 4.7.6 जेंडर विश्लेषण तरीकों को लागू करने के मार्गदर्शी सिद्धांत

4.8 जेंडर विश्लेषण हेतु लिए जाने वाले कदम

4.9 हमें जेंडर विश्लेषण का प्रयोग कब करना चाहिए

4.10 जेंडर विश्लेषण में किसको शामिल करना चाहिए

4.11 सहभागिता एवं कार्रवाई उन्मुख प्रक्रियाओं में जेंडर विश्लेषण के लिए प्रश्न

4.12 सहभागिता सुनिश्चित करना

4.13 कार्रवाई की गुणवत्ता के मापक

4.14 जेंडर विश्लेषण में अंतिम चरण

4.15 विश्लेषण के तरीके को चुनने हेतु चेक लिस्ट और इसके प्रयोग का मूल्यांकन करना

4.16 सारांश

4.17 शब्दावली

4.18 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.19 उपयोगी पुस्तकें

4.20 बोध प्रश्न (अभ्यास एवं मनन हेतु)

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

4-1 iLrkouk

जेंडर विश्लेषण के उपागमों का लक्ष्य संसाधनों के वितरण, विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति और हैसियत, संसाधनों तक पहुँच एवं नियंत्रण, श्रम पर महिलाओं के नियंत्रण, उनकी संस्थाएं और उनकी सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों में गतिशीलता में विद्यमान जेंडर असमानताओं के विश्लेषण के लिए तरीके विकसित करना होता है। यह इकाई भारत में समुदायों में जेंडर निर्माण के तरीकों के विश्लेषण से तथा विभिन्न तरीके प्रयोग करके जेंडर निर्माण के विश्लेषण करने से शुरू होती है।

4-2 mn~ns';

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- जेंडर के निर्माण में संलग्न पारम्परिक संस्थाओं की व्याख्या कर सकेंगे;
- जेंडर विश्लेषण की अनिवार्यताओं एवं आधार का परीक्षण कर सकेंगे; और
- जेंडर विश्लेषण के तरीकों, सहभागिता, शिक्षा और सशक्तीकरण के संदर्भ में गुणवत्ता मापकों को स्पष्ट कर सकेंगे।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

4-3 lkekftd&lkaLd`frd lanHkZ

जेंडर निर्माण के सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ को इससे संबद्ध संस्थाओं से समझा जा सकता है। परिवार का निर्माण करने के लिए विवाह एक आधारभूत पारम्परिक संस्था है। अन्य संस्थाएं जैसे समुदाय, धर्म इत्यादि इस जेंडर निर्माण में सहायक की भूमिका निभा रही हैं। प्रत्येक जेंडर विश्लेषण के शुरू करते ही यह सामान्य मान्यता मानी जाती है। हालांकि अन्य अनेक परिस्थितियों और संदर्भों में जरूरी नहीं कि पारम्परिक संस्थाएं ही जेंडर निर्माण की भूमिका निभाती है। उदाहरण के लिए स्कूल, कालेज, सार्वजनिक संस्थान, कार्पोरेट इत्यादि भी जेंडर निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहाँ जेंडर निर्माण में पितृतंत्र की भूमिका निभाते हैं। यहाँ जेंडर निर्माण में पितृतंत्र की भूमिका अधिक होती है। यद्यपि परिवार एक आदर्श रूप है परंतु इन आदर्श संस्थाओं में भी जेंडर भूमिकाओं को निर्मित करने में कुछ अन्य चीजें काम कर रही हैं। अतः जेंडर विश्लेषण को सभी रूपों पर विचार करना होता है।

4-4 tsMj jpuk,a

सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में विशेषतया भारत में परिवार, समुदाय तथा विभिन्न प्रकार की संस्थाओं का अस्तित्व जैसे जाति अथवा सांस्कृतिक समुदाय ऐसी संस्थाएं हैं जो महिलाओं और पुरुषों, दोनों के सामाजिक स्तर और जेंडर परिभाषाओं को परिभाषित करती हैं। जब कोई इस संदर्भ में जेंडर विश्लेषण करने का प्रयास करता है तो उसे यह पहचानना होता है कि पुरुष और महिलाओं की बचपन पोशित करने, विवाह, उत्सवों, परिवार, धार्मिक अनुश्ठानों इत्यादि के संदर्भ में भूमिकाएं किस प्रकार निर्मित होती हैं। यह भूमिकाएं अलग–अलग समुदायों अथवा जातियों में अलग–अलग हो सकती हैं। उदाहरण के लिए हिन्दु धर्म में महिलाओं को मासिक धर्म (रजस्वला) की स्थिति में मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं होती परंतु अन्य धर्मों जैसे इसाई धर्म, बौद्ध अथवा जैन धर्म में महिलाएं पूजा स्थलों में प्रवेश कर सकती हैं।

जेंडर विश्लेषण करने वाले को सुनिश्चित करना होता है कि :

- सारी जानकारी और आंकड़े लोगों के लक्षित समूह के अंदर ही उपलब्ध होने चाहिए।
- पदों, संबंधों और स्थितियों को परिभाषित करने के मामले में प्रतिभागी; विश्लेषण के साथ समान भूमिका निभाते हैं।
- विश्लेषण की प्रक्रिया सम्मिलित लोगों को सच्ची जीवन गाथाओं के माध्यम से सशक्त करती है और उनमें बदलाव लाती है।

ckDl 1 % efgykvk dk dk;

भारत के हिमालय क्षेत्र में किए गए एक माइक्रो अध्ययन ने महिलाओं के योगदान के विस्तार को बखूबी उजागर किया है जिसमें पाया गया है कि एक हेक्टेयर के खेत (फार्म) में बैलों की जोड़ी 1064 घंटे, एक पुरुष 1212 घंटे तथा एक महिला वर्ष में 3485 घंटे काम करती है।

आन्ध्र प्रदेश में 1996 में Mies 'माइज़' ने पाया कि एक महिला कृषि मज़दूर का कृषि के दिनों में कार्य दिवस प्रातः 4 से रात्रि 8 बजे तक पंद्रह घंटे का होता है जिसमें केवल एक घंटा बीच में आराम का होता है। उसके पुरुष साथी का कार्य दिवस प्रातः 5 से 10 बजे या 11 बजे तक और शाम को 3 से 5 बजे तक केवल 7–8 घंटे का होता है।

पुरुषों और महिलाओं द्वारा कृषि कार्य पर खर्च किए गए समय एवं ऊर्जा पर किए गए एक अन्य अध्ययन (बाटलीवाला 1992) में पाया गया कि प्रत्येक परिवार में दिए गए कुल घंटों में महिलाओं का योगदान 53% होता है और उनके मुकाबले पुरुषों का योगदान 31% होता है।

यदि किचन, गार्डन और पोल्ट्री, खाद्यानों को पीसना, पानी और इंधन इकट्ठा करना इत्यादि सभी कार्यों का हिसाब किया जाए तो 88% ग्रामीण घरेलू महिलाओं तथा 66% शहरी घरेलू महिलाओं को आर्थिक रूप से उत्पादक के रूप में माना जा सकता है।

ckèk i:'u 1

ukV : i) प्रश्नों के उत्तर नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।
ii) अपने उत्तर की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. समाज में जेंडर निर्माण को संचालित करने वाली पारम्परिक संस्थाएं कौन सी हैं? आप इन संस्थाओं को जेंडर विश्लेषण करने में जिस रूप में लेते हैं, उस का एक संक्षिप्त विवरण लिखिए।

.....

.....

.....

4-5 vPN: t:Mj fo'y"k.k dh vfuok;:rk,:

निम्नलिखित उपखंड एक अच्छे जेंडर विश्लेषण की अनिवार्यताओं को स्पष्ट करेगा। महिलाओं की स्थिति को निम्नलिखित प्रश्न पूछ कर विश्लेषित किया जा सकता है। इन प्रश्नों को निम्नलिखित विभिन्न उप खंडों के अंतर्गत सूचीबद्ध किया गया है।

4-5-1 tsMj lacaèkksa esa efgykvksa dh fLFkfr

- महिलाओं को किस प्रकार आधीन अवस्था में रखा जाता है जब उनकी तुलना परिवार, समुदाय और समाज में पुरुषों से की जाती है।
- महिलाओं का अपने समुदाय से क्या संबंध है? समुदाय निर्माण प्रक्रिया में वे कौन से तरीके से संलग्न रहती हैं? यह पुरुषों की संलग्नता से किस प्रकार भिन्न है?
- समुदाय के संसाधन किस प्रकार नियंत्रित किए जाते हैं? ऐसे कौन से तरीके हैं जिनके माध्यम से महिलाएं भूमि, विरासत, सांझे संपति संसाधनों तक पहुँच बनाती हैं? ऐसे कौन से तरीके हैं जिनसे किसी विशेष संदर्भ में पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानता को बनाए रखा जाता है।

4-5-2 ySafxdrk vkSj xfr'khyrk dk fo'ys"k.k

- ऐसे कौन से तरीके हैं जिनके माध्यम से महिलाओं की कामुकता को पुरुष नियंत्रित करते हैं और बदले में पुरुषों की कामुकता को महिलाएं नियंत्रित करती हैं।
- महिलाओं और पुरुषों को कामुकता के आधार पर कौन से खतरे माने जाते हैं तथा उत्पादन और प्रजनन क्षेत्रों से जुड़े सारे पक्ष कौन से हैं?
- महिलाओं और पुरुषों की श्रम गतिविधियों और जिम्मेवारियों के लैंगिक विभाजन की वर्तमान प्रकृति क्या है?
- संसाधनों, पाबंदियों और समाज में उपलब्ध लाभों के संबंध में पुरुष और महिलाओं की स्थिति क्या है?

4-5-3 efgykvksa dh vko';drk,sa@izkFkfedrk,sa

- क्या पुरुषों की प्राथमिकताओं और महिलाओं की प्राथमिकताओं में कोई अंतर है? यदि हाँ तो वे अंतर क्या हैं?
- महिलाओं की व्यावहारिक और रणनीतिक आवश्यकताएं क्या हैं तथा उन्हें प्राप्त करने में सामने आने वाली बाधाओं की परिभाषा क्या है?
- महिलाओं के सशक्तीकरण और अधिक समानता के लिए अवसरों की पहचान कैसे की जा सकती है?
- इस संदर्भ में कौन सा सहायक पर्यावरण अस्तित्व में है? जैसे परिवार / समुदाय / समाज इत्यादि।
- महिलाओं के मुद्दों को कैसे हल किया जाएगा जिनके माध्यम से समानता और न्याय को प्राप्त किया जाता है।
- व्यावहारिक और रणनीतिक जेंडर आवश्यकताओं पर ध्यान देने के लिए कौन सी बाहरी सहायता दी जानी चाहिए।

4-5-4 tsMj fo'ys"k.k ds fy, 'kks/k ds rjhdksa dh vuqdwyrk

महिलापरक विचार में गुणात्मक शोध तरीकों को किसी भी संदर्भ में जेंडर के सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव को उजागर करने का सर्वश्रेष्ठ तरीका माना जाता है। गुणात्मक शोध को कार्रवाई उन्मुख होना चाहिए तथा असमानता को समाप्त तथा न्याय को प्रोत्साहित करता है। कार्रवाई उन्मुख शोध विशिष्ट स्थितियों पर अधिक बल देता है और सार्वभौमिक नियमों पर कम बल देता है। इसलिए यह जेंडर अध्ययन और विश्लेषण के लिए अधिक प्रयोग किया जाता है।

स्पेन्डर (1985) के अनुसार, ''नारीवादी विचारों के केन्द्र में यह अन्तर्दृष्टि निहित है कि कोई एक सत्य नहीं है, कोई एक शक्ति नहीं है और न ही कोई एक वस्तुनिष्ट तरीका है जो विशुद्ध ज्ञान को पैदा कर सके। इसमें गुणात्मक तरीके का अधिक वैयक्तिक, अन्तर्क्रियात्मक, खुला, सान्दर्भिक और घटनात्मक स्वभाव शामिल होता है जिसने नारीवादी शोधकर्ताओं के लिए गुणात्मक तरीकों को उनकी सामान्य पसंद बना दिया है।

4-5-5 t:Mj fo'y"k.k d: vko';d rjhd:

जेंडर विश्लेषण के लिए अपनाए गए तरीकों को आमतौर पर स्वीकृत सिद्धांतों तथा अध्ययन के अंतर्गत आने वाले समूह के स्वामित्व को उजागर करना होता है जिनके संग्रहित आंकड़ों को नीति और कार्यक्रम विकास में वृद्धि करने के लिए तथा उसके प्रभावशाली परिणाम देने तथा उपयोग के लिए अध्ययन किया जा रहा है।

1. *सहभागिता*

   जेंडर विश्लेषण संबंधित लोगों और स्टेक होल्डर्स को विश्लेषण में सहभागिता करने का अवसर प्रदान करता है जिसके माध्यम से उन्हें स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए तैयार किया जाता है। लोंग्वे इसको नीति निर्माण प्रक्रिया और प्रशासन में महिलाओं की समान भागीदारी के रूप में परिभाषित करता है। यह विकासात्मक प्रोजेक्ट्स का विशेष रूप से एक महत्वपूर्ण पक्ष है जहाँ भागीदारी का अर्थ आवश्यकताओं के आकलन, प्रोजेक्ट निर्माण, क्रियान्वयन और मूल्यांकन करना है। भागीदारी में समानता का अर्थ है महिलाओं को निर्णय निर्माण में शामिल करना जिसके द्वारा उनका समुदाय उसी अनुपात में प्रभावित होगा जिस अनुपात में वे बड़े समुदाय में हैं। कुछ निश्चित उदाहरणों में महिलाओं और बच्चों के लिए विशिष्ट हस्तक्षेपों की योजना बनाने तथा तैयार करने के लिए महिलाओं और लड़कियों के मुद्दों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाएगा।

2. *केस अध्ययन/केस हिस्ट्री*

   जेंडर विश्लेषण महिलाओं तथा लड़कियों एवं पुरुषों और लड़कों के लिए प्रासंगिक एवं उनके प्रभाव से संबंधित गुणात्मक साक्ष्य, जेंडर निर्माण तथा उनकी सामाजिक भूमिकाओं और श्रम विभाजन का अध्ययन करने के लिए, एकत्र करता है। पिछली इकाई में हमने जेंडर विश्लेषण के अलग अलग ढांचों का अध्ययन कर चुके हैं। हम ढांचों पर आधारित केस अध्ययन तैयार कर सकते हैं और विश्लेषित कर सकते हैं कि इन्हें व्यावहार में कैसे प्रयोग किया जा सकता है। केस अध्ययनों में बहुत विस्तार से विवरण एकत्र करने पर बल देने की जरूरत होती है।

3. *पहचानी गई समस्या को अपनाना*

   जेंडर विश्लेषण के उपकरण प्रतिभागियों को पहचाने गए मुद्दों का अन्वेषण करने तथा अलक्षित परिणामों को कम करने योग्य बनाते हैं।

4. *कार्रवाई*

   जेंडर विश्लेषण टार्गेट समूह को समझने तथा प्रभावकारी और न्यायोचित निर्णय लेने के लिए बुद्धिमतापूर्ण अवसर प्रदान करता है।

5. *संलग्नता*

   जेंडर विश्लेषण महिलाओं और लड़कियों को कार्रवाई के लिए प्रासंगिक और व्यावहारिक दिशा निर्देशों में संलग्न रखता है।

7. *रूपान्तरण*

जेंडर विश्लेषण योजना बनाने, लागू करने, मानीटर करने, मूल्यांकन और रिपोर्ट करने की क्षमता को बढ़ाता है।

8. *नवाचार (नवीकरण)*

जेंडर विश्लेषण सोचने के पुराने तरीकों को चुनौती देता है तथा नयी प्रतिक्रियाओं और सक्रिय संबंधों को बढ़ावा देता है।

4-5-6 thou dh x.koÙkk

जेंडर विश्लेषण, समान हित समूहों के बीच एकता निर्मित करने तथा जानकारी के माध्यम से निरंतर संलग्नता और कार्रवाई के द्वारा जीवन की गुणवता में सुधार लाने की गुंजाईश प्रदान करता है।

4-6 tsMj fo'ys"k.k d vkèkkj iRFkj

जेंडर विश्लेषण के तरीकों को व्यक्ति, परिवारों और समुदायों के जीवन की गुणवता को बेहतर बनाने हेतु विशिष्ट ज्ञान उत्पन्न करने के लिए अपनाया जाता है। विकासात्मक परिप्रेक्ष्य में जेंडर विश्लेषण को तीन मुख्य आधारशिलाओं पर आधारित होना चाहिए।

1. *सहभागिता, कार्रवाई और सशक्तीकरण*

यह तीनों चक्रीय तरीकों से घटित होते हैं जिनमें सबसे पहले मुक्त होना, ज्ञान निर्मित करना तथा महिलाओं को मुकाबला करने के लिए बेहतर तरीके प्रदान करना होता है। इन प्रक्रियाओं में विश्लेषण कार्रवाई पर आधारित होता है न कि केवल शैक्षिक प्रक्रिया के तौर पर।

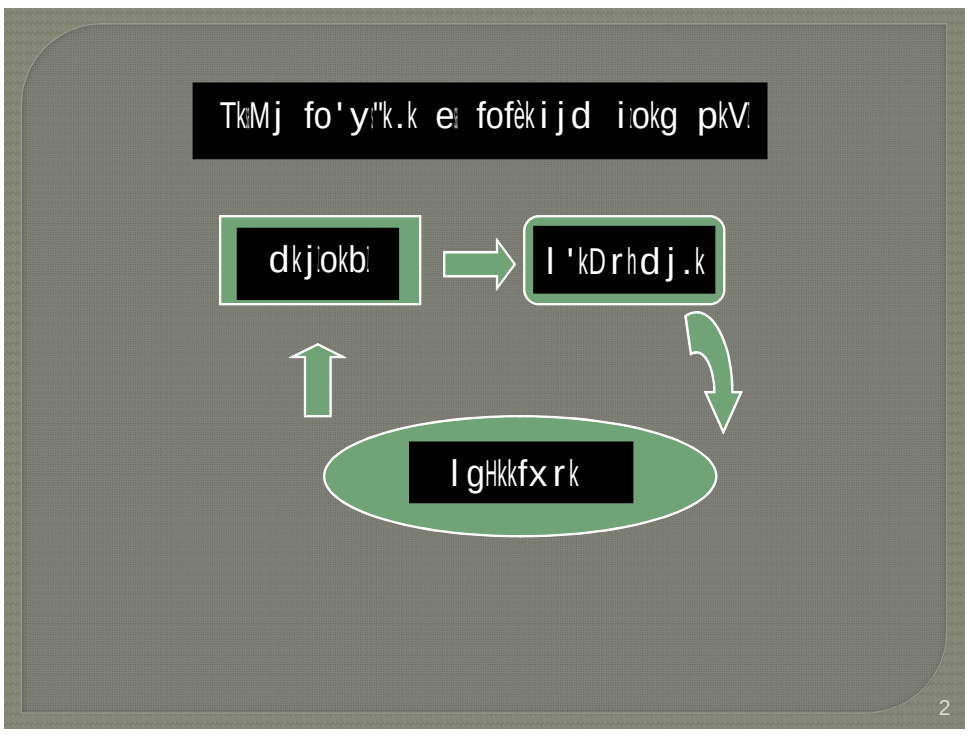

4-6-1 lgHkkfxrk

जेंडर विश्लेषण को ऐसे तरीके से करना चाहिए कि स्टेक होल्डर्स अपने अनेकानेक अनुभवों और निपुणता को प्रक्रिया और परिणामों में लाएं। इसलिए एक सहायक की आवश्यकता होती है। सहभागिता के नियम सबके लिए एक जैसे हैं। सहायक इस बात को सुनिश्चित करते हैं कि समूह और वे स्वयं निश्चित नियमों का पालन करें।

bl lnHk e ge lgHkkfxrk dk dl ifjHkkf"kr djr g\

सहभागिता का अर्थ है कि व्यक्ति अपने अनुभवों, तर्कों, समझ, कश्टों, संघर्षों इत्यादि को अपने सहभागियों के साथ पारस्परिक विश्वास और आत्म विश्वास के साथ सांझा करें। यहाँ पारस्परिक विश्वास और आत्म विश्वास अर्थपूर्ण सहभागिता की पूर्व शर्तें हैं।

सहभागिता का अर्थ है स्थिति का विश्लेषण करने तथा रिक्तक्ता की पहचान करने में दूसरों के साथ जुटे रहना सहभागिता का अर्थ है अपने सहभागियों को सुनना और देखना तथा प्रदत सूचनाओं को अधिकृत करने के लिए फीड बैक/समर्थक आंकड़े प्रदान करना।

4-6-2 dkjokbZ

जेंडर विश्लेषण में कार्रवाई का अर्थ ऐसी गतिविधियों से हैं जिनमें सामूहिक रूप से अथवा लोगों का समूह संलग्न हो। यह समूह की अथवा एक–एक की संलग्नता हो सकती है। लेकिन चर्चा अथवा अन्वेशण के लिए किसी तरह से मिलकर काम करना कार्रवाई की प्रक्रिया का प्रारम्भ है।

यहाँ कार्रवाई के लिए आवश्यक है :

– पारस्परिक स्वीकृति/आदर
– समूह में एकता की भावना
– पूछताछ करने की प्रवृति
– कारणों को खोजना
– सामूहिक संलग्नता के लिए उपकरण प्रदान करना
– प्रश्नों/स्पष्टीकरण का उत्तर देना
– समस्याओं/मुद्दों/तर्कों का वैधीकरण (मान्यीकरण)
– प्रदान की गई सूचनाओं को प्रमाणित करना और नेतृत्व

4-6-3 l'kDrhdj.k

सशक्तीकरण, जेंडर विश्लेषण में भागीदारी और कार्रवाई का परिणाम है। इससे संघर्ष के कारणों और उदासीनता के बारे में स्पष्टता आएगी तथा भावी चुनौतियों का सामना करने के लिए विश्वास निर्मित होगा।

इस प्रक्रिया में हम निम्नलिखित पर स्पष्टता प्राप्त कर सकते हैं :

– पुरुष और महिला के बीच जेंडर निर्माण में कौन से अंतर बने हुए हैं?
– ऐसे अंतरों के लिए क्या कारण और मूल कारण हैं?
– हम वर्तमान संदेहों और संघर्षों की कैसे पहचान कर सकते हैं?
– हम वर्तमान में कहाँ हैं? जेंडर समानता और न्याय के लिए हमें यहाँ से कहाँ जाना चाहिए?
– हम किस प्रकार सहभागिता करते हैं? संलग्न होते हैं/और कार्रवाई का मूल्यांकन करते हैं?

4-7 fLFkfr dk ifrHkkxh eY;kdu

किसी स्थिति का सहभागिता के आधार पर मूल्यांकन एक उपकरण है जिसका किसी दिए हुए संदर्भ का अन्वेशण करने के लिए प्रयोग किया जाता है चाहे यह कोई गाँव या समुदाय अथवा समूह या संस्था हो तथा इसका प्रयोग जेंडर निर्माण के स्रोतों जैसे लोगों, सम्पति, शक्ति अथवा किसी अन्य साधन की पहचान के लिए भी किया जाता है। अपने साधनों/संसाधनों की मैपिंग करने के बाद प्रतिभागी इस बात का विश्लेषण करते हैं कि गति विज्ञान (Dynamics) कितना असमान और कहाँ असमान है? इस प्रक्रिया में प्रतिभागियों के समक्ष एक स्पष्ट तस्वीर उभर आएगी कि समाज में उनका कहाँ और कैसा स्थान है तथा उन्हें एक विशेष प्रकार से व्यवहार करने के लिए कौन सा दबाव होता है और कौन सी व्यवस्था उन्हें ऐसी स्थिति में जीने के लिए विवश करती है तथा असमानता से बाहर आने तथा जेंडर समानता का लक्ष्य करने के लिए उनके पास क्या विकल्प हैं।

4-7-1 dkjokbZ 'kks/k

कार्रवाई शोध ऐसी किसी स्थिति में, जहाँ असमानन व्यवस्थाएं/ढांचे अवस्थिति हों, तथ्य खोजने का एक उपकरण है। यह शोध का एक तरीका है जिसमें एक समूह अथवा व्यक्ति; जिसके पास जेंडर के प्रति धारणा तथा अभिव्यक्ति का सशक्त कौशल हो, संबंधित लोगों अथवा समुदाय अथवा टार्गेट समूह को शामिल करके जेंडर विश्लेषण करता है। इस प्रक्रिया में शोध कर्ताओं की प्रतिभागियों से सूचनाएं/आंकड़े/कहानियाँ एकत्र कर बेहतर समझ और आगे की कार्रवाई करने के लिए स्थिति का विश्लेषण करने की अधिक जिम्मेवारी है। कार्रवाई शोध चिह्नित समस्याओं के लिए समाधान/सिफारिशे/ सुझाव भी प्रदान करता है।

4-7-2 Qkdl lewg ij ppkZ

जेंडर विश्लेषण में फोकस समूह चर्चा अपनाया जाने वाला एक तरीका है। किसी विशेष मुद्दे पर लोगों के समूह द्वारा गहन अन्तक्रिया अथवा जानकारी एकत्र करना फोकस समूह चर्चा कहलाती है। इस चर्चा में सांझे अनुभव रखने वाले लोग शामिल होते हैं तथा किसी दी हुई स्थिति अथवा संदर्भ में उनका बराबर की हिस्सेदारी होती है।

4-7-3 lk{kkRdkj

साक्षात्कार, मौखिक बातचीत के माध्यम से आंकड़े एकत्र करने का एक तरीका है। जेंडर विश्लेषण में यह समस्या केंद्रित होते हैं। समस्या केंद्रित साक्षात्कार में संवाद की चार केंद्रीय रणनीतियाँ हैं : संवाद शुरू करना, जेंडर और विशिष्ट अनुबोधन और तदर्थ प्रश्न। उदाहरण के लिए संवाद शुरू करना अथवा संवाद में प्रवेश करना एक प्रश्न से शुरू होता है जैसे जीवन में आपका क्या लक्ष्य है? तब आमतौर खोजी प्रश्न पूछे जाते हैं जैसे आप किस प्रकार इसको प्राप्त करने की सोचते हैं? इसके बाद विशिष्ट प्रश्न पूछे जाते हैं कि आपकी जरूरतों पर निर्णय कौन ले रहा है? क्या यह प्रतिभावी को साक्षात्कार में और गहराई में ले जाएगा?

4-7-4 o.kZu

व्यक्ति अथवा मिलकर वर्णन करने में संलग्न हो सकते हैं। लेकिन अधिकांशतः यह सहभागियों के अपने तथ्यों और आंकड़ों पर लेख लिखने जैसा है।

4-7-5 dl vè;;u

केस अध्ययन का उद्देश्य किसी केस का संक्षिप्त विवरण अथवा पुनर्निर्माण होता है। केस विश्लेषण के विषय के रूप में व्यक्ति, सामाजिक समुदाय (परिवार), संस्थाएं और संस्थान (जैसे अस्पताल) इत्यादि हो सकते हैं।

किसी केस स्टडी की प्रक्रिया अध्ययन किए जाने वाले केस को चुनने के तरीके से शुरू होती है जिसमें विश्लेषण के माध्यम से अधिक सामान्य निष्कर्ष निकाले जा सकते है। और केस किस प्रकार चिह्नित समस्या को समझने के लिए गहराई से जानकारी एकत्र करने में सहायता करेगा।

4-7-6 tMj fo’y"k.k rjhdk dk ykxw djus d ekxn’kh fl)kr

- जेंडर विश्लेषण के तरीकों को स्थानीय समुदायों, संस्थाओं और समूहों के व्यावहारिक समस्याओं को हल करने तथा विशिष्ट व्यावहारों और मुद्दों की स्थानीय समझ को समाविष्ट करने के लिए किया जा सकता है।
- जेंडर विश्लेषण केवल परिणाम पर ही केंद्रित नहीं होता। इसमें अधिकांशतः सिद्धांतों, तर्कों और भाषा को किस प्रकार स्थिति को न्यायोचित ठहराने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।
- संदर्भ, समय और स्थान के आधार पर समझ प्राप्त की जा सकती है। अतः ऐसी केस स्टडीज़ को इकट्ठा करने से जिनमें स्थिति के लिए विशिष्ट जानकारी होती है, विश्लेषण के लिए अधिक गुंजाइश रहेगी।
- प्राप्त जानकारी को जिम्मेवारी लेने के लिए भागीदारों के साथ संबंध बनाना तथा शक्ति और विश्वास को सांझा करना जेंडर विश्लेषण की पूर्व निर्धारित शर्त भी है और परिणाम भी।
- जेंडर विश्लेषण, कार्यक्रम अथवा सामाजिक मुद्दे में परिवर्तन लाने के लिए ज्ञान पैदा करने में सहायता कर सकता है।
- अन्तदृर्ष्टि और कार्रवाई को सशक्त बनाने के लिए जानकारी के विभिन्न स्रोतों का प्रयोग करना।

4-8 tMj fo’y"k.k grq fy, tku oky dne

जेंडर विश्लेषण की क्रिया में शामिल किए जाने वाले मुख्य कदम निम्नलिखित हैं :

1. प्रतिभागियों के साथ महिला अधीनता की सार्वभौमिक सच्चाई की पहचान करना। स्थिति का सहभागिता मूल्यांकन किया जा सकता है।
   - सामाजिक – सांस्कृतिक
   - (उदाहरण : ड्रेस कोड, स्प शयता, अस्प शयता, शुद्ध–अशुद्ध, रीति रिवाज, आस्था, प्रजनन क्षमता अथवा नहीं, माँ बाप, माँ, शुचिता, स्वच्छंद सम्भोग, विधवापन, पुनर्विवाह, बौद्धिक क्षमता, श्रम, संवाद में उचित व्यवहार और अनुपयुक्त व्यावहार, समलैंगी और इतर लिंगी इत्यादि)।
   - सामाजिक – आर्थिक

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

- उदाहरण : लोगों के बीच दिखने परपाबंदियाँ, सार्वजनिक मंचों में निर्णय लेना, मत का प्रयोग करना, स्थानीय शासन में प्रतिनिधित्व
- सामाजिक – सैद्धांतिक (विचारधारा)
- उदाहरण : प्राथमिकताओं, जरूरतों, नियोजन/रणनीति बनाना
- रणनीति जेंडर जरूरतों के मुद्दे
- सामाजिक – नैतिक
- उदाहरण : व्यावहार/प्रवृति/मूल्यों में अंतर

2. किसी विशेष संदर्भ/टार्गेट समूह से समस्या पहचानने में सहायता करना, मूल कारण का विश्लेषण (फोकस समूह चर्चा को विश्लेषित किया जा सकता है)।

- समस्या की पहचान करना
- कारणों का विश्लेषण करना
- मूल कारण ज्ञात करना

उदाहरण

lelL;k	dkj.k	Ekwy dkj.k
लड़कियों में स्कूल छोड़ने वाली तथा स्कूल न जाने वाली संख्या का अधिक होना माता पिता में जागरूकता की कमी	माता पिता में जागरूकता की कमी माता पिता में जागरूकता की कमी दहेज प्रथा स्कूल तक पहुँच में कमी बहन भाइयों की देखभाल करना तथा घर के कामों में माँ की सहायता करना बाल विवाह (शादी का छोटी उम्र में होना)	जेंडर भेदभाव परम्परा और सामाजिक व्यवस्था

3. दिए हुए संदर्भ/समुदाय में विकल्प/अवसर

(साक्षात्कार और संवाद विधि का प्रयोग किया जा सकता है)

– सहायक समूह तैयार करना (पुरुषों और महिलाओं दोनों के)

– रोल माडल्स

– सफलता की कहानियाँ

4. महिलाओं की बाहरी वातावरण (राजय अथवा गैर राज्य कारकों से) व्यावहारिक और रणनीतिक जरूरतों/हितों/प्राथमिकताओं की पहचान करना (सहभागी मूल्यांकन का प्रयोग किया जा सकता है।)

क) समुदाय/टार्गेट समूह के अंदर हस्तक्षेपों की जरूरत होती है

ख) राज्य द्वारा नीति/कानूनी हस्तक्षेप/बलात लागू करना राज्य तथा गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा।

ग) कार्यक्रम का समर्थन (शिक्षा/आर्थिक विकास कार्यक्रम)

घ) वर्तमान योजनाओं/कार्यक्रमों जेंडर भेदभाव/राज्य तथा गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा असमानता पूर्ण व्यवहार का आलोचनात्मक विश्लेषण करना।

5. सुझाव/सिफारिशें

क) आन्तरिक – टार्गेट समूह के अंदर

ख) बाह्य – सरकारी/गैर सरकारी संस्थाएं

ckèk iz'u 2

uksV : i) प्रश्नों के उत्तर नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ii) अपने उत्तर की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. कोई जेंडर समस्या पहचान कर उसके मूल कारण का विश्लेषण कीजिए।

....

....

....

....

....

4-9 ge tsMj fo'ys"k.k dk iz;ksx dc djuk pkfg,

हमें जेंडर विश्लेषण का प्रयोग कब करना चाहिए? पूरी विकास प्रक्रिया के दौरान जेंडर विश्लेषण निम्नलिखित से शुरू करके करना चाहिए :

– नीति और सिद्धांतों का विकास

– योजना बनाना

– कार्यक्रम बनाना

– बजट बनाना

– क्रियान्वयन करना

– मानीटर करना

– मूल्यांकन

इसके बाद पिछली प्रक्रिया से प्राप्त ज्ञान को योजना बनाने, लागू करने, मानीटर करने तथा मूल्यांकन के अगले स्तर में समाविष्ट किया जाता है। यह एक चक्रीय प्रक्रिया है जो महिलाओं और पुरुषों की समानता और स्वतंत्रता के जीवन अनुभवों को बढ़ाने तथा सशक्तीकरण के चरम लक्ष्य की ओर ले जाती है।

4-10 t:Mj fo'y:"k.k e: fdldk 'kkfey djuk pkfg,

जेंडर विश्लेषण में किसी विशेष विकासात्मक कार्यक्रम के लिए चुने गए समुदाय के सभी लोग शामिल होते हैं। इससे आगे इसमें सभी वर्गों के सभी आयु वर्ग के पुरुष और महिलाएं तथा कभी–कभी समाज के दूसरे वर्गों के लोगों को भी शामिल किया जाता है जो किसी विशेष समुदाय से संबंध रखते हैं और जिनके लिए विकास प्रक्रिया को बनाया गया है। यहाँ बाहरी व्यक्ति के लिए अति महत्वपूर्ण भूमिका है जो सहायक/शोधकर्ता/परामर्शदाता/नीति निर्माता/विश्लेषक होता है। अतः बाहरी व्यक्ति/संस्था की भूमिका समुदाय का प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व करने वालों से अलग होती है।

अतः प्रायः जेंडर विश्लेषण में तीन प्रकार के लोगों को शामिल किया जाता है।

– समुदाय के प्रत्यक्ष भागीदार

– सहायक व्यक्ति/संस्थाएं

– अन्य स्टेक होल्डर्स जिनका टार्गेट समुदाय के साथ अप्रत्यक्ष संबंध होता है।

यहाँ लोगों की पहली दो श्रेणियों का विश्लेषणात्मक प्रक्रिया में मुख्य भूमिका होती है जबकि तीसरी श्रेणी केवल योगदान देती है। समुदाय के भागीदारों और सहायक व्यक्ति/संस्थाओं को इस बात का बेहद ध्यान रखना चाहिए कि वे प्रभावकारी जेंडर विश्लेषण करने के लिए वास्तव में बृहद समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं।

4-11 lgHkkfxrk ,oa dkjokbZ mUeq[k izfØ;kvksa e: t:Mj fo'y:"k.k d: fy, i:'u

हम अपने लिए कौन से प्रश्न पूछते हैं?

जेंडर विश्लेषण के विकास पर निर्णय लेते समय निम्नलिखित केन्द्रीय बिंदुओं को योजना में शामिल करना चाहिए।

– विश्लेषण का उद्देश्य क्या है?

– टार्गेट समुदाय/भागीदार कौन हैं?

– उनका जेंडर के प्रति जागरूकता/चेतना का स्तर क्या है?

– प्रतिभागियों में महिलाओं को शामिल करने की कितनी गुंजाईश है?

– समय और सामग्री के कितने संसाधन/सीमाएं उपलब्ध हैं?

जैसे कि हमने पहले चर्चा की है कि किसी जेंडर विश्लेषण में भागीदारी (प्रतिभागिता/सहभागिता), कार्रवाई और सशक्तीकरण तीन प्रमुख सिद्धांत हैं। जेंडर विश्लेषण की सक्रिय समझ के लिए दिल से दिल का मिलन और संवाद की अनुमति होती है तथा सहायक/शोधकर्ता स्वयं को उनमें से एक व्यक्ति की तरह अनुभव करता है और विचारक बनने और दिखने के बजाय एक कार्यशील व्यक्ति बन जाता है। बुनियादी तौर पर सामाजिक शोध अन्तक्रिया का विरोध करने का विषय नहीं होता अपितु एक दूसरे से बात करने का विषय होता है।

4-12 lgHkkfxrk lqfuf'pr djuk

चुने गए संदर्भ एवं संलग्न किए जाने वाले भागीदारों के अनुसार अनेक प्रकार के तरीके अपनाए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि टार्गेट समुदाय के रूप में घुमुन्तू कबीलों को चुना गा है तो उनके आराम से उपलब्ध होने का स्थान को ध्यान से चुना जाना चाहिए। यदि कालिज के विद्यार्थियों को जेंडर विश्लेषण में शामिल होने के लए चुना गया है – तो समय का चुनाव एक प्राथमिकता होगी। भागीदारी की तरीके को अपनाने से पहले कुछ पूर्व प्रबंध करने होते हैं।

योजना के कुछ महत्वपूर्ण नोट करने योग्य बिंदु हैं –

- भागीदारों की प्रकृति : उनकी सामुदायिक पृष्ठभूमि/जानकारी, जेंडर संबंधों/मुद्दों की जागरूकता का स्तर
- संलग्नता का स्थान : ऐसा स्थान जहाँ इस प्रक्रिया में संलग्न होने में भागीदार आराम महसूस करते हैं
- समय – जब जेंडर विश्लेषण की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए जानकार/बोलने वाले/लोगों के गतिविधि उपलब्ध होंगे
- टार्गेट समूह को प्रक्रिया तथा चर्चित विषय की पूर्व जानकारी होनी चाहिए – इसका उद्देश्य क्या है और यह उन्हें किस प्रकार सशक्त करने में सहायता करेगा।
- भागीदारों का गुणात्मक और संख्यात्मक विवरण
- अन्तर्क्रियात्मक तरीकों की तैयारी/सहायता कौशल। गतिशील (सचल) टकराव की स्थितियों से किस प्रकार निपटना है।
- सहायता करने वाले व्यक्तियों/संस्थानों को संचार, प्रत्युत्तर, प्रभावकारी भूमिका इत्यादि द्वारा अपनाए जाने वाले सिद्धांत और नैतिक मूल्य (उदाहरण निष्पक्ष सुनना, सूचनाएं प्रदान करना, थोपने से बचना इत्यादि)।
- सहायक की भूमिका अच्छी तरह निश्चित कर लेनी चाहिए (उदाहरण के लिए सहायक निर्णय निर्माता नहीं होता अपितु समूह समूह की भागीदारी की प्रकृति के बारे में सचेत होता है।)

4-13 dkjZokbZ dh xq.koÙkk dk ekid

कार्रवाई के कुछ गुणात्मक मापदंडों में शामिल हैं :

- बाह्य रूप से संलग्नता के बजाय सामूहिक संलग्नता
- जेंडर संबंधों/असमान भेदभावपूर्ण व्यवहार तथा ऐसी बाधाएं जो महिलाओं को अधीनता की स्थिति में रहने पर विवश करती हैं – के प्रति जागरूकता और विश्लेषण
- भागीदारों में आंकड़े/केस स्टोरी/जेंडर भेदभाव से जुड़ी सूचनाएं/उल्लंघन/असमान जेंडर संबंधों के प्रतिमान और उनका उद्गम
- समने आने वाली समस्याओं का न्याय सिद्धांत पर जेंडर संवेदनशील हल प्रदान करने वाले प्रतिभागी

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

- नेत त्व का उभरना/प्रतिनिधित्व – जो प्रभुत्व में निहित नहीं है अपितु बेआवाज़ों का आवाज़ प्रदान करना

- एकता का अनुभव करना तथा सहायक व्यवस्थाएं निर्मित करने/कार्यक्रम बनाने के आन्तरिक तरीकों के बारे में विचार

  यहाँ कार्रवाई का अर्थ है जेंडर विश्लेषण की प्रक्रिया में संलग्न होना। स्थिति का सहभागी मूल्यांकन करते समय पूरी तैयारी करने के बाद सहायक/शोधकर्ता के साथ आवश्यक उपकरणों के साथ शोध कार्य में जुट जाता है। उपकरण चाहे कोई भी प्रयोग किया जाए परंतु संलग्नता का अर्थ है सहभागियों के साथ बराबरी के आधार पर संलग्न होना। कार्रवाई का फोकस सहभागियों से सीधे प्रश्न पूछकर उनका ध्यान केन्द्रित करना होता है जिससे वे कथनों के उत्तर दे सकेंगे तथा वे सोच सकेंगे और विश्लेषण कर सकेंगे। कार्रवाई की प्रक्रिया के दौरान सहभागियों में विश्वास पैदा करना बहुत जरूरी है तथा उन्हें यह विश्वास होना चाहिए कि दी गई सूचना अथवा आंकड़ों का दुरुपयोग नहीं किया जाएगा और उनकी स्थिति से छेड़छाड़ नहीं की जाएगी।

  सशक्तीकरण को एक आन्तरिक प्रक्रिया के रूपा में परिभाषित किया जा सकता है जो भागीदारी की गुणवत्ता तथा जेंडर विश्लेषण में लागू की गई कार्रवाई का परिणाम है। यह परिणाम सहभागी समूह द्वारा जेंडर विश्लेषण में आगे की जाने वाली कार्रवाई में झलकेगा। सशक्तीकरण से संबंधित गुणवत्ता मापदंडों में निम्नलिखित को शामिल किया जा सकता है।

- ऐसी महिलाओं की संख्या जो अपने समुदाय/टार्गेट समूह में जेंडर संबंधों में असमानता और अधीनता की स्थिति को जान चुकी हैं।

- कार्रवाई की प्रक्रिया से उभरे मुद्दों की प्रकृति तथा निर्णय लेने वालों की पहचान करना, जिन्हें संवेदनशीलता अथवा टकराव के लिए संलग्न करने की जरूरत होती है।

- प्रतिभागियों की जेंडर मुद्दों को पहचानने और विकल्प ढूंढ़ने के प्रति जागगरूकता का स्तर

- ऐसी महिलाओं की सफलता की कहानियाँ जिन्होंने भेदभाव और बाधाओं को जीतने में सफलता प्राप्त की है?

- प्रस्तावित परिणाम/योजनाएं/विकसित कार्यक्रम

4-14 tsMj fo'y"k.k esa vfre pj.k

जेंडर विश्लेषण की प्रक्रिया में प्रतिभागिता, कार्रवाई और सशक्तीकरण के क्षेत्र में संलग्नता के बाद सहायक किए गए जेंडर विश्लेषण के अंतिम परिणाम के लिए काम करेगा। उसके पास एक प्रपत्र (दस्तावेज) होगा जो निम्नलिखित बिंदु से शुरू होगा :

– प्रक्रिया प्रलेख को सुनाना जिसका अर्थ है जेंडर विश्लेषण में शामिल सारी गतिविधियाँ;

– जेंडर से संबंधित विशेष मुद्दों, उल्लंघनों, केस स्टडीज़/आंकड़ों के प्रपत्रों को चुनना जिससे विश्लेषण को अधिकृत किया जा सके;

– समुदाय की पृष्ठभूमि के आधार पर प्रपत्र तैयार करना, संसाधनों का चित्रांकन करना, अपनाना तथा निर्णय निर्माण में भूमिका इत्यादि के अनुसार प्रपत्र बनाना;

– आगे की कार्रवाई के लिए कुछ सुझाव/सिफारिशें प्रस्तावित करना।

ckèk i'u 1

ukV : i) प्रश्नों के उत्तर नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ii) अपने उत्तर की तुलना इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. अपनी ओर से एक केस स्टडी लिखिए। केस स्टडी पूरी करने के बाद निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

   उपरोक्त स्थिति में जेंडर विश्लेषण के लिए आप कौन सा तरीका अपनाएंगे?

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

2. केस स्टडी को विकसित करने के लिए आपके द्वारा अपनाए जाने वाली सहभागी प्रक्रियाओं का वर्णन कीजिए।

   .....

   .....

   .....

3. आपके द्वारा की जाने वाले कार्रवाई का वर्णन कीजिए।

   .....

   .....

   .....

4. क्या जेंडर विश्लेषण से सशक्तीकरण होता है? संक्षेप में वर्णन कीजिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

4-15 fo'y"k.k d rjhd dk puu gr pd fyLV vkj bld i;kx dk eY;kdu djuk

निम्नलिखित चेक लिस्ट किसी तरीके को चुनने अथवा उसका मूल्यांकन करने के लिए उपयोगी हो सकती है।

विश्लेषण का क्षेत्र (संदर्भ/विषय)

क्या चुना हुआ तरीका और उसका प्रयोग विश्लेषण के क्षेत्र/संदर्भ में उपयोगी होगा?

t;Mj fo'y"k.k %
,d ifjp;

विवेचनात्मक प्रक्रिया

तरीके को टार्गेट के लिए पूरी सावधानी के साथ प्रयोग करना चाहिए। विवेचना के रूप में कोई छलांग नहीं लगानी चाहिए जब तक कि यह विश्लेषण के क्षेत्र अथवा सैद्धांतिक स्थिति पर आधारित न हो।

प्रतिभागी कौन हैं?

प्रतिभागियों को चुनना और उन्हें रिसोर्स वर्सन के साथ गुणवतात्मक संलग्नता की संभावना तलाशना भी महत्वपूर्ण है।

कथनों को व्यक्त करने की जरूरत का स्तर : एकल केसों के लिए (जिस व्यक्ति का साक्षात्कार लिया गया है, उसकी जीवन गाथा, संस्था और उसका प्रभाव) समूहों के संबंध में (किसी व्यवसाय अथवा संस्थान के प्रकार के बारे में); सामान्य कथन।

4-16 lkjk'k

इस इकाई में जेंडर विश्लेषण के तरीकों तथा अनिवार्यताओं की व्यापक चर्चा की गई है। जेंडर विश्लेषण महिलाओं और हाशिये पर लाए गए लोगों के सशक्तीकरण में सहायक होता है। प्रभावकारी जेंडर विश्लेषण के लिए महिलाओं की पुरुषों की तुलना में स्थिति का विश्लेषण किया जाना चाहिए। जेंडर विश्लेषण करते समय संख्यात्मक सूचकों के साथ–साथ गुणवतात्मक सूचक भी जरूरी होते हैं। जेंडर विश्लेषण में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना बहुत महत्वपूर्ण है। कार्रवाई आधारित शोध में सहभागिता के तरीके जैसे फोकस समूह चर्चा, साक्षात्कार और लेखन को प्रयोग किया जा सकता है। इस इकाई में हमने जेंडर विश्लेषण के प्रयोग, प्रतिभागियों की प्रकृति तथा जेंडर विश्लेषण में किन्हें शामिल किया जाना चाहिए पर चर्चा की है।

4-17 'kCnkoyh

Status and Role: There are a number of different sets of concepts which aim to distinguish between the visible aspects of gender relations between women and men (for example, as seen in the different activities they participate in), and the invisible power relations which determine these activities. As a result of their low status in the community, the activities which women perform tend to be valued less than men's; in turn, women's low status is perpetuated through the low value placed on their activities.

Condition: The term describes the immediate, material circumstances in which men and women live, related to their present workloads and responsibilities. Providing clean water or stoves for cooking, for example, may improve the condition of women by reducing their workloads.

Position: This concept describes the place of women in society relative to that of men. Changing women's position requires addressing their strategic gender interests including equal access to decision making and resources, getting rid of discrimination in employment, land ownership, and so on. In order to change women's position, we must address the way gender determines the power, status, and control over resources.

Quality of life: The term quality of life is used to evaluate the general well-being of individuals and societies. The term is used in a wide range of contexts, including the fields of international development, healthcare, and politics. Quality of life

should not be confused with the concept of standard of living, which is based primarily on income. Instead, standard indicators of the quality of life include not only wealth and employment, but also the built environment, physical and mental health, education, recreation and leisure time, and social belonging

Methodology refers to the perspective of research. Methods refer to the way one applies the theoretical perspective(s) to explain the facts or data collected. Techniques refer to the way a researcher collects data.No data may be systematically collected without an adequate knowledge of techniques of data collection. Similarly no explanation of data is possible if there is no clearly understood method guiding the collection of data. One cannot employ a method without grasping the philosophy or perspective behind a particular method.

4-18 ckèk i'uk d mÙkj

Ckkèk i'u 1

1. सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ में विशेषतया भारत में परिवार, समुदाय तथा विभिन्न प्रकार की संस्थाओं जैसे जाति, सांस्कृतिक समुदाय इत्यादि का अस्तित्व, ऐसी संस्थाएं है जो महिलाओं और पुरुषों, दोनों के सामाजिक स्तर और जेंडर को परिभाषित करती हैं। जब कोई इस संदर्भ में जेंडर विश्लेषण करना चाहता है तो वह यह जानने का प्रयास करता है कि बचपन के पोषण, विवाह, उत्सवों, परिवार, धार्मिक अनुष्ठानों इत्यादि में महिलाओं और पुरुषों की भूमिका किस प्रकार की रही है। यह भूमिका एक समुदाय से दूसरे समुदाय और एक जाति से दूसरी जाति में अलग हो सकती है। उदाहरण के लिए हिन्दू मन्दिरों में रजस्वला (मासिक धर्म) वाली महिला को जाने के अनुमति नहीं है जबकि अन्य धर्मों जैसे बौद्ध, जैन, ईसाई धर्म में मनाही नहीं है।

Ckkèk i'u 2

1. किसी दिए हुए संदर्भ में महिलाओं की अधीनता की सार्वभौमिक सच्चाई को सहभागियों के साथ पहचानना। (स्थिति के सहभागी मूल्यांकन का प्रयोग किया जा सकता है)। इसी प्रकार जेंडर भेदभाव को सामाजिक–सांस्कृतिक, सामाजिक आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक और सामाजिक–सैद्धांतिक संदर्भ में विश्लेषित किया जा सकता है।

Ckkèk i'u 3

1. अपने निकट की किसी गैर सरकारी संस्था में जाइए और संस्था के प्रमुख से हुई बातचीत के आधार पर केस स्टडी लिखिए। इकाई एमजीएस003 को देखें
2. इकाई 6 एमजीएस003 के संदर्भ में सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन की तरीके के बारे में अपने अनुभव लिखिए।
3. क्षेत्र में काम करने के अनुभव के आधार पर प्रश्न क्रमांक 3, 4 के उत्तर लिखिए।

4-19 mi;ksxh iLrd

Candida March, Ines Smyth and Maitrayee Mukhopadhyay, A Guide to Gender Analysis Frameworks, New Delhi: Oxfam GB and Maya Publishers Pvt Ltd, 2002.

4-20 ckèk iz'u ¼euu ,oa vH;kl ds fy;s½

1) एक अच्छे जेंडर विश्लेषण की क्या अनिवार्यताएं होती हैं?

2) जेंडर विश्लेषण के तीन आधार पत्थर कौन से हैं? अपनी समझ प्रत्येक के बारे में संक्षेप विवरण दीजिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY